(कमलाचण्डी ग्रन्थमाला - ३)

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

(लक्ष्मी-प्रयोग)

सम्पादक

'कुलमार्तण्ड' पं. मधुसूदन प्रसाद शुक्ल

सहायक

विकास थपलियाल 'शिवम'

कमलाचण्डी ग्रन्थमाला-३

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

(लक्ष्मी-प्रयोग)

संकलन एवं सम्पादन

''कुलमार्तण्ड'' - मधुसूदन प्रसाद शुक्ल

सहायक

विकास थपलियाल 'शिवम'

प्रकाशक

श्री मधुसूदन प्रकाशन

पो०ओ० जाखचौरा,

टिहरी गढ़वाल - 249130 (उत्तराखण्ड)

प्रकाशक :

श्री मधुसूदन प्रकाशन
पो0ओ0 - जाखचौरा
टिहरी गढ़वाल - 249130 (उत्तराखण्ड)
दूरभाष - 09760219141, 09761797511
09997979276, 09997021142
mail : vikasthapliyal31@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2014 (अक्षय तृतीया)

मूल्य 120/- मात्र

मुख्य प्राप्ति स्थान :

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन 'वाराणसी'
फोन - 0542-2335263

कर्म सिंह अमर सिंह 'हरिद्वार'
फोन - 01334-225619

सोनी बुक डिपो 'ऋषिकेश'
मो0 - 9897424215

जुगल किशोर 'देहरादून'
मो0 - 9897550570

धार्मिक पुस्तक भण्डार 'ऋषिकेश'
मो0 - 9897274427

दुर्गा पुस्तक भण्डार 'इलाहाबाद'
फोन - 0532-2400470

चौखम्बा सीरिज ऑफिस 'वाराणसी'
फोन - 0542-2333458

सरदार सोहन सिंह 'इन्दौर'
फोन - 0731-2532344

ड्रोलिया बुक्स 'हरिद्वार'
मो0 - 09837300687

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस 'दिल्ली'
फोन - 011-32996391

अग्रवाल बुक डिपो 'दिल्ली'
फोन - 011-23936116

रत्नेश्वर पुस्तक 'बीकानेर'
फोन - 0151-2549712

प्रताप (C.M.) 'बैंगलोर'
मो0 - 09538995156

गिरी ट्रेडर्स 'चेन्नई'
मो0 - 09551688070

उमेश बेनरजी, वीरभूमि 'प. बंगाल'
मो0 - 09474311271

अमोल देशपाण्डे, नांदेड़ (महाराष्ट्र
मो0 - 09921121171

उमेश, संगम विहार (महाराष्ट्र)
मो0 - 09423166382

महावीर प्रसाद भट्ट (देहरादून)
मो0 - 09411184063

टाईपसेटिंग :

कृष्णा कम्यूनिकेशन्स, ऋषिकेश

मुद्रक : सहारनपुर इलैक्ट्रिक प्रैस, सहारनपुर
फोन : 0132-2644343, 2643366

विषयानुक्रमणिका

विषया:

(क) रूपं देहि जयं देहि ...१

(ख)प्राभातिक-कृत्य

(१) गुरू-वन्धना ...७

(२) प्रातः स्तोत्र ...८

(३) भूमि वन्दना ...८

(४) शौच विधि ...८

(५) दन्त-धावन ...६

(६) स्नान-विधि ...६

(७) तान्त्रिाक-सन्ध्या ..१०

(ग) संक्षिप्त-अर्चन-विधि

(८) पापोत्सादन ..१२

(६) सामान्य अर्घ्य स्थापन ..१२

(१०) द्वार-पूजा ..१२

(११) आसन-शोधन ..१३

(१२) संकल्प ..१४

(१३) पुष्पादि-शोधन ..१४

(१४) प्राणायाम ..१५

(१५) भूत-शुद्धि ..१५

(१६) लघु-प्राण-प्रतिष्ठा ..१६

(१७) मातृका-न्यास ..१७

(१८) वहिर्मातृका-न्यास ..१८

(१६) वाग्देवता-न्यास ..२०

(२०) मानसोपचार पूजन ..२०

(२१) मानसिक हवन ..२२

(घ) बहिर्याग

(२२) पात्र-स्थापन ..२३

(२३) श्रीयंत्र-प्रतिष्ठा ..२३

(२४) पूजन ..२५

(२५) आवरण-पूजन ..२७

(२६) दारिद्र्यध्वंसिनि अर्चन ..३२

(२७) पंच बलि-विधान ..४१

(२८) वटुक बलि ..४२

(२६) योगिनी बलि ..४२

(३०) क्षेत्रपाल बलि ..४३
(३१) गणेश बलि ..४३
(३२) सर्वभूत बलि ..४४
(३३) विसर्जन ..४६
(३४) उच्छिष्ट चाण्डालिनी अर्चन ..४६
(३५) पात्र-उद्वासन ..४७
(३६) उच्छिष्ट भैरव-बलि ..४८
(३७) श्री ललिता-महालक्ष्मी स्तोत्र ..४९
(३८) श्री लक्ष्मी हृदय स्तोत्रम् ..५४
(३९) कल्याणवृष्टि स्तोत्रम् ..६१
(४०) कनकधरा-स्तोत्रम् ..६८
(४१) सर्वसाम्राज्य-लक्ष्मी मंत्र प्रयोग ..७५
(४२) आवरण-अर्चन ..७७
(४३) दारिद्र्य निवारण प्रयोग ..८०
(४४) सर्वदेव कृत लक्ष्मी स्तोत्रम् ..८२
(४५) दरिद्रता नाशक सूक्त ..८३
(४६) श्री सूक्त-विधान ..८४
(४७) आवरण-अर्चन ..८९
(४८) श्री-सूक्त के विभिन्न प्रयोग ..९२
(४९) श्री-सूक्त ..९३
(५०) शीघ्र विपुल सम्पत्ति-प्राप्ति-प्रयोग ..९५
(५१) श्री लक्ष्मी कृपा प्रदायक सिद्ध स्तोत्र ..९६
(५२) श्री महालक्ष्मी-ललिता स्तोत्र ..९९
(५३) श्री महालक्ष्मी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र .१०१
(५४) श्री सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्रम् .१०५
(५५) धनदा स्तोत्रम् .१०९

रूपं देहि जयं देहि

यद्यपि आर्य जीवन-दर्शन में मोक्ष को सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ तथा सन्यास को सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना गया है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि मन्त्र दृष्टा ऋषियों ने सांसारिक जीवन की सर्वथा उपेक्षा की हो अथवा आर्थिक-सम्पन्नता को हेय दृष्टि से देखा हो। वेद समस्त ज्ञान के भण्डार हैं, अध्यात्म और परमार्थवाद के उत्स हैं लेकिन न तो उनमें शुष्क ब्रह्मवाद है और न ही पलायनवादी अध्यात्मिकता। वेदों ने न तो संसार को दुःखों का मूल माना है और न सांसारिक जीवन को बोझ कहा है। ऐहिक जीवन के प्रति वैदिक ऋषियों की बड़ी ही सन्तुलित एवं जीवन्त दृष्टि रही है। इसीलिए वेदों में पचासों ऐसे सूक्त हैं, सैकड़ों ऐसी स्तुतियाँ हैं जिनमें सुखी और समृद्ध जीवन की याचना की गई है। देवताओं से धन तथा ऐश्वर्य, सम्पन्नता एवं वीरता और यश तथा आरोग्य के लिए प्रार्थना की गई है। उनकी कामना थी-

जीवेम शरदः शतम्। पश्येम शरदः शतम्। श्रुणुयाम शरदः शतम्। गोत्रं नो वर्द्धताम्। दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्।

खूब जियें! खूब देखें और सुनें। हमारा वंश खूब बढ़े। दाता लोगों की अभिवृद्धि हो। धन-धान्य और सन्तति खूब बढ़े। गायें बहुत दूध दें। बैल खूब खेत जोतें। समय पर पर्याप्त वर्षा हो ताकि भरपूर फसल हो-

दोग्धी धेनुर्वोढानडवान्........निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षमो नः कल्पताम्। (यजु०२२/२२)

केवल दूध और दही ही नहीं, मानव जीवन की खुशहाली के लिये आवश्यक ऐसी कौन सी वस्तु है, जिसकी अभिवृद्धि के लिये वैदिक ऋषियों ने स्तुति नहीं की हो। इस सन्दर्भ में यजुर्वेद का सम्पूर्ण १८ वां अध्याय दृष्टव्य और पठनीय है। इस अध्याय में नेतृत्व-क्षमता, धारणा शक्ति, सम्पत्ति-रक्षण का सामर्थ्य एवं ज्ञान-विज्ञान तथा धन-द्रव्यादि के साथ ही धातु अयस्कों, मिट्टी, पहाड़, पर्वत, वनस्पति, सोना, लोहा, सीसा और टिन आदि धातुओं की निरन्तर अभिवृद्धि हेतु प्रार्थना की गई है-

अश्मा व मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मे.......लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपुञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१३॥

ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध श्री सूक्त में अग्नि देव तथा भगवती लक्ष्मी से स्वर्ण,

रजत, मणि-माणिक्य, गाय आदि पशुधन आदि की याचना की गई है तो लक्ष्मीसूक्त में **"धनं वायुः धनमग्निः"** आदि कहकर न केवल पर्यावरण की शुद्धता पर जोर दिया गया है अपितु इस ऋचा के माध्यम से इस तथ्य पर जोर दिया है कि मानव जीवन को खुशहाल बनाने वाली हर एक वस्तु धन है। इस तरह धन-सम्पत्ति को, समृद्धि एवं सम्पन्नता को प्रशंसास्पद निरुपित किया गया है। राजे-महाराजे और श्रेष्ठि-वर्ग ही नहीं अपितु वैभवशाली आचार्यों और ऋषियों को **"महाशालः महाश्रोत्रियः"** कहकर गौरवान्वित किया गया है (छान्दोग्य उपनिषद् - ५/११/१) मुण्डकोपनिषद् में **"शौनको ह वै महाशालः"** का उल्लेख है।

पौराणिक युग में भी यह आनन्दवादी वैदिक विचारधारा अन्तः सलिला की तरह प्रवह मान रही। पौराणिक काल में भी हमने भगवती से यही प्रार्थना की - **"भगं भगवति देहि मे"** हे भगवति! मुझे भग प्रदान करिये। यह भग क्या है? ऐश्वर्य, वीर्य (वीरता) यश, सम्पन्नता (श्री), ज्ञान एवं वैराग्य-इस विभूति षट्क की सामूहिक संज्ञा 'भग' है -

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान वैराग्ययोश्च, षणां भग इतीरिता॥

इस विभूति षट्क से ही जीवन का उदात्त-सौन्दर्य है। इस विभूति-पटक का किञ्चित् अंश पा कर मानव-जीवन दमक उठता है। यह जीवन-सौन्दर्य ही 'रूप' है, जिसकी याचना 'अर्गला' स्तोत्र में बार-बार की गई है -

रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि

हे देवि माते! मुझे रूप दो, जय दो, मेरे शत्रुओं का संहार करो। यहाँ रूप शब्द केवल शारीरिक सौन्दर्य का पर्याय नहीं है। आरोग्यता, वीरता, बुद्धिमत्ता तथा श्री-सम्पन्नता आदि समस्त जीवन-सौन्दर्य इसमें समाहित है। इसी जीवन-सौन्दर्य से व्यष्टि और समष्टि जीवन की शोभा है। इसी शोभा के कारण जीवन के प्रति मनुष्य का आकर्षण है, यह जीवन-सौन्दर्य ही जिजीविषा का मूल है।

प्रकृति का नियम है पूर्णिमा के धवल चन्द्रमा को ही ग्रहण लगता है। इसीतरह कालान्तर में इस उदात्त-जीवन-दर्शन को ग्रहण लग गया। हम व्यष्टि और समष्टि जीवन के प्रति इस उदात्त दर्शन को सायास भूलने लगे। नवीनता के नाम पर भ्रान्त जीवन दर्शन के व्यामोह में संसार को दुःखों का मूल बता कर जीवन से पलायन को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। संसार-त्याग के नाम पर अकर्मण्यता और अहिंसा के नाम पर कायरता को वरीयता दी जाने लगी। अकर्मण्यताजन्य दरिद्रता एवं विपन्नता को नियति एवं प्रारब्ध समझकर उनके समक्ष घुटने टेकने की सीख दी गई हम गीता-पाठ तो करते रहे लेकिन अहिंसा के नाम पर कायरता को शास्त्र सम्मत सिद्ध करना विद्वता की कसौटी बन गया। हम दीपावली पर लक्ष्मी पूजन की रस्म का निर्वाह तो करते रहे मगर यह भूल गए कि जब तक दरिद्रता का मकड़ जाल फैलाकर अलक्ष्मी देवी हमारे घरों में दृढ़ता के साथ काबिज हैं, भगवती लक्ष्मी का गृह-प्रवेश किस तरह

होगा? लक्ष्मी और अलक्ष्मी न तो एक साथ रह सकती हैं और न ही अलक्ष्मी के रहते भगवती लक्ष्मी हमारे घरों में आ ही सकती हैं। अतः भगवती लक्ष्मी के शुभागमन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए सर्वप्रथम हमें अलक्ष्मी देवी को हमारे घरों से निकल कर दूर चले जाने के लिए कहना ही पड़ेगा -

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम्
अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।।
अभूतिमसमृद्धिञ्च
सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।८।।

भूख और प्यास से विकल तथा मलिन स्वरूप वाली ज्येष्ठा-अलक्ष्मी अपनी सारी गरीबी और कंगाली को लेकर मेरे घर से निकल जायें। 'श्री-सूक्त' की इस ऋचा में अलक्ष्मी को ज्येष्ठा कहा गया है क्योंकि वे भगवती लक्ष्मी की सगी बड़ी बहिन हैं। पद्म पुराण में इसका विस्तार से निरूपण है।

अलक्ष्मी की कथा -

पद्म पुराण के अनुसार भगवान् शिव के कहने पर देवताओं ने समुद्र मन्थन के बाद क्षीर सागर का मन्थन किया। इसके फलस्वरूप सागर से ज्येष्ठा देवी प्रकट हुई। वे कुरूपा हैं, वस्त्र काले और गले में लाल फूलों की माला। वे भूख और प्यास से विकल हैं। उन्होंने देवताओं से पूछा - मैं क्या करूं और कहां रहूं? देवताओं ने उन्हें उनके रहने के स्थान बता दिये। तब से वे गन्दे स्थानों में रहती हैं। इस कथा में आगे बताया गया है कि दीपावली की रात को दरिद्रता रूपिणी 'अलक्ष्मी' का निस्सारण करना चाहिए। एतदर्थ घर के बाहर गोबर की पुतली बनायें। उस पुतली को अलक्ष्मी मानकर इस प्रकार ध्यान करें -

अलक्ष्मीं कृष्ण वर्णां द्विभुजां कृष्ण वस्त्र परिधानाम्।
लोहाभरण भूषितां च शर्करा चन्दन चर्चिताम्।।
गृह सम्मार्जनी हस्तां, गर्दभारूढां कलहप्रियाम्।

गृह सम्मार्जनी अर्थात् झाड़ू। इस प्रकार ध्यान करने के बाद पुतली की ओर पीठ करके उल्टे हाथों से उस पर काले फूल चढ़ायें और उसे घर छोड़कर चले जाने के लिए कहें -

अलक्ष्मि! त्वं कुरूपाऽसि, कुत्सित स्थान वासिनी
सुख रात्रौ मया दत्तां गृहाण् पूजां शाश्वतीम्।।
दारिद्य कलह प्रिये, देवि! त्वं धन नाशिनी।
याति शत्रोर्गृह नित्यं, स्थिरा तत्र भविष्यसि।।
गच्छ त्वं मन्दिरं शत्रोः, गृहीत्वा चाऽशुभं मम।
मदाश्रयं परित्यज्य, स्थिरा तत्र भविष्यसि।।

अलक्ष्मि! तुम बदसूरत हो, कुरूपा हो। गन्दे स्थानों में रहती हो। तुम धन का नाश करती हो। दरिद्रता और कंगाली तुम्हें प्रिय है। तुम्हें सुख और शान्ति नहीं चाहिए।

लड़ाई-झगड़ा और कलह तुम्हें पसन्द है। तुम्हारे कारण मेरे घर में जो-जो अशुभता आ गई हैं, उन सबको अपने साथ लेकर आज ही रात की रात मेरे घर से निकल जाओ। जाकर मेरे शत्रुओं के घर में पनाहलो। वहीं स्थिर होकर रहो।

इन श्लोकों में देवी अलक्ष्मि की सारी नञात्मक विशेषताओं का समास रूप में निरूपण किया गया है। देवी अलक्ष्मि जहाँ बैठती हैं-दरिद्रता पसर जाती है, आर्थिक विपन्नता का नर्तन होने लगता है। वे जिस व्यक्ति के सिर पर हाथ रख देती हैं, उसकी विद्वता और कुलीनता का अवमूल्यन हो जाता है। उसके सद्‌गुणों की कोई कीमत नहीं रह जाती। मानवोचित सम्मान से भी वंचित ऐसे ओजक्षीण व्यक्ति को न तो घर में चैन मिलता है और न बाहर। दर-दर भटकने के लिए विवश ऐसे व्यक्ति के लिए जिन्दगी बोझ बन जाती है। इससे यह स्वयं सिद्ध है कि **'अर्थो मूलं अनर्थानाम्'** (धन-दौलत ही सारे अनर्थों की जड़ है) की उद्‌घोषणा से महज आत्म-वंचना है। यथार्थ यह है कि सुखी और सन्तुष्ट जीवन के लिए धन चाहिए। इसीलिए आर्ष जीवन-दर्शन में अर्थ (धन) की परिगणना पुरुषार्थ चतुष्टय में द्वितीय क्रम (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पर की गई है, और आधुनिक पाश्चात्य जीवन-दर्शन तो पूर्णत: अर्थ-मूलक है ही। दोनों ही इस बात पर सहमत हैं कि सांसारिक सुखोपभोग की सारी भौतिक वस्तुओं की अधिप्राप्ति का साधन या माध्यम 'धन' है।

मगर व्यष्टि और समष्टि जीवन तथा जीवन-लक्ष्य के प्रति दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण धन की प्रयोजनीयता और अर्थवत्ता के विषय में उनका नजरिया अलग-अलग है। आज के अर्थ-मूलक भौतिकवादी जीवन-दर्शन के अनुसार मानव योनि पशुओं के समान भोग-योनि है, यह नश्वर शरीर ही आत्मा है तथा ऐहिक सुखों का अधिक से अधिक भोग करना मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य है। अत: धन की प्रयोजनीयता अधिकाधिक विलास-सामग्रियों की अधिप्राप्ति एवं संग्रहण तक परिसीमित है और येन-केन प्रकारेण धन-अर्जित करना मानवीय श्रम की इति श्री है।

इसके बर-अक्स आर्ष जीवन दृष्टि के अनुसार न तो मानव-शरीर आत्मा है और न मनुष्य-योनि भोग-योनि है। शाश्वत आत्म-तत्त्व इस पञ्चभूत नश्वर शरीर से सर्वथा पृथक है। यह संसार एक यात्रा पथ है, मानव-जीवन एक यात्रा है, सांसारिक सुख-विलास पाथेय हैं, धन-सम्पत्ति आदि इस पाथेय की अधिप्राप्ति के साधन हैं और इस पंचभूतात्मक संसार से आत्म-तत्त्व का मुक्ति लाभ मानव-जीवन का लक्ष्य है। साधन को साध्य नहीं बनाया जा सकता। अतएव आत्मदेव की संसार-यात्रा के लिये प्रकृति-प्रदत्त पञ्च भूतों से निर्मित शरीर की सुरक्षा, समर्थता, सबलता तथा साधन-सम्पन्नता के लिये अनिवार्य होने के बावजूद धन-सम्पदा एवं अन्य सांसारिक सुख गौण हैं मगर इनका आकर्षण इतना प्रबल है कि मानव-मन इनके ही पाश में उलझकर अपने परम लक्ष्य को भूल जाता है। पाथेय के आकर्षण-पाश रूपी चक्र व्यूह से बच निकलने का एक ही रास्ता है-एक ही तरीका है-त्याग पूर्वक इनका उपभोग। इनका चाहे जितना उपभोग करो मगर सर्वथा तटस्थ बने रहो। इसीलिए वेद भगवान् का आदेश है -

'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'

किसी अन्य के धन का लालच मत करो। अपने भी धन का त्याग पूर्वक उपभोग करो। अपने ही धन का त्याग पूर्वक उपभोग करने से उसके प्रति आकर्षण एवं अनुराग कम होता जायेगा।

एक सहज जिज्ञासा! क्या इस जागतिक सुख का संज्ञान होते ही त्याग नहीं किया जा सकता? ऐसा करना असम्भव है। प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही शुकदेव मुनि नहीं होता। जागतिक सुख का हठात् त्याग भयावह होता है। फिर एक बात और। यदि भोग नहीं है तो किसका त्याग, कैसा त्याग। भोग रहित त्याग नपुंसक के ब्रह्मचर्य की तरह अर्थ हीन है। अतः त्याग को चरितार्थ करने के लिए भोग आवश्यक है, और भोग के लिए भोग-सामग्री एवं तदर्थ धन-सम्पत्ति एवं वैभव। विडम्बना यह है कि समाज में सभी व्यक्तियों को प्रारब्ध वश भोग सामग्री की प्राप्ति एक बराबर नहीं होती। कुछ जन्म से ही सम्पन्न होते हैं, कुछ अर्ध सम्पन्न होते हैं तथा समाज में विपन्न लोगों की ही संख्या अधिक होती है। कुछ ऐसे लोग होते हैं जिन्हें थोड़ी मेहनत का अधिक फल मिलता है और ऐसे लोग भी होते हैं जो दिन-रात मेहनत करते हैं। तब उन्हें केवल दाल-रोटी मिल पाती है। ऐसे ही विपन्न एवं हतभाग्य लोगों के लिए वेदों-पुराणों और आगम ग्रन्थों में सम्पन्नता एवं समृद्धि प्राप्त करने अनुष्ठान और प्रयोग बताये गये हैं। ऐसे ही कतिपय अनुष्ठान प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहित हैं।

प्रश्न यह है कि क्या इन अनुष्ठानों और प्रयोगों से विपन्न-प्रारब्ध को प्रभावहीन या समाप्त करके सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है? दरिद्रता को समाप्त किया जा सकता है? यदि 'हां' तो क्यों और कैसे?

अनुष्ठान-रहस्य

इन प्रश्नों के समाधान के सन्दर्भ में हमें यह स्मरण रखना होगा कि पशुओं आदि की तरह मनुष्य-योनि केवल भोग-योनि नहीं है। यद्यपि उसे प्रारब्ध का भोग करना पड़ता है मगर इसके साथ ही प्रकृति ने मनुष्य को कर्म करने की इच्छा, ज्ञान, स्वतंत्रता, क्षमता और शक्ति प्रदान की है। प्रकृति का यह भी नियम है कि कोई भी कर्म फलहीन नहीं होता। प्रत्येक कर्म का फल मिलना निश्चित है। चूंकि ये अनुष्ठान और प्रयोग मनो-आध्यात्मिक कर्म हैं, अतः इनका भी फल मिलना निश्चित है। अब सवाल यह है कि इन कर्मों का फल कितना और कब मिलेगा? इस प्रश्न का उत्तर कई बातों पर निर्भर है।

पहली बात तो यह कि प्रारब्ध में ऋणात्मकता कितनी है, देनदारी कितनी है? अठन्नी देकर सैकड़ों रुपयों की देनदारी नहीं निपटायी जा सकती। शास्त्रों में गन्त्र-सिद्धि के लिए जो जप संख्या बताई गई है अथवा अनुष्ठानों के दिनों की जो संख्या विहित की गई है, वह मध्यम-मान है। अतः यदि प्रारब्ध में ऋणात्मकता अधिक है तो मात्र एक या दो अनुष्ठान करने से वह पूर्णतः समाप्त नहीं होगी। एतदर्थ ऋणात्मकता के अनुरूप एक से अधिक अनुष्ठान करने पड़ेंगे। कई अनुष्ठानों के

फलस्वरूप जब प्रारब्ध की ऋणात्मकता पूर्णतः प्रभावहीन हो जायेगी, उसके बाद किये जाने वाले अनुष्ठानों का फल मिलेगा। यदि बीच में ही अनुष्ठान क्रम बन्द कर दिया गया तो ऋणात्मकता कुछ कम जो जरूर हो जायेगी मगर अनुष्ठानों का यथेष्ट सकारात्मक फल नहीं मिलेगा।

दूसरी बात यह कि ये अनुष्ठान उसी समय सकारात्मक होंगे जब इन्हें पूरी निष्ठा के साथ यथा-विहित शास्त्रीय विधि एवं नियम के साथ सम्पन्न किया जाये। विधि में जरा सी भी त्रुटि, रंच मात्र भी क्रम विहीनता या नियमों की जरा सी भी अवहेलना से इनकी फलवत्ता संदिग्ध हो जायेगी। कारण यह कि ये अनुष्ठान भी यज्ञ रूप हैं और 'यज्ञ' का एक नाम 'मख' है। मख अर्थात् छिद्र रहित। जिस तरह कलश में छोटा सा भी छेद हो जाने पर सारा पानी बह जाता है, उसी तरह अनुष्ठान विधि में जरा सी त्रुटि उसे फलविहीन बना देती है।

अब रहा यह सवाल कि ये अनुष्ठान किस तरह फलीभूत होते हैं? अनुष्ठान करके हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से अनुष्ठानों का फल नहीं मिलता। अनुष्ठान के साथ उद्यम और परिश्रम करना पड़ता है। उद्यम रूपी वृक्ष में अनुष्ठानों के फल लगते हैं। होता यह है कि प्रारब्ध की ऋणात्मकता के कारण उद्यम और परिश्रम का जो वृक्ष सूखकर फलहीन हो गया था, उसे ये अनुष्ठान फलदार और छायादार बना देते हैं। अनुष्ठानों की सार्थकता और फलवत्ता का यही रहस्य है।

धन्यवाद ज्ञापन

इस ग्रन्थ के प्रणयन के लिए मैं सर्वप्रथम श्री मधुसूदन प्रकाशन के उन्नायक एवं प्रेरणा स्रोत पूजनीय स्वामी श्री शत्रुघ्नदास के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने वीतरागी होते हुए भी जन-कल्याण हेतु प्रस्तुत ग्रन्थ के निबन्धन की प्रेरणा दी। श्री मधुसूदन प्रकाशन के स्वत्वाधिकारी चिरं. विकास थपलियाल 'शिवम्' के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ को प्रकाशित कर श्रद्धालु साधकों और पाठकों को उपलब्ध कराया। सर्वाधिक धन्यवाद के पात्र वे पाठक होंगे जो इस ग्रन्थ में निबन्धित अनुष्ठानों और प्रयोगों को यथा-विधि सम्पादित करके भारत की इस प्राचीन परम्परा को जीवन्त बनाये रखेंगे। भगवती 'श्री' उनके जीवन को सुखी और समृद्ध बनायें।

निवेदक

राम-नवमी
'प्लवंग' २०७१ विक्रमी
८/४/२०१४

'कुल मार्तण्ड' मधुसूदन प्रसाद शुक्ल
१३२, अग्रवाल कालोनी
प्रियदर्शनी नगर, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
मो0-+९१-९७५५३८९९८५

प्राभातिक-कृत्य

॥ श्री गणेशाय नमः॥

॥ गुरु-वन्धना ॥

साधक ब्रह्म-मुहूर्त में निद्रा त्यागकर शय्या पर ही पद्मासन में बैठकर स्व-शिर में स्थित सहस्र-दल-कमल कर्णिका मध्य-स्थित चन्द्र-मण्डल में हंस पीठ पर विराजमान श्री गुरूदेव का ध्यान करें:-

श्वेतं श्वेत-विलेप-माल्य वसनं वामेन रक्तोत्पलम्,
विभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसाश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं परम्,
हाला-घूर्णित-लोचनोत्पलं-युग्मं ध्याये शिरस्थं पदम्॥

ध्यान के पश्चात श्री गुरू देव का मनसोपचार पूजन करें-

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा
श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा
श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा
श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
रं वह्नयात्मकं दीपं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा
श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा
श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा
श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।

इसके बाद गुरु-पादुका मंत्र का यथा शक्ति जप कर श्रीगुरु देव का स्तवन • करें-

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥१॥
नमस्ते नाथ भगवन्, शिवाय गुरु रूपिणे।
विद्यावतार संसिध्यै, स्वीकृतानेक विग्रहे॥२॥

इसके बाद अपने गुरुदेव द्वारा प्राप्त मूल मन्त्र (विद्या) का विनियोग न्यासादि सहित यथा शक्ति जप करें। जप के बाद पुनः ध्यान न्यासादि करके देवता को जप

समर्पित कर दें।

इसके बाद 'प्रातः स्तोत्र' का पाठ करें।

प्रातर्नमामि जगतां जनन्याश्चरणांबुजम्।
श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्याः नमितायाः हरादिभिः॥१॥
प्रातः त्रिपुरसुन्दर्याः नमामि पदपंकजम्।
हरिर्हर विरञ्चिश्च सृष्ट्यादि कुरुते यतः॥२॥
प्रातः त्रिपुर सुन्दर्याः नमामि चरणाम्बुजम्।
यत् पादमम्बु शिरसि भाति गंगा महेशितुः॥३॥
प्रातः पाशाङ्कुश शरचाप हस्तां नमाम्यहम्।
उद्यदादित्य संकाशां श्रीमत् त्रिपुर सुन्दरीं॥४॥
प्रातः नमामि पादाब्जं ययेदं भासते जगत्।
तस्या (यस्या) त्रिपुरसुन्दर्याः यत्प्रसादान्निवर्त्तते॥५॥

फल श्रुति

यः श्लोक पञ्चकमिदं प्रातः नित्यं पठेन्नरः।
तस्मै दद्यात् आत्मपदं श्रीमत् त्रिपुर सुन्दरी॥

प्रार्थना

त्रैलोक्य चैतन्य मये परेशि
श्रीनाथ नित्ये भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थे
संसार यात्रामनुवर्त्तयिष्ये॥
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः।
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया च सर्वेशि! हृदि स्थितया
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥

स्तोत्र पाठ के अनन्तर स्वयं की सच्चिदानन्द रूप में भावना कर गुरु, देवता और आत्मा की एकता का ध्यान करें।

- **भूमि-वन्दना-**

ॐ समुद्र मेखले देवि!, पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि! नमस्तुभ्यं, पादस्पर्श क्षमस्व मे॥

पलंग पर बैठे-बैठे ही यह वन्दना करें। उस समय जिस नासापुट से श्वास चल रहा है, वही पैर पहले भूमि पर रखकर शयन कक्ष से बाहर जायें। बाहर जाकर आम-अश्वत्थ-वट आदि कुल वृक्षों का दर्शन एवं नमन करें।

शौच-विधि

गृह से बाहर निकलकर नैर्ऋत्य या वायव्य दिशा में एकान्त में जाकर निम्न

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

मंत्र से तीन बार ताली बजायें।

गच्छन्तु ऋषयो देवाः, पिशाचा यक्ष-राक्षसाः।
पितृ-भूत-गणाः सर्वे, करिष्ये मल-मोचनम्॥

शौच क्रिया से निवृत्त होकर मिट्टी तथा जल से हाथ-पैर धोकर बारह (१२) बार कुल्ला कर आचमन करें।

दन्त-धावन

आचमन के बाद वनस्पति से प्रार्थना करें -

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजा-पशु-वसूनि च।
ब्रह्म-प्रज्ञा च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥

विहित आकार एवं वृक्ष की दातुन लेकर यह संकल्प पढ़ें -

मुख दुर्गन्ध नाशाय, रदानाञ्च विशुद्धये।
ष्ठीवनाय च गात्राणां, कुर्वेऽहं दन्तधावनम्॥

इसके बाद- **''ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजन प्रियाय ज्वल-ज्वल**
प्रज्वल-प्रज्वल सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।''

मंत्र पढ़ते हुए दन्तधावन करके मूल-मंत्र पढ़कर मुख को धोयें।

स्नान-विधि

स्वच्छ वस्त्रादि लेकर तीर्थादिक अर्थात् नदी या तालाब पर जायें वहां पहुंचकर साफ स्थान पर अस्त्र मंत्र (फट्) से जल छिड़क कर वस्त्रादि रख दें, हाथ पैरों को धोकर आचमन करके तीर्थ देवता को प्रणाम कर वैदिक स्नान करके तांत्रिक स्नान करें। संकल्प-

ॐ अद्येत्यादि0 अमुक शर्माऽहं/वर्माऽहं/गुप्तोऽहं/ममात्मनः श्रुतिस्मृति-पुराणोक्त फलावाप्तये एतन्मंत्र-प्रतिबन्धकाशेष-पाप-क्षय पूर्वक अमुक देवता प्रीत्यर्थे स्नानं करिष्ये।

शिर में गुरुदेव तथा ह्रदय में देवता का ध्यान कर मानस-पूजा करें। इसके बाद अंकुश मुद्रा ''क्रों'' से सम्मुख जल में तीर्थों का आवाहन करें-

ॐ गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

फिर 'वं' धेनु मुद्रा से जल का अमृतीकरण कर मत्स्य मुद्रा द्वारा आच्छादन (ढक कर)करके तीर्थ शक्ति का ध्यान करें-

सर्वानन्द - मयीमशेष - दुरित - ध्वंसां मृगाङ्कप्रभाम्।
त्र्यक्षां चोर्ध्व-कर-द्वयेन, दधतीं पाशं-सृणिं च क्रमात्।
दोर्भ्यां चामृत-पूर्ण हेम-कलशं मुक्ताक्ष-मालां वरम्।
गङ्गा-सिन्धु-सरिद्-वरादि-सहितां श्रीतीर्थ-शक्तिं भजे॥

ध्यान के पश्चात मूल मंत्र से तीन बार शिर का प्रोक्षण करें तथा मूल मंत्र से ही शरीर में शुद्ध मृत्तिका लगाकर जल में तीन बार डुबकी लगायें। मूल मंत्र का जप

करते हुए किनारे आकर निम्न मंत्र से तीन बार जलाञ्जलि दें-

असुरा-भूत-वेतालाः कूष्माण्डा ब्रह्म राक्षसाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा॥

जल से बाहर निकल कर धुले हुए वस्त्र पहनकर शिखा बन्धन करें-

ऊर्ध्वकेशि विरुपाक्षि, मान्स-शोणित भोजनि।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये, चामुण्डेत्यपराजिते॥

इसके बाद मूल मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर यज्ञीय, भस्म, चन्दन अथवा जल से ही तिलक करें।

गृह-स्नान विधि

यदि साधक वृद्ध हो, रोगी हो अथवा अन्य किसी कारण वश बाहर जाकर (नदी, तालाबादि में) स्नान करने में असमर्थ हो तो उसे घर में ही स्नान करना चाहिए यदि वह चाहे तो कुछ गरम जल से बिना शिर भिगोये भी स्नान कर सकता है।

पत्थर अथवा लकड़ी के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर, हाथ पैरों को धोकर तीन वार कुल्ला करके आचमन करे। इसके बाद शिखाबन्धन कर संकल्प करें-

अद्येत्यादि0..................अमुक देवता प्रीत्यर्थे गृहे प्रातः स्नानमहं करिष्ये।

स्नानीय जल में तीर्थों का आवाहन कर इष्ट देव स्मरण पूर्वक स्नान करें।

॥ तान्त्रिक-सन्ध्या॥

वैदिक-सन्ध्या करके तांत्रिक सन्ध्या करें।

संकल्प - **अद्येत्यादि0 अमुक देवता प्रीत्यर्थे अमुक-सन्ध्यां करिष्ये।**

आचमन - **ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा।**
ॐ क्लीं विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा।
ॐ सौः शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा।

मूल-मन्त्र से प्राणायाम कर, शिखा बन्धन करके शुद्ध जल में 'ॐ गङ्गे च यमुने च'' इत्यादि मंत्र पढ़कर अंकुश मुद्रा 'क्रों' द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थो का आवाहन करें। कुछ जल बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से ढक करके 'हं यं रं वं लं' इन पांच-भौतिक मंत्रों से तीन बार अभिमंत्रित कर अंजलि से गिरते हुए जल बिन्दुओं द्वारा शिर पर सात बार प्रोक्षण करें।

अघ-मर्षण -

दाहिने हाथ में पुनः जल लें। इस जल को वाम-नासापुट तक लायें और इडा नाडी से उक्त जल को खींचकर शरीर के भीतर ले जाने की भावना करें। कुछ क्षणों के बाद यह भावना करें कि वह जल के भीतर के सभी आन्तरिक कल्मषों को धोकर पिंगला (दाहिनी) नाड़ी से बाहर निकल आया है। विकृतियों और कल्मषों को धोने के कारण वह काला पड़ गया है। इस जल को दाहिने हाथ से बायें हाथ में लेकर उसे सामने परिकल्पित वज्र शिला (चट्टान) पर अस्त्र मंत्र (फट्) का जप करते हुए पटक दें।

इस प्रकार 'अघमर्षण' कर हाथों को धोयें।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

मूल-मन्त्र से आचमन कर अर्घ्य-पात्र में जल लेकर "ॐ ब्रह्मानन्द-भैरवः सशक्तिकस्तृप्यतां" से तीन बार तर्पण करके 'गुरु-चतुष्टय' का तर्पण करें। तदनन्तर सम्मुख स्थित जल में यंत्र की भावना कर "ॐ कालाग्नि-रूद्रं तर्पयामि" इत्यादि मंत्रों से पीठ देवताओं को एक-एक अंजलि प्रदान कर देवी का ध्यान करें-

प्रातः कालीन ध्यान-

प्रातर्ब्राह्मी रक्त-वर्णा, द्विभुजां च कुमारिकाम्।
कमण्डलुं तीर्थ-पूर्णमक्ष-मालां च विभ्रतीम्॥
कृष्णाजिनाम्बर-धरां, हन्सारूढां शुचि-स्मिताम्॥

मध्यान्ह-कालीन-ध्यान-

मध्याह्ने तां स्वर्ण-वर्णा, वैष्णवीं च चतुर्भुजाम्।
शंख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणीं गरुडासनाम्॥
पीनोत्तुङ्ग-कुच-द्वन्द्वां, वन-माला-विभूषिताम्।
युवतीं सततं ध्यायेन् मध्ये मार्तण्ड-मण्डले॥

सायं-कालीन-ध्यान-

सायाह्ने वरदां देवीं, गायत्रीं संस्मरेद् यतिः।
शुक्लां शुक्लाम्बर-धरां, वृषासन-कृताश्रयाम्॥
त्रिनेत्रां वरदां पाशं, शूलं च नृ-करोटिकाम्।
विभ्रतीं कर-पद्मैश्च, वृद्धां गलित-यौवनाम्॥

ध्यान के बाद पञ्चोपचार पूजन कर **"मूलं अमुक देवता तृप्यताम्"** से तीन बार तर्पण कर परिवार देवताओं का एक-एक बार तर्पण करे 'अथवा' **"स-शक्तिः सायुधा स-परिवारा श्री अमुक देवता तृप्यनताम्"** से दस बार तर्पण करे।

इसके बाद अर्घ्य-पात्र में दूर्वा-अक्षत-चन्दन जपा पुष्प आदि लेकर **"ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्ड-भैरवाय प्रकाश-शक्ति सहिताय एषोऽर्घ्यः स्वाहा"** से कुल-सूर्य को तीन बार अर्घ्य प्रदान करें। पुनः सूर्य-मण्डल में भगवती का ध्यान कर, पूर्ववत् अर्घ्य की रचना करके "वैदिक गायत्री मंत्र" का उच्चारण कर **"श्री अमुक देवतायै -ब्रह्म-चैतन्य मयायै** (मध्याह्न सन्ध्या में रुद्र चैतन्य मयायै, सायं सन्ध्या में विष्णु-चैतन्य मयायै) **एषोऽर्घ्यः स्वाहा"** से तीन बार अर्घ्य प्रदान कर अपने इष्ट देवता* की गायत्री का यथाशक्ति जप करें।

जप के पश्चात् समर्पण करें-

'श्री सूर्य-मण्डलस्थायै अमुक देवतायै इदं जपं समर्पयामि।'

सन्ध्या के पश्चात् यथा शक्ति कवच स्तोत्रादि का पाठ करें।

***ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि, सौस्तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्॥**
ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्॥
ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि, तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥
ॐ ऐं बागीश्वरि विद्महे क्लीं कामेश्वरि धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्॥

टिप्पणी - प्रभातिक-कृत्य सन्ध्यादि की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक 'स्वच्छन्द-पद्धति' का अवलोकन करें।

संक्षिप्त अर्चन विधि

संध्या-वन्दन के पश्चात् साधक याग मण्डप अथवा पूजा घर में आयें। यह पूजन-गृह स्वच्छ और पवित्र, सुगन्धित धूपों से सुवासित एवं दीपमालाओं से आलोकित होना चाहिए। पूजा-गृह के द्वार पर आकर साधक 'पापोत्सादन' के लिए हाथ जोड़कर निम्नलिखित मंत्र पढ़े-

ॐ सूर्यो सोमो यमः कालो, महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाशुभस्येह, कर्मणो नव-साक्षिणः॥
देवि! त्वं प्राकृतं चित्तं, पापक्रान्तमभून्मम
तान्निसारय चित्तान्मे, पापं फट् च ते नमः॥

'फट्' का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा से वाम करतल पर फट्कार करें। **'नमः'** कहकर पुनः हाथ जोड़ें।

भूमि पर आसन बिछाकर **''ॐ वज्रोदके हुं फट् स्वाहा''** का उच्चारण करते हुए आसन पर जल छिड़कें। आसन पर बैठकर **''ॐ विशुद्धे शमयाशेष विकल्पान्''** इस मंत्र से हाथ पैर धोयें। **'ॐ ह्रीं स्वाहा'** से आचमन करके शिखा-बन्धन करें। शिखा बन्धन का मंत्र है- **''ॐ ह्रीं वज्रिणि! मणिधारिणि! महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।''** इसके बाद सामान्य अर्घ्य स्थापित करें।

सामान्य अर्घ्य स्थापन - अपने दाहिने ओर त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र युक्त मण्डल बनायें। **''ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः''** से उक्त मण्डल का गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करके उस पर आधार (तिपाई आदि) स्थापित करें। **'अस्त्राय-फट्'** मन्त्र से अर्घ्य-पात्र को धोकर आधार पर रखें। **'नमः'** का उच्चारण करते हुए अर्घ्य पात्र में शुद्ध छना हुआ जल भरें।

ॐ॥ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरि, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए सूर्य-मण्डल से उक्त जल में गंगा आदि सरित्-देवताओं का 'अंकुश' मुद्रा से आव्हान करें। 'ॐ' का उच्चारण करते हुए जल में चन्दन-पुष्प-अक्षत डालें। सुधा बीज 'वं' का उच्चारण करते हुए धेनु मुद्रा से उसे अमृत मय करें।

द्वार पूजा- सामान्य अर्घ्य का जल द्वार पर छिड़क कर गन्ध-चन्दन आदि से द्वार-देवताओं का पूजन करें -

ॐ द्वार श्रियै नमः	-	ऊपर के मध्य भाग में
गं गणेशाय नमः	-	द्वार श्री के दाहिने ओर
श्रियै नमः	-	बांयी ओर
धां धात्रे नमः	-	चौखट पर दाहिनी ओर

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

महालक्ष्म्यै नमः	-	चौखट पर दाहिनी ओर
गंगायै नमः	-	चौखट पर दाहिनी ओर
विं विधात्रे नमः	-	चौखट पर बायीं ओर
महा सरस्वत्यै नमः	-	चौखट पर बायीं ओर
यमुनायै नमः	-	चौखट पर बायीं ओर
शंख निधये नमः	-	देहलीज पर
पद्म निधये नमः	-	देहलीज पर
वास्तु पुरुषाय नमः	-	देहलीज पर

द्वार देवताओं का पूजन करके उनकी अनुमति लेकर 'सामान्य-अर्घ्य' हाथ में लेकर पूजा-गृह में प्रवेश करें। पूजा-गृह में बायां अंग सिकोड़ते हुए दाहिना पैर पहले उठाकर प्रवेश करना चाहिए।

विशेष टिप्पणी - अगर साधक घर में ही स्नान करे और उसके घर में पृथक पूजा-गृह नहीं हो तो वह घर के किसी एकान्त शुद्ध स्थान में 'संध्या-वन्दन' करने के बाद इष्ट देवता का अर्चन करें। वह वहीं पर सामान्य अर्घ्य पात्र की स्थापना करके आसन -शोधन-भूत-अपसरण-शिखा बन्धन आदि कर्म करें। उसे द्वार पर सामान्य अर्घ्य स्थापन एवं द्वार देवताओं की पूजा करने की आवश्यकता नहीं है।

(१) ॐ 'रं' अग्नि प्राकाराय नमः।

(२) ॐ सहस्रार हुं फट् सुदर्शन प्राकाराय नमः।

(३) ॐ श्लीं पशुं हुं फट् पाशुपत प्राकाराय नमः।

इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने चारों ओर चुटकी बजायें।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥

हाथ जोड़कर भैरव नाथ से भगवती के अर्चन की अनुमति मांगें। इसके बाद आसन-शोधन करें

आसन-शोधन - बैठने के स्थान पर सामान्य अर्घ्य के जल से 'त्रिकोण' (▽) बनाकर "**ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः**" - इस मंत्र से उक्त त्रिकोण में आधार -शक्ति का गन्ध अक्षत से पूजन करके उस पर आसन (लाल-कम्बल) बिछायें। आसन पर हाथ रखकर 'आसनोपवेशन' का विनियोग पढ़ें-

"**ॐ अस्य आसन-शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठः ऋषिः, सुतल छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः**"

तत्पश्चात पृथ्वी माता से प्रार्थना करें-

ॐ पृथ्वि! त्वया धृताः लोकाः, देवि! त्वं च विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चाऽऽसनम्॥

पृथ्वी पर गन्ध-अक्षत-पुष्प आदि रखें।

टिप्पणी - भले ही आप पहले से ही आसन पर बैठे हुए हो, आसन शोधन की यह क्रिया सम्पादित करनी ही चाहिए। पृथ्वी से निवेदन करने के बाद आसन का एक कोना उठाकर गन्ध-पुष्प-अक्षत आसन के नीचे रखना ही चाहिए। त्रिपुरा के पूजन में लाल-कम्बल का आसन सर्वाधिक प्रशस्त है।

आसन पर सावधानी से सुखपूर्वक बैठकर आचमन करें-

ऐं आत्म-तत्त्वाय स्वाहा। क्लीं विद्या तत्त्वाय स्वाहा। सौः शिव-तत्त्वाय स्वाहा। ऐं क्लीं सौः सर्वतत्त्वाय स्वाहा।

आचमन करने के बाद योनि मुद्रा से **'गुं गुरुभ्यो नमः'** से वायें कन्धे पर गुरुदेव को **'गं गणपतये नमः'** से दाहिने कन्धे पर गणेश जी को और सम्मुख (हृदय में)**'अमुक देवतायै नमः'** से इष्ट देवता को प्रणाम करें।

संकल्पः-

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य (देश-काल-स्थान का उल्लेख करके) **अमुक गोत्रः** (शाम्भव गोत्रः) **अमुक शर्माऽहम् अमुक देवता प्रीत्यर्थे यथोपलब्ध द्रव्यैः यथा शक्ति अर्चनं जपं च करिष्ये।**

(बेहतर हो यह संकल्प देवीमान रीति से बनाये गये 'तान्त्रिक-पञ्चाङ्ग' के अनुसार किया जाये)

पुष्पादि शोधन

इसके बाद 'सामान्य-अर्घ्य' का कुछ जलन लेकर पूजन सामग्री और स्वयं पर छिडकें। पुष्प आदि को अपने दाहिने ओर तथा अन्य सामग्रियों को बायीं ओर रखें। अपना हाथ धोने के लिए अपने आसन के पीछे एक थाली तथा एक अन्य पात्र रखें। श्री 'श्रीयन्त्र' की स्थापना के लिए अपने सामने कुछ दूरी पर चौकी या सिंहासन रखें। सिंहासन और अपने आसन के मध्य में पात्र आदि की स्थापना के लिए पर्याप्त स्थान रखना चाहिए।

पुष्प-शोधन

यथा विहित शुद्ध और ताजे फूलों का ही पूजन में प्रयोग करें। पूजन के पूर्व पुष्पों का इस तरह शोधन करें -

ॐ पुष्प केतु राजार्ह ते शताय सम्यक् सम्बद्धाय

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्प सम्भवे! पुष्पं यवाकीर्णे हुं फट् स्वाहा

इन मंत्रों से सुसंस्कृत शुद्ध जल छिड़क कर पुष्पों का शोधन करें।

'ॐ ह्रीं हुं फट्' यह मंत्र पढ़कर नाराच-मुद्रा और सम-दृष्टि से गन्ध आदि सामग्रियों का शोधन करें। अग्नि बीज (रं) का उच्चारण कर दीपक की लौ का स्पर्श करें। **'ॐ हुं फट् स्वाहा'** - यह मंत्र पढ़कर अपनी काया, वाणी और चित्त को शुद्ध करें। इसके बाद हृदय पर हाथ रखकर **'रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा'** यह मंत्र पढ़कर अपनी रक्षा का विधान करें।

चन्दन लगा हुआ एक फूल लेकर उसे मसल डालें और फिर उसे सूंघें। इसके बाद निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए उसे याग मण्डप से बाहर फेंक दें।

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु, ये मां हिंसति हिंसकाः।
मृत्यु रोग भय क्लेशाः पतन्तु रिपु-मस्तके॥

मूर्ध्नि में इष्ट देवता के 'कुल्लुका' मन्त्र का चिन्तन करके शरीर-शोधन के लिए प्राणायाम और भूत शुद्धि करें-

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

भगवती महात्रिपुर सुन्दरी का कुल्लुका मन्त्र है-

ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा

शरीर-शोधन

प्राणायाम -

शान्त और प्रसन्नचित्त साधक शरीर शोधन के लिए यथा-विहित विधि से प्राणायाम करें। यथा-

प्रणव (ॐ) अथवा मूल मन्त्र के बीज मंत्र का १६ बार जप करते हुए बांयें नथुने से वायु (श्वास) खींचे। इस समय दाहिने हाथ के अंगूठे से दाहिने नथुने को दवाये रखें। इसे 'पूरक' कहते हैं।

दाहिने हाथ की अनामिका और कनिष्ठा से बांये नथुने को दबाकर बन्द कर दें। इस तरह दोनों नथुनों को दवाकर प्रणव या बीज मंत्र से ६४ बार जप करते हुए वायु को फेफड़े में रोक रखें। इसे 'कुम्भक' कहते हैं।

इसके वाद दाहिने नथुने से अंगूठे को हटाकर प्रणव या बीज मंत्र का ३२ बार जप करते हुए पेट में भरी वायु को धीरे-धीरे बाहर निकालें। इसे 'रेचक' कहते हैं।

यह एक 'प्राणायाम' हुआ। इसी प्रकार तीन 'प्राणायाम' करें। दूसरी बार दाहिने नथुने से 'पूरक' और बांये नथुने से रेचक करें। प्राणायाम की तीसरी आवृत्ति में बांये से पूरक और दाहिने नथुने से रेचक किया जाता है। इस तरह प्राणायाम करने के बाद 'भूत-शुद्धि' करें।

भूत-शुद्धि -

(१) पिंगला नाड़ी (दाहिने नथुने) से श्वास खींचकर-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूल श्रङ्गाटकात् सुषुम्ना
पथेन जीव शिवं परम शिव पदे योजयामि स्वाहा

इस मंत्र का जप करते हुए मूलाधार में स्थित जीवात्मा को सुषुम्ना पथ से ब्रह्मरन्ध्र में लाकर उसे परम शिव में एकीभूत (विलीन) कर दें। जब यह क्रिया पूर्ण हो जाये-बांये नथुने से वायु को निकाल दें।

(२) इड़ा नाड़ी (बांये नथुने) से पूरक करके -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं 'यं' (१६ बार) संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहा

उक्त मंत्र का जप करते हुए वायु बीज से अपने शरीर का शोषण कर (अर्थात् सुखाकर) पिंगला नाड़ी से (दाहिने नथुने से) श्वास-वायु को निकाल दें।

(३) पिंगला नाड़ी से पूरक करके -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं 'रं' (१६ बार) लिङ्ग शरीरं दह दह पच पच स्वाहा

उक्त मंत्र का जप करते हुए अवशोषित संकोच-शरीर को भस्मीभूत करके श्वास समीर को इड़ा नाड़ी (बांये नथुने से) निकाल दें।

(४) बांये नथुने से पूरक करके -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं 'वं' (१६ बार) परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा

उक्त मंत्र का जप करके यह भावना करें कि सहस्रारवर्ती चन्द्र-मण्डल से हुई अमृत वर्षा से वह भस्म आर्द्र हो गया है। यह भावना करने के बाद श्वास-समीर को पिंगला नाड़ी (दाहिने नथुने) से निकाल दें।

(५) अब दाहिने नथुने से पूरक करके -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं 'लं' (१६ बार) शाम्भव शरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहा

मंत्र का जप करके यह भावना करें कि आर्द्र भूत (गीले) भस्म से नये दिव्य शरीर का निर्माण हो गया है, श्वास-समीर को बांये नथुने से निकाल दें।

(६) इड़ा नाड़ी (बांये नथुने) से पूरक करते हुए -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोऽहं अवतर अवतर शिव पदात् जीव सुषुम्ना पथेन प्रविश प्रविश मूलश्रङ्गटकं उल्लासोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहम् स्वाहा'

का जप करके परम शिव से एकीकृत जीव को पुनः सुषुम्ना मार्ग से मूलाधार में लाकर प्रतिष्ठित कर दें।

जो साधक इस विधि से भी भूतशुद्धि नहीं कर सकें। वे **'ॐ ह्रौं'** - इस मंत्र का १०८ बार जप कर लें। इस जप से भूत शुद्धि का फल मिलता है।

लघु प्राण प्रतिष्ठा - भूत शुद्धि के वाद नव-निर्मित शाम्भव शरीर में 'प्राण-प्रतिष्ठा' की जाती है। इसकी संक्षिप्त विधि इस प्रकार है। एतदर्थ सर्वप्रथम भगवती 'प्राण-शक्ति' का ध्यान करें-

रक्ताब्धिपोतारुण पदम् संस्थाम् पाशाङ्कुशाविक्षु सशरा वाणान्।
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥

इस प्रकार ध्यान कर 'लं' इत्यादि से उनका मानसिक पूजन करें। हृदय पर हाथ रखकर निम्नलिखित मंत्रों का ३ बार जप करें-

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहम् श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः प्राणाः इह प्राणाः।

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहम् श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः जीवः इह जीवः।

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहम् श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहम् श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः त्वङ् मनः चक्षुः श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण-पाणि-पाद प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा

उपर्युक्त मन्त्र चतुष्टय की तीन बार आवृत्ति करके नये शाम्भव शरीर को गर्भाधान आदि पञ्चदश संस्कारों की सिद्धि के लिए पन्द्रह बार प्रणव (ॐ) का जप करें।

कतिपय आचार्यों का अभिमत है कि प्राण प्रतिष्ठा के बाद वक्ष्यमाण विधि से पुनः प्राणायाम करना चाहिए।

मातृका-न्यास

विनियोग -

ॐ अस्य अन्तर्मातृका न्यास मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजम्, स्वराः शक्तयः, विसर्गः कीलकम्, लिपि न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास-

श्री ब्रह्मणे ऋषये नमः-शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः - मुखे। मातृका सरस्वती देवतायै नमः - हृदये। व्यञ्जन बीजाय नमः - गुह्ये। स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः - पादयोः। विसर्ग कीलकाय नमः - नाभौ। लिपि न्यासे विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गे।

	कर न्यास	पडंग न्यास
अं कं खं गं घं ङं आं	**- अंगुष्ठाभ्यां नमः -**	**हृदयाय नमः**
इं चं छं जं झं ञं ईं	**- तर्जनीभ्यां नमः -**	**शिरसे स्वाहा**
उं टं ठं डं ढं णं ऊं	**- मध्यमाभ्यां नमः -**	**शिखायै वषट्**
एं तं थं दं धं नं ऐं	**- अनामाभ्यां हुम् -**	**कवचाय हुम्**
ओं पं फं बं भं मं औं	**- कनिष्ठाभ्यां वौषट् -**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
अं यं रं लं वं शं षं	**- करतल कर पृष्ठाभ्यां -**	**अस्त्राय**
सं हं ळं क्षं अः	**फट्**	**फट्**

कर-न्यास और इन्हीं मन्त्रों से हृदयादि न्यास करने के बाद शरीर के मूलाधारादि चक्रों में विराजिता मातृकाओं की वन्दना करें।

आधारे लिङ्ग नाभौ प्रकटित हृदये तालु मूले ललाटे।
द्वे पत्रे, षोडशारे, द्विदश, दश दले, द्वादशार्धे, चतुष्के
वासान्ते-बालमध्ये-डफ-कठ सहिते कंठ देशे स्वराणाम्।
हं क्षं तत्त्वार्थ चिन्त्यं सकल दलगतां वर्णरूपां नमामि॥

वर्ण रूपा मातृका शारदा का वन्दन और नमन करने के पश्चात् उनके सकल रूप का ध्यान करें-

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त मुख दोः पन्मध्य वक्षः स्थलाम्
भास्वन्मौलिनिबद्ध चन्द्रशकलामापीन तुङ्गस्तनीम्॥
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्याञ्चैव हस्ताम्बुजैः
विभ्राणां विशद प्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

भगवती वाग्देवी का सम्पूर्ण शरीर-मुख, बाहु-मध्य-वक्षः स्थल आदि पचास वर्णाक्षरों से संघटित है। उनका केश पाश चन्द्रकला से देदीप्यमान है। उनके चारों हाथों में मुद्रा, अक्ष-माला, सुधा पूर्ण कलश और पुस्तक हैं। वे त्रिनेत्रा हैं और उनकी प्रभा चारों ओर व्याप्त है।

इस प्रकार ध्यान करके 'लं' इत्यादि मंत्रों से उनका पञ्चोपचार मानस पूजन करने के बाद न्यास करें।

(१) कण्ठ क्षेत्रवर्ती धूम्र वर्ण वाले षोडश दल के विशुद्ध चक्र में

अं नमः। आं नमः। इं नमः। ईं नमः। उं नमः। ऊं नमः। ऋं नमः। ॠं नमः। लृं नमः। लॄं नमः। एं नमः। ऐं नमः। ओं नमः। औं नमः। अं नमः। अः नमः।

(२) हृदय क्षेत्रवर्ती बन्धूक पुष्पवर्णी द्वादश दलात्मक 'अनाहत' चक्र में-

कं नमः। खं नमः। गं नमः। घं नमः। ङं नमः। चं नमः। छं नमः। जं नमः। झं नमः। ञं नमः। टं नमः। ठं नमः।

(३) नाभि क्षेत्रवर्ती श्याम (नीले) वर्ण के दश दलात्मक मणिपूरक चक्र में-

डं नमः। ढं नमः। णं नमः। तं नमः। थं नमः। दं नमः। धं नमः। नं नमः। पं नमः। फं नमः।

(४) लिंग मूलवर्ती सिन्दूरी रंग के षड्दलात्मक 'स्वाधिष्ठान' चक्र में-

बं नमः। भं नमः। मं नमः। यं नमः। रं नमः। लं नमः।

(५) सुवर्ण वर्ण के चार दल वाले मूलाधार चक्र में-

वं नमः। शं नमः। षं नमः। सं नमः।

(६) भ्रूमध्यस्थ चन्द्र वर्ण के दो दल वाले आज्ञा चक्र में-

हं नमः। क्षं नमः।

इसके बाद पूर्ववत् ध्यान आदि करके 'बहिर्मातृका' न्यास करें-

'बहिर्मातृका' न्यास

अं नमः - शिरसि। **आं नमः** - मुखवृत्ते।
इं नमः - दक्षिण नेत्रे। **ईं नमः** - वाम नेत्रे।
उं नमः- दक्षिण कर्णे। **ऊं नमः** - वाम कर्णे।
ऋं नमः - दक्ष नासायाम्। **ॠं नमः** - वाम नासायाम्।
लृं नमः - दक्ष गण्डे। **लॄं नमः** - वाम गण्डे।
एं नमः - ओष्ठे। **ऐं नमः** - अधरे।
ओं नमः - ऊर्ध्व दन्ते। **औं नमः** - अधोदन्ते।
अं नमः - कण्ठे। **अः नमः** - मुख वृत्ते।

'क' वर्ग के पांच वर्णों का न्यास दाहिने हाथ के विभिन्न हिस्सों में करें-

कं नमः - दक्ष बाहुमूले (कखौरी)। **खं नमः** - कूर्परे (कोहिनी)
गं नमः - मणिबन्धे (कलाई)। **घं नमः** - अंगुलिमूले
ङं नमः - अंगुलि अग्रे

'च' वर्ग के पांच वर्णों का न्यास बांयें हाथ के विभिन्न हिस्सों में करें-

चं नमः - वाम बाहुमूले (कखौरी)। **छं नमः** - कूर्परे (कोहिनी)
जं नमः - मणिबन्धे । **झं नमः** - अंगुलिमूले
ञं नमः - अंगुलि अग्रे

'ट' वर्ग के पांच वर्णों का न्यास दाहिने पैर के विभिन्न अवयवों में करें-

टं नमः - दक्षपादमूले **ठं नमः** - जानुनि

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

डं नमः - गुल्फे **ढं नमः** - अंगुलिमूले
णं नमः - अंगुलि अग्रे

'त' वर्ग के पांच वर्णों का न्यास बांये पैर के विभिन्न अवयवों में करें-
तं नमः - वामपादमूले **थं नमः** - जानुनि
दं नमः - गुल्फे **धं नमः** - अंगुलिमूले
नं नमः - अंगुलि अग्रे

'प' वर्ग के पांच वर्णों का न्यास इस तरह से करें-
पं नमः - दक्षिण पार्श्वे (बगल में) **फं नमः** - वाम पार्श्वे
बं नमः - पृष्ठे (पीठ) **भं नमः** - नाभौ
मं नमः - उदरे (पेट पर)

अंतस्थ और ऊष्माण वर्णों का न्यास क्रम-
'यं' त्वगात्मने नमः - हृदये
'रं' असृगात्मने नमः - दक्षिण अंसे (कन्धा)
'लं' मांसात्मने नमः - ककुदि
'वं' मेदात्मने नमः - वाम अंसे
'शं' अस्थ्यात्मने नमः - हृदय से दाहिने हाथ के अंत तक
'षं' मज्जात्मने नमः - हृदय से बांये हाथ के अंत तक
'सं' शुक्रात्मने नमः - नाभि से दाहिने पैर के अंत तक
'हं' जीवात्मने नमः - नाभि से बायें पैर के अंत तक
'ळं' परमात्मने नमः - नाभि से हृदय तक
'क्षं' ज्ञानात्मने नमः - हृदय से मुख तक

सम्पूर्ण वर्ण माला (अं आं.....हं ळं क्षं) का उच्चारण करते हुए तीन या आठ वार समस्त शरीर में व्यापक न्यास करें।

वक्ष्यमाण विधि से प्राणायाम करके गुरुपादुका मंत्र से ब्रह्म रन्ध्र में गुरु पंक्ति का और **'स्व-पादुका'** मन्त्र से मूलाधार में अपने आत्मदेव का पूजन करें।

कुछ क्षणों तक स्वयं को सारे प्रपञ्च से मुक्त शिव-स्वरूप समझते हुए ब्रह्मानन्द की अनुभूति करें। इसके बाद भगवती की पूजा में अग्रसर हों।

विनियोग : **ॐ अस्य महात्रिपुरसुन्दरी मन्त्रस्य श्री दक्षिणामूर्तिः ऋषि। पंक्तिश्च्छन्दः। श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवता। वाग्भव बीजम्। कामराजं कीलकं। तार्तीयं शक्तिः। पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

विनियोग का जल पृथ्वी पर छोड़कर ऋष्यादि न्यास करें -

श्री दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः - शिरसि। पंक्तिश्चछन्दसे नमः - मुखे।

श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः - हृदि। वाग्भवाय बीजाय नमः - गुह्ये। तार्तीयाय शक्तये नमः - पादयोः। कामराजाय कीलकाय नमः - नाभौ। पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

ऋष्यादि न्यास के बाद क्रमशः वाग्देवता न्यास, करांग न्यास और षडंग न्यास करने के वाद मूल मंत्र से व्यापक न्यास करके भगवती का ध्यान और मानस पूजन करें। यथा-

वाग्देवता न्यास

(१) अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः रव्लूं वशिनी वाग्देवतायै नमः - ब्रह्मरंध्रे।

(२) कं खं गं घं ङं कलह्रीं कामेश्वरी वाग् देवतायै नमः - ललाटे।

(३) चं छं जं झं ञं नव्लीं मोदिनी वाग्देवतायै नमः - भ्रू मध्ये

(४) टं ठं डं ढं णं य्व्लूं विमला वाग्देवतायै नमः - कण्ठे

(५) तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः - हृदये

(६) पं फं बं भं मं हसलवयूं जयिनी वाग्देवतायै नमः - नाभौ

(७) यं रं लं वं झम्रयूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः - मूलाधारे

(८) शं षं सं हं ळं क्षं क्षम्रीं कौलिनी वाग्देवतायै नमः - सर्वाङ्गे

करांङ्ग न्यास - **अं मध्यमाभ्यां नमः। आं अनामिकाभ्यां नमः। सौः कनिष्ठाभ्यां नमः। अः - अंगुष्ठाभ्यां नमः। आं तर्जनीभ्यां नमः। सौः करतलपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्ग न्यास - **ऐं - हृदयाय नमः। क्लीं - शिरसे स्वाहा। सौः - शिखायै वषट्। ऐं - कवचाय हुं। क्लीं - नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः - अस्त्राय फट्।**

इसके बाद 'मूल मन्त्र' से तीन बार व्यापक न्यास करके ध्यान करें -

बालार्क मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरांश्चापं, धारयन्तीं शिवां भजे॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करें। यथा-

मानसोपचार पूजन

(१) मूल मन्त्र - 'लं' पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुरी पादुकाभ्यां नमः - विलेपयामि नमः। (गन्ध मुद्रा से)

(२) मूल मन्त्र - 'हं' आकाश तत्त्वात्मकं पुष्पं कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुरी पादुकाभ्यां नमः - समर्पयामि नमः। (पुष्प मुद्रा से)

(३) मूल मन्त्र - 'यं' वायु तत्त्वात्मकं धूपं कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुरी पादुकाभ्यां नमः - आघ्रापयामि नमः। (धूप मुद्रा से)

(४) मूल मन्त्र - 'रं' वह्नि तत्त्वात्मकं दीपं कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुरी पादुकाभ्यां नमः - दर्शयामि नमः। (दीप मुद्रा से)

(५) मूल मन्त्र - 'वं' सुधा तत्त्वात्मकं नैवेद्यं कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुरी पादुकाभ्यां नमः - निवेदयामि नमः। (नैवेद्य मुद्रा से)

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

(६) मूल मन्त्र - 'सं' सर्वोपचार सहितं ताम्बूलं कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुरी पादुकाभ्यां नमः - समर्पयामि नमः। (सर्वोपचार मुद्रा से)

मानस-पूजन में उपर्युक्त उपचार तत्-तत् मुद्राओं से प्रदान किये जाते हैं। यथा दोनों हाथों की

(१) अधोमुखी कनिष्ठा और अंगुष्ठ - गंध मुद्रा

(२) अधोमुखी तर्जनी और अंगुष्ठ - पुष्प मुद्रा

(३) ऊर्ध्वमुखी तर्जनी और अंगुष्ठ - धूप मुद्रा

(४) ऊर्ध्वमुखी मध्यमा और अंगुष्ठ - दीप मुद्रा

(५) ऊर्ध्वमुखी अनामा और अंगुष्ठ - नैवेद्य मुद्रा

(६) ऊर्ध्वमुखी सभी अंगुलियां और अंगुष्ठ - सर्वोपचार

मानस-पूजन करने के बाद 'अक्ष-माला' से मूल मन्त्र का 'अष्टोत्तर शत' (१०८) जप करें। अक्ष-माला से मन्त्र-जप की विधि इस प्रकार है-

सर्वप्रथम यह भावना करें कि अकार से 'क्ष' कार पर्यन्त ५० वर्णों की यह माला मेरुदण्ड में चित्रणी नाड़ी में गुंथी हुई है। 'क्ष' कार इस माला का 'सुमेरु' और 'अ' कार जप-प्रारम्भ करने का प्रथम मनका (गुरिया) है। तन्त्र-ग्रंथ में इस माला का ध्यान और नमन इस प्रकार बताया गया है :-

अन्तर्विद्रुमभासमान भुजगां
सुप्तोत्थ वर्णोज्ज्वलाम्।
आरोहमवरोहिकां शतमयीं
वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्॥
साक्षात् ब्रह्ममयीं 'क्ष' मेरु सहितां
श्रीमातृकाक्षावलीम्।
विद्यां नौमि समस्त मन्त्र जननीम्,
ज्ञानैक दीपांकुराम्॥

'अक्ष-माला' का इस प्रकार ध्यान और नमन करके मन ही मन 'क्षं नमः' का उच्चारण कर सुमेरु-रूपं क्षकार का नमन करें। इसके बाद मन्त्र-जप प्रारम्भ करें। यथा-

'अं' के बाद मूल मन्त्र (यथा - अं ऐं क्लीं सौः)

फिर 'आं' के बाद मूल मन्त्र (यथा - आं ऐं क्लीं सौः)

इस प्रकार प्रत्येक सानुस्वार वर्ण के साथ मूल मंत्र की योजना करके 'ळ' कार पर्यन्त सभी वर्णों के साथ मन्त्र जप करें। 'क्ष' कार का केवल उच्चारण करें। 'क्ष' कार के साथ मंत्र योग नहीं करें। यह अनुलोम क्रम से मंत्र का 50 बार जप हुआ। इसके बाद विलोम-क्रम से जप करें।

विलोम क्रम - मंत्र के अन्त में 'ळं' इत्यादि की योजना करते हुए 'आं अं' तक जप करें। यथा ऐं क्लीं सौः ळं। ऐं क्लीं सौः हं।.......ऐ क्लीं सौः आं। ऐं क्लीं सौः अं। इस तरह ५०-५० के अनुलोम विलोम क्रम से मंत्र का १०० बार जप हुआ।

इसके बाद वर्णमाला के आठ वर्गों के अंतिम वर्ण (अर्थात् अः ङं ञं णं नं मं वं ळं) अथवा मतान्तर से इन वर्गों के प्रथम वर्ण (अर्थात् अ, क, च, ट, त, प , य और श) की मंत्र के प्रारम्भ में योजना करके जप करने से ८ बार मन्त्र का जप हुआ। इस तरह १००+८-१०८ बार मंत्र का जप करके भगवती को निम्नलिखित मंत्र से जप समर्पित करें -

ॐ। सर्वान्तरात्मनिलये, स्वान्तर्ज्योतिःस्वरूपिणी।
गृहाणान्तर्जपं मातः श्री सुन्दरी नमोऽस्तुते।।

विमर्श- इस सम्बन्ध मे देखें 'महानिर्वाण तंत्र' पञ्चम उल्लास के श्लोक १५३ से १५६ तथा इन श्लोकों की व्याख्या।

मानसिक हवन

अक्ष-माला से मानसिक जप करने के बाद मानसिक हवन करें। एतदर्थ मूलाधार चक्र में आत्मा-अन्तरात्मा-परमात्मा एवं ज्ञानात्मा- इन आत्म चतुष्टय से निर्मित चतुरस्र (चौकोर) कुण्ड की भावना करें जिसमें परम ज्ञानाग्नि प्रज्जवलित है। इस अग्नि में निम्न मंत्रों से आहूतियां प्रदान करें -

(१) मूल मन्त्र -

नाभौ चैतन्य रूपाग्नौ हविषा मनसा स्रुचा।
ज्ञान प्रदीप्तते नित्यं, अक्षवृत्तिर्जुहोम्यहम्।।
श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

(२) मूल मन्त्र -

धर्माधर्म हविर्दीप्ते आत्माग्नौमनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यं, ब्रह्मवृत्तिर्जुहोम्यहम्।।
श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

(३) मूल मन्त्र -

प्रकाशाकाश हस्ताभ्यां अवलंव्योन्मनी स्रुचा।
धर्माधर्म कला स्नेह, पूर्णमग्नौ जुहोम्यहम्।।
श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

(४) मूल मन्त्र -

अन्तर्निरन्तर निरिन्धन मेध माने
मायान्धकार परिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्मिंश्चिदद्भुत मरीचि विकासभूमौ
विश्वं जुहोमि वसुधादि शिवावसानम्।।
श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

(५) मूल मन्त्र -

इदन्ता पात्र भरितं, अहन्ता परमामृतम्।
पूर्णाहुति मये वह्नौ, पूर्ण होमं जुहोम्यहम्।।
श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

इस तरह मानसिक हवन करके पुनः भगवती का संक्षिप्त अर्चन एवं तत्समर्पण करके बहिर्पूजन करें।

बहिर्याग

बहिर्याग करने के लिए सर्वप्रथम शंख आदि पात्रों की स्थापना करें। यथा-

भगवती के सिंहासन के सामने भूमि पर अपने बायीं ओर जल से त्रिकोण गर्भित षट्कोण बनायें। 'मूल-मन्त्र' से षट्कोण का गन्धाक्षत से पूजन करके उस पर आधार (त्रिपादिका) स्थापित करें। **'मं अग्नि मण्डलाय दशकलात्मने नमः'** इस मंत्र से आधार पर अग्नि मण्डल का पूजन करें। अस्त्र मंत्र (फट्) से शंख को धोकर उसे आधार (त्रिपादिका) पर स्थापित करें।

'अं' अर्क मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः' इस मंत्र से शंख पर सूर्य मण्डल का रक्त-चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।

'मूल मंत्र' का जप करते हुए उक्त शंख में शुद्ध जल भरें। **'उं' सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः'** से शंखस्थ जल में चन्द्र मण्डल का पूजन करें। तत्पश्चात् उस जल में अंकुश मुद्रा से सूर्य-मण्डल से गंगा आदि सरित् देवताओं का आव्हान करें-

ॐ। गंगे च यमुने चैव, गोदावरि, सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरि, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

गंगा आदि सरित् देवताओं का आव्हान करके गंध पुष्प से उनका पूजन करें।

'हुं' मंत्र से अवगुण्ठन करके उक्त जल में **'षडङ्ग-मंत्रों'** से षडङ्ग पूजन करें।

धेनु मुद्रा दिखाकर उक्त जल पर मूल मंत्र का आठ बार जप करें। शंख से कुछ जल लेकर प्रोक्षणी पात्र में डालें। उसका जल अपने शरीर और पूजा सामग्री पर छिड़कें।

अन्य पात्र - शंख के दाहिनी ओर इसी रीति से पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय, मधुपर्क आदि पात्रों की स्थापना करें। इन पात्रों में शंख का जल एवं गन्ध-पुष्प आदि सहित अन्य विहित द्रव्य डालें।

इस तरह पात्रों की स्थापना हो जाने के बाद सामने रखे हुए सिंहासन अथवा चौकी पर 'श्रीयंत्र' को स्थापित करें। सिंहासन या चौकी पर श्रीयन्त्र को सीधे नही रखा जाता। चांदी की थाली में पूजन यंत्र बनाकर उस पर पुष्प रखें। फिर इन पुष्पों पर 'श्रीयंत्र' को विराजित करके आसन-पूजन प्रारम्भ करें।

आसन-पूजन - **ॐ आधार शक्तये नमः। ॐ प्रकृतये नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ रसाम्बुधये नमः। ॐ रत्न द्वीपाय नमः। ॐ नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ रत्न मण्डपाय नमः। ॐ कल्प वृक्षाय नमः। ॐ मणि वेदिकायै नमः। ॐ रत्न सिंहासनाय नमः।**

रत्न सिंहासन पर पीठ शक्तियों का अर्चन करें। यथा-

ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ अम्बिकायै नमः। ॐ इच्छायै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ कुब्जिकायै नमः।

ॐ ऋद्ध्यै नमः। ॐ विषघ्निकायै नमः। ॐ दूतर्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः।

मध्य में - **ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः।**

इसके बाद त्रिखण्डा-मुद्रा बनाकर हाथों में पुष्प लें। "**हस्रैं हसकलरीं हसौः**" इस मंत्र से देवी की मूर्ति की कल्पना करके तद्गत चित्त होकर भगवती का ध्यान करें। यथा-

बालार्क मण्डलाभासां, चतुर्बाहु त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरांश्चापं, धारयन्तीं शिवां भजे॥

इस प्रकार ध्यान कर प्रवाहित नासापुट से हाथ में रखे पुष्पों में देवी के तेज पुंज का आव्हान करें। फिर-

ॐ॥ महापद्मवनान्तःस्थे, कारणानन्द विग्रहे।
सर्वभूत हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥

इस मन्त्र से 'श्रीयंत्र' के वैदन्व चक्र पर पुष्पाञ्जलि के साथ उक्त दैवी-तेज को स्थापित कर दें। तदन्तर आवाहन आदि क्रियायें सम्पादित करें। यथा-

'मूलं' -

कामेश्वर शिव सहिते श्री महात्रिपुरसुन्दरि देवी!

इहागच्छ, इहागच्छ	- आवाहनी मुद्रा
इह तिष्ठ, इह तिष्ठ	- स्थापिनी मुद्रा
इह सन्निधेहि, इह सन्निधेहि	- सन्निधायिनी मुद्रा
इह सन्निरुद्धस्व	- सन्निरोधिनी मुद्रा
इह अभिमुखी भव	- सम्मुखीकरण मुद्रा
अवगुण्ठिता भव	- अवगुण्ठनी मुद्रा

मम सर्वोपचार सहितां पूजां गृहाण

इस प्रकार आवाहन आदि क्रिया संपादित करके सकलीकरण करें यथा

ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः-शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुम्। क्लीं नेत्र त्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

मूलं - **कामेश्वर शिव सहिते श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवि! सकली कृता भव।**

'शंख' का जल तीन बार 'श्रीयंत्र' पर डालकर 'परमीकरण' की मुद्रा दिखायें। इसके बाद प्राण-प्रतिष्ठा करें-

मूल मन्त्र

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं
श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः प्राणाः इह प्राणाः
आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं
श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः जीवः इह जीवः
आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं
श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहं श्री महात्रिपुरसुन्दरी देवतायाः त्वङ् मनः चक्षुः श्रोत घ्राण वाक् पाणि पाद प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा

उक्त मंत्र चतुष्टय का तीन बार जप करके यंत्र में देवता की प्राण प्रतिष्ठा करें।

तत्पश्चात पुष्पांजलि देकर स्वागत करें-

मूलं।। यस्याः दर्शनमिच्छन्ति
देवाः स्वाभीष्ट सिद्धये।
तस्मै ते परमेशानि
स्वागतं स्वागतं च ते।।

इस प्रकार भगवती का सपरिवार स्वागत करके यथा-वैभव अर्चन करें। यथा-

पूजन

(१) मूलं - **एतत्पाद्यं कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः**
इस मंत्र से भगवती के पैर पखारने के लिए जल समर्पित करें।

(२) मूलं - **एषोऽर्घ्यं कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै स्वाहा**
मुंह धोने के लिए अर्घ्य प्रदान करने के बाद आचमनीय प्रदान करें।

(३) मूलं - **इदं आचमनीयं श्री कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै समर्पयामि नमः।

(४) मूलं - **एषः मधुपर्कः श्री कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै निवेदयामि नमः।

(५) मूलं - **इदं पुनराचमनीयं श्री कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै समर्पयामि नमः।

(६) मूलं - **इदं स्नानीयं श्री कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै समर्पयामि नमः।
गंगा सरस्वती रेवा, पयोष्णी नर्मदा जलैः
स्नापितो मया देवि! तथा शान्तिं प्रयच्छ मे।।
स्नानांते पुनराचमनीयं समर्पयामि।

(७) मूलं - **इमानि वस्त्राणि आभूषणानि च श्री कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै समर्पयामि नमः।
इदं पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः।

वस्त्र आभूषण और पुनराचमीनय प्रदान करने के बाद गन्ध प्रदान करें

(८) मूलं - **इदं सुगन्ध द्रव्यं श्री कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै समर्पयामि नमः।
अनामा और मध्यमा से चन्दन का लेप करें।

मूलं - **इमानि पुष्पाणि बिल्व पत्राणि च कामेश्वर शिव सहितायै**
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै वौषट्।

इस मंत्र का उच्चारण करके भगवती को मध्यमा और अनामा से पुष्प और

बेलपत्र समर्पित करें।

धूप- धूप पात्र को देवी के सामने रखकर जल से प्रोक्षण करें। उस पर अंगार रखकर उसमें धूप डालें। उसके चतुर्दिक जल घुमायें।

''जय ध्वनि मन्त्र मातः स्वाहाः'' - इस मंत्र से घण्टे की पूजा करें।

बांये हाथ से घण्टा बजाते हुए दाहिने हाथ में धूप पात्र लेकर निम्न मंत्र पढ़ते हुए धूप प्रदान करें -

ॐ॥ वनस्पति रसोद्भूतः गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

मूलं- **श्री कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै**
धूपं आघ्रापयामि नमः।

धूप पात्र को दस वार अर्ध चन्द्राकार घुमाकर भगवती के बायीं ओर रख दें।

धूपान्ते पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः।

दीप - कर्पूर सुवासित घृत पूरित दीप को सामने रखकर जलायें। जल से प्रोक्षण करें। बांये हाथ से घण्टा बजाते हुए दीप-पात्र को दाहिने हाथ में लेकर दीप दिखायें-

सुप्रकाशो महद्दीपः सर्वतः तिमिरापहः
सवाह्याभ्यन्तर ज्योतिः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै दीपं दर्शयामि नमः।**

दीपक को दस वार आपाद-मस्तक घुमाकर भगवती के दाहिने ओर मण्डल वनाकर आधार पर रख दें।

'मूलं' दीपान्ते पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः।

विशेष ध्यातव्य - धूप पात्र और दीप पात्र को सीधे भूमि पर नहीं रखा जाता। उन्हें आधार पर ही रखा जाता है।

भगवती को तीन बार पुष्पाञ्जलि समर्पित करने के बाद नैवेद्य समर्पित करें।

नैवेद्य -अपने आसन और श्रीयंत्र के मध्य की भूमि को स्वच्छ करके सामान्य-अर्घ्य के जल से प्रोक्षण करें। 'मण्डल' वनाकर उस पर 'आधार' स्थापित करें। आधार का प्रोक्षण करके उस पर विविध व्यञ्जन समन्वित नैवेद्य का थाल रखें।

'फट्' मन्त्र से उसका अभ्युक्षण करें। 'हुम्' से अवगुण्ठन और 'फट्' मन्त्र से उसकी संरक्षा करें। सुधा बीज (वं) से धेनु मुद्रा दिखाकर उसे अमृतमय करें। 'सात' बार मूल-मंत्र का जप करके उसे अभिमन्त्रित करें।

दाहिने हाथ में शुद्ध जल-पात्र और बांये हाथ की अंगुलियों से ग्रास (नैवेद्य) मुद्रा दिखाते हुए नैवेद्य समर्पित करें-

ॐ॥ सत्पात्र सिद्धं सुहविः विविधानेकभक्षणम्।
नैवेद्यं निवेदयामि, सानुग्रहाय गृहाण तत्॥

मूलं - श्री कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नैवेद्यं निवेदयामि।
हे शिवे! हविरिदं जुषाण।

जल छोड़कर नैवेद्य प्रदान करें। इसके बाद

(१) ॐ प्राणाय स्वाहा (२) अपानाय स्वाहा (३) ॐ व्यानाय स्वाहा (४) ॐ उदानाय स्वाहा (५) समानाय स्वाहा

यवनिका वनकर यह भावना करें कि भगवती प्रमुदित मन से नैवेद्य ग्रहण कर रही है।

कुछ क्षणों के बाद यह मानकर कि भगवती भोजन कर चुकी है, उन्हें पानीय, आचमनीय आदि प्रदान करें। यथा–

मूलं- **श्री कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः**

- पानीयं समर्पयामि नमः।

- पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः।

- गण्डूषार्थं जलं समर्पयामि नमः।

- हस्त प्रक्षालनाय चन्दन चर्चित जलं समर्पयामि नमः।

भगवती का हाथ धुलाकर गत सार नैवेद्य को उठकार ईशान कोण में रख दें। स्थान को साफ करके किसी पात्र में प्रक्षालित ऋतुफल रखकर उसे धेनु मुद्रा दिखायें। तदन्तर फल समर्पित करें–

मूलं - **एतानि ऋतु फलानि श्री कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै समर्पयामि नमः।**

फल समर्पण करने के बाद पुनः आचमन कराकर ताम्बूल प्रदान करें।

खदिर (कत्था) लौंग इलायची और सुपारी गर्भित एवं कर्पूर सुवासित ताम्बूल वीटिका (बीडा) को सामान्य अर्घ्य के जल से प्रक्षालित एवं धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके बांये हाथ की तत्व मुद्रा से भगवती को समर्पित करें-

मूलं।। पुंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैः युतम्।
एला चूर्णादि संयुक्तं, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहितायै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः।**
ताम्बूलं समर्पयामि।

शंख के जल से तीन बार तर्पण एवं भगवती को पञ्च पुष्पांजलि (सिर, हृदय, मूलाधार, चरण एवं सर्वांग को) प्रदान करके 'आवरण पूजन' हेतु अनुमति मांगें-

आवरण पूजन

मूलं - **संविन्मये परे देवि! परामृत रसप्रिये**
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि, परिवारार्चनाय ते।।

पुष्पाञ्जलि देकर सर्वप्रथम षडंग पूजन करें-

ऐं हृदयाय नमः - अग्निकोण में
क्लीं शिरसे स्वाहा - ईशान कोण में
सौः शिखायै वषट् - नैऋत्य में
ऐं कवचाय हुम् - वायव्य में
क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् - मध्य में

सौः अस्त्राय फट् - चारों ओर

पुष्पाञ्जलि देकर मध्य त्रिकोण के ऊपर गुरु-पंक्ति का पूजन करें। यथा-

ऐं ह्रीं श्रीं गुरुभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं गुरु पादुकेभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं परम गुरुभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं परम गुरु पादुकेभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं परात्पर गुरुभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं परात्पर गुरु पादुकेभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठि गुरु पादुकेभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं आचार्येभ्यो नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं आचार्य पादुकेभ्यो नमः।

उपर्युक्त मंत्रों से गुरु-पंक्ति का पूजन-तर्पण करने के बाद भूपुर की प्रथम रेखा से आवरण शक्तियों का पूजन-तर्पण प्रारम्भ करें। दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से गन्धाक्षत लेकर पूजन और बांये हाथ के अंगूठे और अनामिका को जोड़कर तत्त्व मुद्रा से (फूल और शंख-जल से) तर्पण किया जाता है-

चतुरस्र की प्रथम रेखा पर

ऐं ह्रीं श्रीं अणिमाद्यष्ट सिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चतुरस्र की मध्य रेखा पर

ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मी आदि अष्ट देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चतुरस्र की अन्तिम रेखा पर

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्रा देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरा चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इसके बाद चक्रेश्वरी के सामने

अत्र त्रैलोक्य मोहन चतुरस्र चक्रे त्रिपुरा चक्रनायिकाधिष्ठते एताः अणिमाद्याः प्रकट योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलि देकर शंख का जल हाथ में लेकर-

ॐ॥ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

मूलं - कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी पादुकाभ्यां समर्पयामि नमः।

द्वितीयावरणार्चनम् -

षोडश कमल दल वाले सर्वाशा परिपूरक चक्र में-

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कामाकर्षिणी आदि षोडश नित्या कला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

चक्र के अग्र भाग में-

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेशी श्रीचक्र नायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्वाशा परिपूरके षोडश दल चक्रे त्रिपुरेशी चक्रनायिकाधिष्ठते एताः कामाकर्षिणी आदि गुप्त योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिता तर्पिताः सन्तु।

इस मन्त्र से अर्घ्य जल छोड़कर पूर्ववत् मूल देवता को समर्पण करें-

ॐ॥ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी**
श्रीपादुकाभ्यां समर्पयामि नमः।

तृतीयावरणार्चनम् -

अष्टदल चक्र में-

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्ग कुसुमाद्यष्ट देवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दरी चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्व संक्षोभ करे अष्ट दल चक्रे त्रिपुरसुन्दरी चक्रनायिकाधिष्ठते एताः अनंग कुसुमाद्या गुप्ततर योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

इस मंत्र से अर्घ्य जल छोड़कर पूर्ववत् मूल देवता को समर्पण करें-

ॐ॥ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी**
श्रीपादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

चतुर्थावरणार्चनम् -

चतुर्दशार चक्र में-

ऐं ह्रीं श्रीं सर्व संक्षोभिण्यादि चतुर्दश देवी
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में-

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरवासिनी चक्र नायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्व सौभाग्य दायके चतुर्दशार चक्रे त्रिपुरवासिनी चक्रनायिकाधिष्ठते एताः सर्व संक्षोभिण्यादि शक्तयः सम्प्रदाय योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः पूजिताः तर्पिता सन्तु।

अर्घ्य जल छोड़कर पूर्ववत् मूल-देवता को समर्पण करें-

ॐ॥ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम्।

मूलं - श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी
श्री पादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

पंचमावरणार्चनम् -

बहिर्दशार चक्र में-

ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धिप्रदादि देवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरा श्री चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्वार्थ साधके बहिर्दशार चक्रे त्रिपुराश्री चक्रनायिकाधिष्ठते एताः सर्वसिद्धि प्रदादि देव्याः कुल-कौलिनी योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

अर्घ्य जल छोड़कर मूल देवता को समर्पण करें-

ॐ॥ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।

मूलं - श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी
श्री पादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

षष्ठावरणार्चनम् -

अन्तर्दशार चक्र में-

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञादि देवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर-मालिनी चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्व रक्षाकरे अन्तर्दशार चक्रे त्रिपुर मालिनी चक्रनायिकाधिष्ठते एताः सर्वाज्ञाद्या देव्याः निगर्भ योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

अर्घ्य जल छोड़कर मूल देवता को समर्पण करें-

ॐ॥ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।

मूलं - श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी
श्रीपादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

सप्तमावरणार्चनम् -

सर्वरोगहर अष्टार चक्र में-

ऐं ह्रीं श्रीं वशिन्याद्यष्ट वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

चक्र के अग्र भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरा-सिद्धा चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्वरोग हरे अष्टार चक्रे त्रिपुरा-सिद्धा चक्रनायिकाधिष्ठते एताः वशिन्यादि रहस्य योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

अर्घ्य जल छोड़कर मूल देवता को समर्पण करें-

ॐ।। अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी**
श्रीपादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

अष्टमावरणार्चनम् -

अन्तराले त्र्यस्रे (मूल त्रिकोण) में मूल मंत्र से षडंगों की पूजा करें। इसके बाद -

अग्र कोण में -

ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षिण कोण में -

ऐं ह्रीं श्रीं वज्रेश्वरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वाम कोण में -

ऐं ह्रीं श्रीं भग मालिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराम्बिका चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्व सिद्धि प्रदे त्र्यस्रचक्रे बाणचाप-पाशांकुश विभूषितान्तराले त्रिपुराम्बिका चक्रनायिकाधिष्ठते एताः कामेश्वर्याद्याः रहस्यातिरहस्य योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

अर्घ्य जल छोड़कर -

ॐ।। अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी**
श्री पादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

नवमावरणार्चनम् -

बिन्दु के मध्य में-

ऐं ह्रीं श्रीं श्री महात्रिपुरसुन्दरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

उपर्युक्त मन्त्र से तीन बार पूजन-तर्पण करके

बिन्दु के वाम भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं योनि-मुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्र के अग्र भाग में -

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर-भैरवी चक्रनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरी के समक्ष-

अत्र सर्वानन्द मये परं ब्रह्मस्वरूपिणी वैन्दव चक्रे त्रिपुर-भैरवी चक्रनायिकाधिष्ठिते एताः सर्व चक्रेश्वरी योगिन्यः स-मुद्राः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

अर्घ्य जल छोड़कर -

ॐ।। अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।

मूलं - **श्री कामेश्वर शिव सहिता श्री महात्रिपुर सुन्दरी**
श्री पादुकाभ्यां समर्पणमस्तु।

दारिद्र्यध्वंसिनि अर्चन

'श्रीयंत्र' पर भगवती ललिता का यथा-विधि संहार-क्रम से अर्चन करने के बाद दरिद्रता से पीड़ित आराधक इस महा-अभिशाप से निवृत्ति के लिए भगवती ललिता का दारिद्र्य-ध्वंसिनी पूजा श्रीयंत्र पर करें।

एतदर्थ आराधक भगवती ललिता का भगवती महालक्ष्मी के रूप में ध्यान करें। यथा-

हार नूपुर संयुक्ता कमल-द्वय धारिणी।
लक्ष्मीः पर शिवमयी शुद्ध जाम्बूनद प्रभा।।
तेजो रूपा च कमले वसति विश्वमोहिनी।
सर्व भूषोज्वलाङ्गी च बीजपूरधरा तथा।।

ध्यान करने के बाद भगवती का मूल बिन्दु पर पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार अर्चन करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं विलेपयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपं आघ्रापयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

आचमन कराकर पानी प्रदान करें।

इसके बाद ऋतुफल और ताम्बूल प्रदान करके पुष्पांजलि दें। भगवती से उनकी आवरण शक्तियों के अर्चन की अनुमति मांगें-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
संविन्मये परे देवि, परामृत रस प्रिये।
अनुज्ञां मे रमे देहि, परिवारार्चनाय ते।।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

प्रथमावरणे - बिन्दवे

भगवती से अनुमति प्राप्त करने के बाद आवरण अर्चन प्रारम्भ करें। यह अर्चन सृष्टि क्रम से किया जाता है। अतः वैन्दव चक्र पर 'प्रथमावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि प्रदान करके प्रथम आवरण की बीस शक्तियों का पूजन तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आद्याशक्तये नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलजनन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलशधारिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुवामांगसंस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलालयायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्सौभाग्यदायिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भार्गव्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनातन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामफलावाप्ति साधनैक सुखाव्हायै नमः।
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरण्यवर्णायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुवर्णललितस्रजायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तसम्पत्सुखदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अखिल सौभाग्यदायिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्त कल्याणकार्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिप्रियायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विज्ञानसम्पत्सुखदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अश्वपूर्वायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरणमय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः प्रथमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

द्वितीय-आवरण अर्चन

'द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर **'त्रिकोण'** चक्र की बीस देवियों का पूजन-तर्पण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विचिवागभूतिकर्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रथमध्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनोहरायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्तिनादप्रमोदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनन्तसौभाग्यदायिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वभूतान्तरस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णप्राकार मध्यगायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तभूतेश्वर्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वरूपायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रभामय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दारिद्र्यदुःखतमो हंत्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दीनार्तिविच्छेद दक्षायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कृपाकलितलोचनायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रणतस्वान्तशोकघ्न्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शरणागतरक्षणायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मसंस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमनीयगुणाश्रयायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥२॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः द्वितीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

तृतीय-आवरण अर्चन

'तृतीयावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर **'अष्टार चक्र'** की क्षान्ति आदि देवताओं का पूजन-तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षान्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दान्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुरितक्षयकारिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शशिशेखर संस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धन-धान्यसमृद्धिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शक्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यपुष्टायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रजनीकरसोदरायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कर्षिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भवसागरतारिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मत्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्ध्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धृत्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मधुसूदनवल्लभायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्ट्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरण्यमालायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुभलक्षणलक्षितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अतिदुर्गति हन्त्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥२॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः तृतीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

चतुर्थ आवरण अर्चन

'चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर 'अन्तर्दशार चक्र' में वर सद्गति दायिनी आदि बीस शक्तियों का पूजन-तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वरसद्गतिदायिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिवि-देवगणाराध्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुवनार्तिविनाशिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्करिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्ट्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धरणीधरवल्लभायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दारिद्र्यदुःखहन्त्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भयविध्वंसिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विष्णुवक्षःस्थलगायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अशेषसुविभूतिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्षणांग्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्षितांग्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मासनार्चितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सम्पत्कर्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देवसंघाभिपूजितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भद्रायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भाग्यरूपायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥
पुष्पांजलि देकर : अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥२॥
सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः चतुर्थावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

पंचम आवरण अर्चन

'पंचमावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर 'बहिर्दशार चक्र' में नित्या आदि देवताओं का पूजन-तर्पण करें। यथा-
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्मलबुद्धिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वभूतस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नगर्भान्तरस्थितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रम्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुद्धायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्तायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्तिमद्भासितांगकायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसौख्यप्रदा देव्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देव्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तौघाभयदायिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्वेतद्वीपकृतावासायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जगन्मात्रे नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जगन्मय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नगर्भस्थितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौम्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षीराम्बुधिकृतालयायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रसन्नहृदयायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परिपूर्णायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥
पुष्पांजलि देकर : अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥२॥
सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः पञ्चमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

षष्ठावरण अर्चन

'षष्ठावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर 'चतुर्दशार चक्र' में हिरण्यमयी आदि देवियों का पूजन-तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरणमय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वसुन्धरायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधरायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वसुदोग्ध्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कृपामय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुप्रियायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नगर्भायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तफलदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रसातलगतायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुव्रतायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिप्रियायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धरणीगर्भसंस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समुन्नतमुख्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तपुरसंस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परिपूर्णमनोरथायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं करुणारसनिःष्यन्दनेत्रद्वयविलासिन्यै नमः।
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वराजगृहावासायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुणान्वितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बैकुण्ठनगरस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्टमावरणार्चनम्॥२॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः षष्टमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

सप्तम आवरण - अर्चन

'सप्तमावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर 'अष्टदल चक्र' में क्षीर सागर कन्यका आदि देवियों का पूजन-तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षीरसागरकन्याकायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योगिहृत्पद्मसंस्थायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्पवल्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दयावत्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तचिन्तामण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आदिमायायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्दिरायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निराकारायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साकारायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्माण्डचयधारिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एकनाथायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आद्यालक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अज्ञानहन्त्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुणातिगायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रज्ञानलोचनायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अशेषवाग्जाड्यमलहारिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुस्पष्टवाक्प्रदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पद्विराजितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रभासुभगायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥२॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः सप्तमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

अष्टम आवरण अर्चन

'अष्टमावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर **'षोडश दल चक्र'** में लावण्य सुभगा आदि देवियों का पूजन-तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लावण्यसुभगायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दोग्ध्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णप्रदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तविघ्नौघहंत्र्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भोगदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विचक्षणायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देवाधिनाथवन्द्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दीनपोषणतत्परायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मांगल्यबीजायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महिमायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निधिरूपिण्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनन्तगायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आद्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आदिलक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महासिद्धलक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजलक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यलक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुश्रियै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मंगलदेवतायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टावरणार्चनम्॥२॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः अष्टमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

नवम आवरण अर्चन

'नवमावरण देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर 'भूपुर चक्र' में 'मुक्तिदा' आदि देवियों का पूजन-तर्पण करें। यथा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सङ्गतिप्रदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कीर्तिदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुत्र-पौत्रविवर्धिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मासनायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मोरवे नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्माक्ष्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मसम्भवायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अश्वदाय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गोदाय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनदाय्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाधनायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सूर्यचन्द्राग्निसर्वाभायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जातवेदास्त्रसंस्थितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिग्गजेन्द्रसमाराध्यायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यभूषणभूषितायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्प्रदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिन्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥

पुष्पांजलि देकर : **अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥२॥

सामान्य अर्घ्य का जल लेकर समर्पित करें :

एताः नवमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तयः पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥

इस प्रकार आवरण पूजन करने के बाद भगवती को पुनः धूप-दीप-नैवेद्य समर्पित करें। यथा-

धूप - धूप को प्रज्जवलित करके निम्न मंत्र से धूप समर्पित करें -

ॐ॥ दशाङ्ग गुग्गुलं दिव्यं गवाज्य सितयान्वितम्।
कृष्णागरु युतं देवि! धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै महालक्ष्म्यै नमः।
धूपं आघ्रापयामि नमः।

दीप - दीप पात्र का 'फट्' से प्रोक्षण कर 'नमः' से उस पर फूल चढ़ाकर प्रज्जवलित करें और निम्न मंत्र से दीप दिखायें -

ॐ॥ आनन्दोभूत कार्पसि वर्तिराज्य समन्वितम्।
सकर्पूरञ्च देवेशि! दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै महालक्ष्म्यै नमः।
दीपं दर्शयामि नमः।

नैवेद्य - अर्चन यंत्र के आगे चतुरस्र मण्डल बनायें। उस पर लाल फूल चढ़ायें। आधार स्थापित करें। उस पर नैवेद्य पात्र रखें। 'फट्' मन्त्र पढ़कर चक्रमुद्रा से संरक्षण करें। 'ॐ ह्रीं नमः' इस मंत्र को पढ़कर सामान्य अर्घ्य के जल से उसका प्रोक्षण करें। दाहिने हाथ के ऊपर बांया हाथ रखें। इस मुद्रा से नैवेद्य को ढककर वायु बीज 'यं' का १६ बार जप करें। इससे नैवेद्य के दोषों का शोषण हुआ। बायें हाथ पर दाहिना हाथ रखकर अग्नि बीज 'रं' का जप कर नैवेद्य के दोषों का 'दहन' करें। बांयें करतल में अमृत बीज 'वं' का जप करके नैवेद्य का अमृतीकरण करें। धेनु मुद्रा दिखायें। 'श्रीं' बीज से उसे अभिमंत्रित करें। बांये हाथ के अंगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करके निम्न मंत्र पढ़ते हुए नैवेद्य समर्पित करें -

लेह्य चोष्य भक्ष्य भोजन नाना पक्वान्न संयुतम्।
पायसापूप वटका दध्योदन सितान्वितम्॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

पर्पटा वाटिका तद्वन्नाना संधान संयुतम्।
मोदकानेकजातीया नाना शाक समन्वितम्॥
दुग्धाज्य सितया युक्तं, शुद्ध कासार संयुतम्।
कट्वम्ल मधुरादिभिः नाना स्वादु समन्वितम्॥
समानीतं मया भक्त्या नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

नैवेद्य समर्पित करने के बाद **'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'** - इस मंत्र से आचमन प्रदान करके पञ्च ग्रास मुद्रायें दिखायें। यथा-

ॐ प्राणाय स्वाहा - कनिष्ठा, अनामा, अंगुष्ठ
ॐ अपानाय स्वाहा - अंगुष्ठ, मध्यमा, तर्जनी
ॐ व्यानाय स्वाहा - अंगुष्ठ, अनामा, मध्यमा
ॐ उदानाय स्वाहा - अंगुष्ठ, अनामा, मध्यमा, तर्जनी
ॐ समानाय स्वाहा - सभी अंगुलियों से

भगवती महालक्ष्मी और अपने बीच यवनिका (पर्दा) पड़ी है, यह कल्पना करें। हाथ में फूल लेकर वन्दना करें-

ॐ॥ वामेषु स्वर्णपात्रीमनुपम परमान्ने पूर्णा दधाना
वत्येन स्वर्ण दर्वी निजजन हृदयाभीष्टदा धारयन्ती।
सिन्दूरारक्तवस्त्रा विविध मणि लसद् भूषणामिचकांगी।
तिष्ठन्ती प्रागस्ते मधुमद मुदिता अन्नपूर्णा सदैव
पंक्त्योपविष्टान् परितस्तु चक्र- शक्त्यास्त्रियालिंगित वाम भागान्
सर्वोपचारैः परिपूज्य भक्त्या तवाम्बिके पारिषदान्नमामि

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। श्रीपात्र के अमृत से तत्व मुद्रा से भगवती को तर्पण करायें-

ॐ ऐं आत्म तत्त्व व्यापिका श्री महालक्ष्मी तृप्यतु
ॐ क्लीं विद्या तत्त्व व्यापिका श्री महालक्ष्मी तृप्यतु
ॐ सौः शिव तत्त्व व्यापिका श्री महालक्ष्मी तृप्यतु
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वतत्व व्यापिका श्री महालक्ष्मी तृप्यतु

होम - इसके बाद यदि सुविधा और सामर्थ्य हो तो सुसंस्कृत हव्यवाह अग्नि में भगवती का आव्हान करके श्री सूक्त के 15 मन्त्रों से घृत आहूतियां डालकर हवन करें। यदि घृत की शुद्धता एवं पवित्रता में सन्देह हो तो हवन नहीं करें। यही श्रेयस्कर है।

पञ्च बलि विधान

तर्पण अथवा हवन के बाद श्रीविद्यार्चन की परम्परा के अनुसार बटुक आदि पांच बलि देवताओं को बलि प्रदान करें। यह बलि अनिवार्य है। इन देवताओं को प्रत्यक्ष बलि नहीं दिये जाने से सकाम अनुष्ठान का कोई फल नहीं मिलता। यहां बलि का अर्थ इन देवताओं को वही भोज्य-पदार्थ समर्पण है जो भोज्य पदार्थ भगवती को नैवेद्य के रूप में समर्पित किया गया है। यह बलि भगवती को अर्पित नैवेद्य से नहीं

दी जाती। 'बलि' के लिए अलग से भोज्य पदार्थ रखा जाता है। यद्यपि 'नैवेद्य' और 'बलि' का द्रव्य एक ही है मगर दोनों में अन्तर है। भगवती को समर्पित 'नैवेद्य' उनके प्रसाद के रूप में अनिवार्यतः ग्राह्य है, प्रसाद ग्रहण नहीं करने से प्रत्यवाय होता है, परन्तु बटुक आदि बलि देवताओं को समर्पित 'बलि' का द्रव्य किसी के लिए भी ग्राह्य नहीं है। वह सर्वथा अग्राह्य है। वह पूजा घर से बाहर 'उच्छिष्ट-भैरव' को अर्पित कराया जाता है।

१. बटुक बलि -

बलि समर्पित करने के लिए अर्चन-पीठ के ईशान कोण में भूमि पर '**ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं व्यापक मण्डलाय नमः**' मंत्र का जप करते हुए 'त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र' युक्त मण्डल बनायें। "**ॐ बटुकनाथ बलि मण्डलाय नमः**" से इस मण्डल का गंध पुष्प से पूजन करें। मण्डल पर आधार (तिपाई आदि) रखें। "**बटुक नाथ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि, इह सम्मुखी भव**" पढ़ते हुए आवाहनी आदि मुद्रायें दिखाकर वटुक नाथ का आव्हान करें।

"वां हृदयाय नमः। 'वीं' शिरसे स्वाहा। 'वूं' शिखायै वषट्। 'वैं' कवचाय हुम्। 'वौं' नेत्रत्रयाय वौषट्। 'वः' अस्त्राय फट्।"

इन षडङ्ग मंत्रों से सकलीकरण करें। आधार पर बलि-द्रव्य (पूड़ी, सब्जी, चावल, दाल, वड़ा आदि यथा-उपलब्ध भोजन-द्रव्य तथा मिठाई) रखकर '**ॐ बटुकनाथ बलि द्रव्याय नमः**' से उसका पूजन करें। बलि-पात्र पर 'घी' में भीगी हुई फूल बत्ती रखकर उसे जलायें। बांये हाथ की 'तत्त्व मुद्रा' से बलि पात्र (यदि बलिपात्र स्थापित नहीं किया है तो श्रीपात्र/विशेषार्घ्य) के अमृत की बूंदें दीपक की लौ पर इस तरह टपकायें कि वह बुझने न पाये। यह बलि समर्पण की प्रक्रिया है। बलि समर्पित करते समय यह मंत्र पढ़ें -

ॐ ॐ ॐ एहिं एहि देवी पुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर पिंगल त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान् नाशय नाशय इमां पूजां सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एषः बलिः वं बटुकाय नमः।

बलि प्रदान करने के बाद निम्न मंत्र से पुष्पाञ्जलि दें-

ॐ॥ बलिदानेन संतुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिदः।
रक्षां करोतु मे नित्यं, भूत वेताल सेवितः॥

२. योगिनी बलि -

पीठ के आग्नेय कोण में पूर्वोक्त विधि से मण्डल आदि का निर्माण और पूजन करके आधार रखें। योगिनियों का आव्हान आदि करें-

योगिनी गणाः। इहागच्छन्तु। इह तिष्ठन्तु। इह सन्निधाप्ता भवन्तु। इह सन्निरुध्दाप्ता भवन्तु। इह सम्मुखी भवन्तु।

इसके बाद '**यां यीं यूं यैं यौं यः**' की यथा क्रम योजना कर (यथा - यां हृदयाय नमः आदि) षडङ्ग मंत्रो से सकलीकरण करें। आधार पर बलि पात्र रखकर

'ॐ योगिनी बलि द्रव्याय नमः'' से उसका पूजन करें।

बांये हाथ की गज तुण्ड मुद्रा से बलि पात्र को पकड़कर दाहिने हाथ की तत्त्व मुद्रा से योगिनियों को पूर्ववत् फूल बत्ती की लौ पर बलि पात्र का अमृत समर्पित करते हुए निम्न मंत्र से बलि प्रदान करें-

ॐ ॐ ॐ ऊर्ध्वे ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन तले भूतले निष्कले वा। पाताले वाऽतले वा सलिल पवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा। प्रीताः देव्यः सदा नः शुभ बलि विधिना पान्तु वीरेन्द्र वन्द्याः।

ॐ यां योगिनीभ्यो हुं फट् सर्व वर्ण योगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा

इस तरह बलि देकर नाराच मुद्रा से पुष्पाञ्जलि दें-

ॐ॥ या काचिद् योगिनी रौद्री सौम्या घोरतरा परा
भूचरी खेचरी व्योमचरी प्रीतास्तु मे सदा।

३. क्षेत्रपाल बलि - पीठ के नैर्ऋत्य कोण में पूर्ववत् मण्डल बनाकर उसका पूजन करें। **'क्षेत्रपाल इहागच्छ, इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखो भव'** पढ़ते हुए और तत्-तत् मुद्रायें दिखाते हुए क्षेत्रपाल का आव्हान करें। **'क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः'** की योजना कर हृदय आदि षडङ्ग मंत्रों से सकलीकरण करें। आधार पर बलि युक्त बलिपात्र रखकर उसमें फूल बत्ती रखकर जलायें। बांये हाथ की तर्जनी और अंगूठे से बलि पात्र को पकड़कर दाहिने हाथ से बलि पात्र का अमृत लें। फिर बायें हाथ की मुठ्ठी की तर्जनी से बलि पात्र का अमृत बत्ती की लौ पर धीरे-धीरे टपकाते हुए बलि प्रदान करें। बलि प्रदान करने का मंत्र है-

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान क्षेत्रपाल इहागच्छ, इमं धूप दीपादि सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय सिद्धिं मे प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि दें -

ॐ॥ अस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालस्य किंकरः।
प्रीतोऽयं बलि दानेन, शांति रक्षां करोतु मे॥

४. गणेश बलि- पीठ के वायव्य कोण में पूर्वोक्त विधि से मण्डल बनाकर उसकी पूजा करें। आधार रखें। गणपति का आव्हान करें- **ॐ गणपति इहागच्छ, इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि, इह सनिरुद्धस्व, इह सम्मुखो भव।** आव्हान करके **'गां गीं गूं गैं गौं गः'** की योजना करके षडङ्ग मंत्रों (यथा गां हृदयाय नमः आदि) से सकलीकरण एवं अमृतीकरण करें। बांये हाथ की मध्यमा अंगुली और अंगूठे से आधार पर रखे बलि पात्र का स्पर्श करें। फूल बत्ती की लौ पर बलि-पात्र का द्रव्य निम्न मंत्र पढ़ते हुए बांये हाथ के अंगूठे से टपकायें। बलि प्रदान करने का मंत्र है-

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एषः बलिः गं गणपतये नमः।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि दें-

ॐ॥ सर्वदा सर्व कार्याणि निर्विघ्नानि सुसाधय।
सन्निधिं कुरु मे नित्यं गणराज सशक्तित:॥

५. सर्वभूत बलि- पीठ की उत्तर दिशा में पूर्ववत् मण्डल बनाकर उसकी पूजा करें। आधार रखें। सर्वभूतों का आव्हान आदि करें-

सर्वभूत गणाः इहागच्छन्तु, इह तिष्ठन्तु, इह सन्निधाप्ता भवन्तु, इह सन्निरुद्धाप्ता भवन्तु, इह सम्मुखी भवन्तु

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः आदि की यथा क्रम योजना करके षडङ्ग मंत्रों (यथा ह्रां हृदयाय नमः आदि) से सकलीकरण और अमृतीकरण करके आधार पर बलि द्रव्य युक्त बलि-पात्र रखें। '**ॐ सर्वभूत बलि द्रव्याय नमः**' से उसका पूजन करें। फूल बत्ती जलाकर रखें। बांयें हाथ की सभी अंगुलियों से बलि पात्र का स्पर्श करें। दीपक की लौ पर बलि पात्र का अमृत डालते हुए निम्न मंत्र से बलि समर्पित करें।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न कृद्भ्यो सर्व भूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।
एषः बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः।
भूता ये विविधाकारा दिव्य भौमान्तरिक्षगाः।
पातालातल संस्थाश्च, शिव योगेन भाविताः॥
ध्रुवाद्या सत्य संधाश्च, इन्द्राद्याशा व्यवस्थिताः।
तृप्यन्तु प्रीत मनसो भूत्वा, गृहणन्तु इमां बलिं॥

पुष्पाञ्जलि देकर नमस्कार करें।

विसर्जन - इसके बाद बलि देवताओं का विसर्जन करें। "**सर्वाभ्यो बलि देवताभ्यो नमः**" इस मंत्र से पांचों मण्डलों का गन्धाक्षत से पूजन करें। तीन बार ताली बजाकर निम्न मंत्र से फूल देकर बलि देवताओं का विसर्जन करें।

बलिदानेन संतुष्टा क्षमध्वं बलि देवताः।
यथा सुखं विहरन्तु, यथेच्छा स्व दिशासु च॥

बलि प्रदान करने के बाद हाथों को अच्छी तरह धोकर अपने आसन पर बैठें। आचमन करें। भगवती को आचमन करायें और पानीय प्रदान करें।

सामान्य अर्घ्य का शुद्ध जल किसी पात्र में लेकर 'वं' बीज पढ़कर धेनु मुद्रा दिखायें। इस प्रकार उसे अमृत मय करके भगवती को निवेदित करें-

ॐ॥ सलिलं पावनं दिव्यं शीतलं सुमनोहरम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। पानीयं समर्पयामि नमः।

पानीय समर्पित करने के बाद भगवती का ध्यान करके भगवती से पूछें - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हे मातः! तृप्ता असि?**

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

'ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा' - इस मंत्र से आचमन करायें। नैवेद्य को गतसार मानते हुए उसे उठाकर नैऋत्य कोण में रख दें। उस स्थान को साफ करें। भगवती को हाथ धोने के लिए जल देकर उद्वर्तन के लिये गन्ध द्रव्य (चन्दन) प्रदान करें। इसके बाद ऋतुफल समर्पित करें।

इदं ऋतुफलं देवि! स्थापित पुरतः तव।
तेन मे सफला वाप्ति भवेद् जन्मनि जन्मनि॥

पुनः आचमन कराकर तांबूल प्रदान करें-

ॐ॥ एला लवंग कर्पूर मुक्ताचूर्ण समन्वितम्।
केतकी वासितैः शुद्धैः खदिरैः मृगनाभि युक्॥
नागवल्ली दलैः युक्तं शुद्ध पुंगी फलैः युतम्।
हेमपात्र समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै महालक्ष्म्यै नमः।
ताम्बूलं समर्पयामि॥

तत्पश्चात् भगवती को छत्र-चामर-गज-तुरग आदि राजसोपचार समर्पित करके दर्पण दिखायें।

इसके बाद लोकाचार विधि से आरती करें।

तत्पश्चात् मंत्र जप या श्री सूक्त आदि का पाठ करें। यदि वैदिक मंत्रों को पढ़ने का ज्ञान और अभ्यास नहीं हो तो 'श्री सूक्त' का पाठ नहीं करें। इन्द्र कृत लक्ष्मी स्तव का पाठ करें। पाठ आदि करने के बाद भगवती को पुनः आचमन कराकर पुष्पाञ्जलि दें।

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिः मया दत्ता, गृहाण परमेश्वरि॥

साष्टांग प्रणाम करके क्षमा याचना करें-

अपराधो भवत्येव साधकस्य पदे पदे।
कोऽपरः सहते लोके केवलं स्वामिनीं विना॥

इस प्रकार क्षमा याचना करके सामान्य अर्घ्य का जल किसी अन्य पात्र में लेकर समर्पण करें -

ॐ॥ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वम्
गृहाण एतदर्चनम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि।
त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

ॐ॥ इतः पूर्व प्राण बुद्धि देहाधर्माधिकारितो जागृत्-स्वप्न-सुषुप्ति दशाषु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पदाभ्यां उदरेण शिश्ना च यत् स्मृतं, यदुक्तं, यत्कृतं तत् सर्व ब्रह्मार्पणमस्तु। मा मदीयं सकलं महालक्ष्मी रूपिणी ब्रह्मणे समर्पये। स्वाहा॥

शंख पूरित जल को देवी के सिर पर तीन बार घुमाकर ईशान कोण में थोड़ा सा जल डाल दें।

विसर्जन

भगवती को प्रणाम करके श्रीचक्र में पूजित सभी देवताओं को यथा पूर्व भगवती में लीन हो जाने के लिए प्रार्थना करें-

रश्मिरूपा महादेव्यः चक्रे पूजित देवताः,
श्री सुन्दर्यङ्गलीनस्त सन्तुसर्वा शुभावहाः॥

यह भावना करते हुए कि भगवती की रश्मि रूपिणी सभी देवियां भगवती में विलीन होकर तद् रूप हो गई हैं, भगवती को पुष्पाञ्जलि दें।

'हे मातः! क्षमस्व' कहकर तीन बार ताली बजायें। भगवती के चरण कमलों में समर्पित पुष्पों में से एक पुष्प संहार मुद्रा से उठाकर विसर्जन मन्त्र पढ़े-

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं सुरेश्वरि
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्॥

उस फूल को सिर पर रखकर भगवती को शिरस्थ सहस्रदल कमल में प्रतिष्ठित करें। **'ऐं हृदयाय नमः'** का उच्चारण कर भगवती को सुषुम्ना मार्ग से हृदय कमल में लाकर प्रतिष्ठित करें -

तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने सुरेश्वरि
यत्र ब्रह्मादयः देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि॥

हृदय कमल पर विराजमान देवी का पञ्चोपचार अर्चना करके उन्हें सुषुम्ना मार्ग से मूलाधार चक्र में प्रतिष्ठित करें।

उच्छिष्ठ चाण्डालिनी अर्चन

पूजा मण्डप के ईशान कोण में जल से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनायें। भगवती उच्छिष्ठ चाण्डालिनी का ध्यान करें-

वीणावाद्य विनोद गीत निरतां
नीलांशुकोल्लासिनीम्।
बिम्बोष्ठीं नव यावकार्द्र चरणाम्
आकीर्ण केशालिकाम्॥
तन्वगीं सितशंख कुण्डल धरां
माणिक्य भूषोज्ज्वलाम्।
मातङ्गी प्रणतोऽस्मि सुस्मित मुखीं
देवीं शुक श्यामलाम्॥

इस प्रकार ध्यान करके भगवती का आव्हान करें-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातङ्गी देव्यै नमः। हे माते! इहागच्छ, इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि, इह सन्निरुध्वस्व, इह सम्मुखी भव।

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः की योजना करके षडङ्ग मंत्रों से सकलीकरण करें। धेनु मुद्रा दिखाकर अमृतीकरण एवं परमीकरण मुद्रा दिखाकर परमीकरण करें। निर्माल्य पुष्प-धूप-दीप

से उनका अर्चन कर नैवेद्य शेष समर्पित करें। तत्पश्चात् निर्माल्य जल से उनका तर्पण करें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः उच्छिष्ठ चाण्डालिनि मातङ्गि सर्ववशंकरी स्वाहा। शेषिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
लेह्य चोष्यान्न पानादि ताम्बूलं स्रग् विलेपनम्।
निर्माल्य भोजनं तुभ्यं ददामि शिवाज्ञया।।

निर्माल्य पुष्पाञ्जलि देकर वहीं भूमि पर देवी की परिचारिकाओं के जिए भी अवशिष्ट पुष्प अक्षत बिखेर दें।

पात्र उद्वासन

तीन बार ताली बजाकर गुरुदेव से प्रार्थना करें-

ॐ।। देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।

यह प्रार्थना कर 'श्रीपात्र' को सिर तक उठाकर उसका कुछ द्रव्य किसी अन्य पात्र में लें। श्रीपात्र को आधार पर रख दें। श्रीपात्र के अमृत से सिर में गुरु पादुका मंत्र से गुरु मण्डल का तर्पण करें। अन्य पात्र में लिये गये अमृत से तर्पण करें। यथा-

ॐ।। धर्माधर्म हविदीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा
सुषुम्ना वर्त्मना नित्यं, अक्षवृत्तिर्जुहोम्यहम्।। स्वाहा

अमृत पान करें।

ॐ।। प्रकाशाकाश हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी स्रुचा।
धर्माधर्म कला स्नेह पूर्ण वह्नौ जुहोम्यऽहम्।। स्वाहा

अमृत पान करें। पुनः कुछ अमृत लेकर

ॐ।। अहंता पात्र भरितं इदन्ता परमामृतम्
पराहन्तामये वह्नौ जुहोमि शिवरूपकः।। स्वाहा

अमृत पान करें। पुनः कुछ अमृत लेकर

ॐ।। अन्तर्निरन्तर निरिन्धन मेघमाने
मायान्धकार परिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्याञ्चिदद्भुत मरीचि विकाश भूमौ
विश्वं जुहोमि वसुधादि-शिवावसानम्।। स्वाहा

यह पढ़कर पूर्ववत् पान कर जायें। पात्र को उलटकर भूमि पर रख दें। उस पर जल छोड़कर पात्र को शीतल करें। पात्र को उचित स्थान पर सुरक्षित रख दें।

इस प्रकार श्री पात्र का विसर्जन करें। यदि गुरु पात्र आदि पृथक से स्थापित किये गये हों तो गुरूपात्र का अमृत गुरूदेव को समर्पित करें। अनुपस्थिति में जल में डाल दें। शक्ति पात्र का अमृत शक्तियों को, वीर पात्र का वीरों को, योगिनी पात्र का कुमारिकाओं को और आत्म पात्र का शिष्यों को प्रदान करें। यदि ये पात्र स्थापित नहीं किये गये हों तो श्री पात्र का 'अमृत' सबको वितरित कर दें।

उच्छिष्ट भैरव बलि

बटुक आदि के बलियों का निर्माल्य किसी पत्तल में लेकर घर के बाहर जायें। उत्तर दिशा में भूमि पर त्रिकोण वृत्त-चतुरस्र युक्त मण्डल बनायें। "**ऐं ह्रीं श्रीं व्यापक मण्डलाय नमः**" से उसका पूजन करें। उसमें निर्माल्य पात्र रख दें। फिर उच्छिष्ट भैरव का ध्यान करें-

ॐ॥ गदा त्रिशूल डमरू पात्र हस्तं त्रिलोचनम्।
कृष्णाभं भैरवं ध्यायेत् सर्व विघ्न निवारणम्॥

गन्ध पुष्प से निर्माल्य का पूजन करें। धूप दीप रखें और उच्छिष्ट भैरव को बलि समर्पित करें-

ॐ एहि एहि उच्छिष्ट भैरव इदं धूप दीपादि सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण गुह्णापय गृह्णापय सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा। एषः बलिः उच्छिष्ट भैरवाय नमः।

बलि पात्र का शेष वहीं समर्पित कर दें। बलि पात्र तथा अपने हाथ पैर को भली भाँति धोकर आसन पर बैठें। शान्ति स्तोत्र पढ़ें।

अछिद्राधारण - तांबे के किसी बड़े लोटे में शुद्ध जल भरें। उसमें लाल चन्दन, लाल अक्षत, लाल पुष्प डालें। उसे लेकर बाहर आयें। भगवान सूर्य का दर्शन करके उन्हें अर्घ्य प्रदान करें। मंत्र है-

ॐ ह्रां ह्रीं हंसः सूर्यः एष ते अर्घ्यः स्वाहा"

इसके बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

ॐ॥ यज्ञश्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमछिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः॥

भगवान सूर्य को प्रणाम करके पूजा गृह में आयें। यंत्र-विसर्जन करें।

'**ॐ क्लीं नमः**' मंत्र का जप करते हुए 'यंत्र' पर चढ़ा एक फूल उठायें उसे सूंघें। निर्माल्य हो गये पुष्पों को हटा दें। यंत्र पर लगे गन्ध से निम्न मंत्र से तिलक करें-

ॐ॥ यं यं स्पृशामि पादेन, यं यं पश्यामि चक्षुषा
स एव दासतां यातु यदीन्द्रोऽपि समो भवेत्॥

यंत्र पर से निर्माल्य हटा दें। उसे शुद्ध जल से प्रक्षालित करें। चरणोदक लेकर पान करें -

ॐ॥ गंगा पुष्कर नर्मदा तु
यमुना गोदावरी गोमती।
गंगा द्वार प्रयागराज
बदरी वाराणसी सिन्धुषु
रेवा सेतु सरस्वती प्रभृतयः
ब्रह्माण्ड भाण्डोदरे॥
तीर्थ स्थान सहस्त्र कोटि
फलदं श्री चक्र पादोदकम्॥

चरणोदक लेकर 'श्री चक्र' पर चन्दन का टीका लगाकर उस पर एक फूल रखकर लाल वस्त्र से ढांक कर सिंहासन पर पूर्ववत् स्थापित कर दें।

नैवेद्य ग्रहण कर सुखपूर्वक सांसारिक कार्य करें।

श्री ललिता महालक्ष्मी-स्तोत्रम्

श्री भगवती नारायणी के प्रश्न करने पर श्री पुरुषोत्तम भगवान नारायण ने ललिता नाम से प्रसिद्ध महालक्ष्मी के एक सौ पैंतीस नामों का वर्णन किया है। इसका प्रतिदिन श्रद्धा-भक्तिपूर्वक श्री ललिता महालक्ष्मी का पूजन कर पाठ करने से इहलोक में अभ्युदय सहित पारलौकिक फल रूप मोक्ष की प्राप्ति भी सुलभ हो जाती है।

ध्यान-

हारनूपुर संयुक्ता कमलद्वयधारिणी।
लक्ष्मीः पर शिवमयी शुद्ध जाम्बूनद प्रभा॥१॥
तेजोरूपा च कमल वसति विश्वमोहिनी।
सर्वभूषोज्वलांगी च बीजापूरधरा तथा॥२॥

मानसोपचार -

लं पृथ्वी तत्वात्मकं गन्धं परिकल्यामि। ललिता महालक्ष्म्यै नमः।
हं आकाश तत्वात्मकं पुष्पं परिकल्यामि। ललिता महालक्ष्म्यै नमः।
यं वायु तत्वात्मकं धूपं परिकल्यामि। ललिता महालक्ष्म्यै नमः।
रं अग्नि तत्वात्मकं दीपं परिकल्यामि। ललिता महालक्ष्म्यै नमः।
वं जल तत्वात्मकं नैवेद्यं परिकल्यामि। ललिता महालक्ष्म्यै नमः।
सं सर्व तत्वात्मकं ताम्बूलं परिकल्यामि। ललिता महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ललितायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सम्पदे नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईशायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मालयायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्दिरायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईश्वर्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेश्वर्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मयै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नारायण्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेश्वर्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेशान्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शक्तीशायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुरुषोत्तम्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बिम्ब्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मायायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महामायायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलप्रकृत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अच्युत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वासुदेव्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरण्यायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिण्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरण्मय्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काष्ण्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामाक्ष्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भगमालिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वह्निवासायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुन्दर्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संविते नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विजयायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जयायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मंगलायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मोहिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ताप्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्ध्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईशितायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तये नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौमारिक्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बुद्ध्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥४९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुःखहायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रसवे नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुभाग्यायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नन्दिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सम्पदे नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विमलायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्विकायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभिधायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूर्तये नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥५९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योगिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चक्रिकाच्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धृत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्यामायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनोरायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रीत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋद्धयै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छायायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूर्णिमायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥६९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तुष्ट्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रज्ञायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुर्गायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लीलायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माणिक्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उद्यमायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भारत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विभूत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥७९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विनितायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुभायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कीर्त्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रियायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्याण्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुंकुमायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुण्यायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुराणायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥८९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वागीश्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वरदायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विभवाहिमन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नादायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रतिष्ठायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संस्कृतायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रय्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आयवे नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥९९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जीवायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१००॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णरेखायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीरायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रागिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चपलायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पण्डितायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काल्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भद्रायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अम्बिकायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१०९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मानिन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशालाक्ष्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वल्लभायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गोप्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नार्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नारायण्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संतुष्टायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुषुम्नायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षमायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धात्र्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥११९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वारुण्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुर्व्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥१२१॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साध्व्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२२।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गायत्र्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२३।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षिणायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२४।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णिकायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२५।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजलक्ष्म्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२६।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धमातायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२७।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माधव्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२८।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भार्गव्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१२९।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पर्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१३०।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हारित्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१३१।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राशियान्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१३२।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्राचीन्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१३३।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गौरिकायै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१३४।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रुत्यै नमः। श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१३५।।

फल-श्रुति

इत्यष्टोत्तरशतकं सप्तविंशतिरित्यपि।
ललितामुख्य नामानि कथितानि तव प्रिये।।१।।
नित्यं यः पठति तस्य भुक्तिर्मुक्तिः करस्थिता।
समृद्धिर्वंशस्य विस्तारः सर्वानन्दा भवन्ति वै।।२।।

'लं' इत्यादि से मानसोपचार पूजन करें-

पाठ समर्पण - हाथ में जलाक्षत लेकर भगवती के बायें हाथ में समर्पण करें-

गुह्यति गुह्यगोप्त्री त्वं0

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनेन यथा संख्यावृत्या शताधिक पंचत्रिशत् नामार्चनेन श्री ललिता महालक्ष्मी देवता प्रीयतां न मम।

विशेष - उपरोक्त १३५ नामों का प्रतिदिन १०८ बार या वृद्धिक्रम से नामार्चन पुष्पांजलि सहित १३५ दिनों तक करने से भगवती श्री ललिता महालक्ष्मी की कृपा से मन्दभागी व्यक्ति भी थोड़े ही दिनों में सभी सम्पत्ति एवं समृद्धि को प्राप्त करता है।

श्री लक्ष्मीहृदय-स्तोत्रम्

(अथर्वण-रहस्योक्तम्)

विनियोग :-

ॐ अस्य आद्यादि श्री लक्ष्मीहृदय स्तोत्रस्य भार्गव ऋषिः, त्रिष्टुबादिनानाछन्दासि, श्री महालक्ष्मीदेवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम् ममालक्ष्मीपरिहारपूर्वक दीर्घायुर्नैरूज्य महैश्वर्यफलावाप्त्यर्थं श्रीलक्ष्मीहृदय स्तोत्र पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

श्री भार्गवाय ऋषये नमः	शिरसि।
त्रिष्टुबादिनानाछन्देभ्यो नमः	मुखे।
ॐ आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीदेवतायै नमः	हृदये।
ॐ श्रीं बीजाय नमः	गुह्ये।
ॐ ह्रीं शक्तये नमः	पादयो।
ॐ ऐं कीलकाय नमः	नाभौ।
ममालक्ष्मींपरिहारपूर्वक दीर्घायुर्नैरुज्यमहैश्वर्य फलावाप्त्यर्थ- श्री लक्ष्मीहृदय स्तोत्र पाठे विनियोगाय नमः	अञ्जलौ।

	कर-न्यास	षडङ्ग न्यास
श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसि स्वाहा
श्रूं	मध्माभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
श्रैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
श्रौं	कनिष्ठकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
श्रः	करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

न्यास करने के बाद "ॐ श्रीं ह्रीं ऐं" से दिग्बन्धन करने के बाद ध्यान करें।

ध्यान - हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं तु लीलया।
हारनूपुर संयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये॥१॥

टिप्पणी - स्वयं ध्यान करते समय 'विचिन्तये' के स्थान पर 'विचिन्तयामि' का उच्चारण करें।

मानसोपचार - अर्चन -

लं पृथ्वी तत्वात्मकं गन्धं श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
हं आकाश तत्वात्मकं पुष्पं श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।

यं वायु तत्वात्मकं धूपं श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
रं अग्नि तत्वात्मकं दीपं श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
वं जल तत्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
सं सर्व तत्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।

अर्चन के वाद प्रार्थना करें -

ॐ॥ शंख चक्र गदा हस्ते, शुभ्रवर्णे सुवासिनि!
महूयं देहि वरं लक्ष्मि, सर्वसिद्धि प्रदायिनि॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का कमल गट्टे की माला से १०८ बार जप करें :-

मंत्र- "ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंह वाहिन्यै स्वाहा"॥

मंत्र जप के वाद पुनः हृदयादि न्यास करके स्तोत्र का तद्गत चित्त से पाठ करें -

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मे दधानामाद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम्॥१॥
श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम्। सर्वकामफलावाप्ति साधनैक सुखावहाम्॥२॥
नमामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसः। त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम्॥३॥

समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम्।
समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम्॥४॥
विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं विचित्रवाग्भूतिकरीं महेश्वरीम्।
मनोहरानन्तसुभोगदायिनीं नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम्॥५॥
समस्तभूतान्तरसंस्थिता त्वं समस्तभूतेश्वरि विश्वरूपे।
तन्नास्ति यत्त्वद् व्यतिरिक्तवस्तु त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः॥६॥
दारिद्र्य दुःखौघ तमोपहन्त्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः॥७॥

अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या मां त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमं कुरुष्व।
आलोकय प्रणत् हृद्गत शोकहन्त्री त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः॥८॥
शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै॥९॥
शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै॥१०॥
लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्ध सुपूजितायै।
धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै॥११॥
देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्तिविनाशिकायै।
धात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥१२॥

सुतीव्रदारिद्र्यविदुःखहर्त्र्यै नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै।
श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै नमो नमः सर्वविभूतिदायै॥१३॥

जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी जयतु जयतु पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या।
जयतु जयतु विद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था जयतु जयतु सम्यक्सर्वसम्पत्करी श्रीः॥१४॥

जयतु जयतु देवी देवासङ्घाभिपूज्या जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या जयतु जयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था॥१५॥
जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा।
जयतु जयतु कान्तिमद्भासिताङ्गी जयतु जयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये॥१६॥

यस्याः कलायाः कमलोद्भवाद्या रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च लेखाः देवाः।
जीवन्ति सर्वेऽपि सशक्तयस्ते प्रभुत्वमाप्ता परमायुषस्ते॥१७॥

लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं त्वया विलिखतव्यमेतदिति तत्फलावाप्तये।
तदन्तर इह फल स्फुटं कमलवासिनि श्री रमां समर्पय स्वमुद्रिकां सकलभाग्यसंसूचिकाम्॥१८॥
तदिदं तिमिरं भाले स्फुटं कमलवासिनी। श्रियं समुद्रजां देहि सर्वभाग्यस्य सूचिकाम्॥१९॥
कलया ते यथा देवि जीवन्ति सचराचराः। तथा संपत्करी लक्ष्मि सर्वदा संप्रसीद मे॥२०॥
यथा विष्णौ ध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशतः। तथैव स्वकलां लक्ष्मिर्मयि सम्यक् समर्पय॥२१॥
सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे। अचलां कुरु यत्नेन कला मयि निवेशिताम्॥२२॥
मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः।
वसेत्सत्य लोके मम वचसि लक्ष्मीर्वरकला श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः॥२३॥
तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत्। सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रिया॥२४॥
सर्वमंगलसंपूर्णासर्वेश्वर्यसमन्विता। आद्यादि श्रीर्महालक्ष्मीः त्वत्कला मयि तिष्ठतु॥२५॥
अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका। सर्वैश्वर्यप्रदा मेऽस्तु त्वत्कला मयि सुस्थिरा॥२६॥
अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा। वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता॥२७॥
ऐश्वर्यमङ्गलोत्पत्तिस्त्वत्कला या निधीयते। मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव॥२८॥
भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि। त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते॥२९॥

पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मादतः समागच्छ ममग्रतस्त्वम्।
परं पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना मय्यच्युतेन प्रविशादिलक्ष्मि॥३०॥

श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः। नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्यावलोकय॥३१॥
सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम्। वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव॥३२॥
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते। विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे॥३३॥
क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ माधवेन। त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय॥३४॥
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णे हिरणमयि। समागच्छ समागच्छ तिष्ठस्व स्थित्वाऽशु पुरतो मम॥३५॥
स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले। प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव॥३६॥
श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थं महानिधिम्। शीघ्रमुद्धृत्य पुरतः प्रदर्शय समर्पय॥३७॥
वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्ध्रि कृपामयि। त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं में सम्प्रदर्शय॥३८॥
विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे। त्वद्गर्भगतहेमादीन् प्रदर्शय प्रदर्शय॥३९॥
रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मत्पुरः। न जाने परमं रूपं मातर्मे सम्प्रदर्शय॥४०॥
आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः। मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम्॥४१॥
देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते। मातस्त्वद् भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात्॥४२॥
उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठ सुजागृहि। अक्षयान् हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान्॥४३॥

निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः। समुन्नतोन्नता भूत्वा समृद्धयैहि धरान्तरात्॥४४॥
मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात्। प्रसीद श्रेयसां दोग्ध्रि लक्ष्मि मे नयनाग्रतः॥४५॥
अत्रोपविश्य लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मयि। सुस्थिरा भव संप्रीत्या प्रसन्ना वरदा भव॥४६॥
आनीतांस्तांस्त्वया देवि निधीन् मे संप्रदर्शय। अद्य क्षणेन सहसा दत्त्वा संरक्ष मां सदा॥४७॥
मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि। अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥४८॥
समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे। प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय॥४९॥
लक्ष्मि भुवि गता भासि यत्र यत्र हिरण्मयी। तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय॥५०॥
क्रीडसि त्वं च बहुधा परिपूर्णकृपामयि। मम मूर्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय॥५१॥
फलदाभाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि। प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्ण मनोरथे॥५२॥
अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते। वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते॥५३॥
समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा। करुणारसनिःष्यन्दनेत्रद्वयविलासिनि॥५४॥
संनिधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके। करुणासुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरं कुरु॥५५॥
दीनस्य मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयार्पय। आद्यादिश्रीर्महालक्ष्मि विष्णुवामाङ्कसंस्थिते॥५६॥
भवभीतिपरित्रस्तभक्तत्राणपरायणे। प्रत्यक्षीकुरु रूपं मे रक्ष मां शरणागतम्॥५७॥
सर्वराजगृहाल्लक्ष्मि समागच्छ गुणान्विते। स्थित्वा तु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु॥५८॥
प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे। अचला भव सुप्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे॥५९॥
यावत्तिष्ठन्ति देवाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति। यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि॥६०॥
चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्धते सा दिने दिने। तथा दया ते मय्येव वर्धतामभिवर्धताम्॥६१॥
यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे। तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीर्विष्णुना सह॥६२॥
योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना। तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीर्विष्णुना सह॥६३॥

नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते नारायणोऽपि तव हृत्कमले यथास्ते।
नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः॥६४॥
विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यसिद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः।
दयासुपुष्टिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे करे श्रीः॥६५॥
न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्तिचिन्तामणि कामधेनो।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे॥६६॥
आद्यादिमाये त्वमजाण्डबीजं त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम्।
त्वया धृताश्चाब्जभवाण्डसंघाश्चित्रं चरित्रं तव देवि विष्णोः॥६७॥

ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः। महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुया कथम्॥६८॥
अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च। तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम्॥६९
भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः। इति संचिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे॥७०॥
अनन्तानन्तसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः। इति वेदप्रमाणाद्धि त्वां शरणं व्रजे॥७१॥
तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित्। इति संचिन्त्य संचिन्त्य प्राणान् सन्धारयाम्यहम्॥७२॥
त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते। यावत्सम्पूर्णकामः स्यां तावद्देहि कृपानिधे॥७३॥
क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना। न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः॥७४॥

यथाता हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी। वत्सं त्वरितमागत्य संप्रीणयति वत्सला॥७५॥
यदि स्यां तव पुत्रोऽहं मातस्त्वं यदि मामकी। दयापयोधरस्तन्यसुधाभिरभिषिञ्च माम्॥७६॥
मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दौषैकमन्दिरे। पांसूनां वृष्टिबिन्दूनां दोषाणां च न मे मितिः॥७७॥
पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः। दयनीयो मन्दयोऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये॥७८॥
विधिनाहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता। आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः॥७९॥
कृपा मदग्रजा किं ते ह्यहं वा किं तदग्रजः। विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे॥८०॥

माता पिता त्वं गुरु सद्गतिः श्रीस्त्वमेव संजीवनहेतुभूता।
अन्यं न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्यम्॥८१॥
आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना विशुद्धविज्ञानसुखैकदोग्ध्रि।
अज्ञानहन्त्रि त्रिगुणातिरिक्ता प्रज्ञाननेत्रे भव सुप्रसन्ना॥८२॥
अशेषवाग्जाड्यमलापहारिणि नवं नवं स्पष्टसुवाक्प्रदायिनि।
ममैहि जिह्वाग्रसुरङ्गनर्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः॥८३॥
समस्तसम्पत्सुविराजमाना समस्ततेजःसु विराजमाना।
विष्णुप्रिये त्वं भव दीप्यमाना वाग्देवता मे भवने प्रसन्ना॥८४॥
भक्त्या नतानां सकलार्थदे त्वं प्रभासुलावण्यदयासुदोग्ध्रि।
सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मये मे भव सुप्रसन्ना॥८५॥
सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः सर्वेश्वरी सर्वभयापहन्त्री।
सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मये मे वदने प्रसन्ना॥८६॥
समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी समस्तविघ्नोद्धरणे विचक्षणा।
अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी हिरण्मये मे वदने प्रसन्ना॥८७॥

देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं देवादिनाथभवदेवगणाभिवन्द्ये।
मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना॥८८॥
मा वत्स भैरभयदानकरोऽर्पितस्ते मौलौ ममेति मयि दीनदयानुकम्पे।
मातः समर्पय मुदा करुणाकटाक्षं माङ्गल्यबीजमहिमानुसृतं ममान्तः॥८९॥
कटाक्ष इह कामधुक्त्व ममास्तु चिन्तामणिः करः सुरतरुः सदा नवनिधिस्त्वमेवेन्दिरे।
मम रसायनं चान्वहं मुखं तव कलानिधिर्विविधवाञ्छितार्थप्रदम्॥९०॥

यथा रसस्पर्शनतोऽयसोऽपि सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते।
कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाममङ्गलानामपि मङ्गलत्वम्॥९१॥
देहीति नास्तीति वचः प्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपन्नः।
अतः सदास्मिन्नभयप्रदा त्वं सहैव पत्या मम सन्निधेहि॥९२॥

कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या श्रीस्ते कला मयि रसेन रसायनेन।
आस्तां यतो मम च दृक्शिरः कर पाणि पाद स्पृष्टाः सुवर्णवपुः स्थिरजङ्गमाः स्युः॥९३॥

आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्मपत्नी त्वमम्ब पत्या मम सन्निधेहि।
आद्यादिलक्ष्मीस्त्वदनुग्रहेण पदे पदे मे निधिदर्शनं स्यात्॥९४॥

॥फलश्रुति॥

आद्यादिलक्ष्मीहृदयं पठेद्यः स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति।
महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यस्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति॥९५॥
यस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा। तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत्॥९६॥
इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम्। जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते॥९७॥
त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः। यः पठेच्छ्रणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम्॥९८॥
महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे। इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत्॥९९॥
अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम्। ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम्॥१००॥
नरेणाप्यथवा नार्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते। जले च पीते तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते॥१०१॥
य आश्विन मासे च शुक्ल पक्षे रमोत्सवे सन्निहितैक भक्त्या।
पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या लभेत सौवर्णमयीं च वृद्धिम्॥१०२॥
यः एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी।
स मन्दभाग्योऽपि रमाकटाक्षाद्भवेत् सहस्राक्षशताधिकश्रीः॥१०३॥
श्रीशाङ्घ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमन्त्रार्थदृढैकनिष्ठाम्।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मे देहि परं पदं श्रीः॥१०४॥
पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम्।
संपूर्णसिद्धिं बहुवर्षभोग्यां प्रदेहि मे भार्गवि जन्म जन्मनि॥१०५॥
वागर्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं वयः स्थिरत्वं ललनासुभोगम्।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि जन्मजन्मनि॥१०६॥
सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः कल्याणवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः।
विभूतिवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः॥१०७॥
ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासां विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम्।
वीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रे भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदां शश्वदप्यच्युतश्रीः॥१०८॥

॥इत्यथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं संपूर्णम्॥

'लं' इत्यादि से मानसोपचार पूजन करें।

पाठ समर्पण -

हाथ में जलाक्षत लेकर भगवती के बांये हाथ में मंत्र बोलकर समर्पण करें-

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं पाठम्
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्त्वयि स्थिरा॥**

॥ लक्ष्मीहृदय-पाठ-फल॥

इस आद्यादि लक्ष्मी हृदय स्तोत्र का जो मनुष्य नित्यपाठ करता है उसे स्थिर राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। महादरिद्र व्यक्ति भी भगवती की कृपा से धन-धान्य सम्पन्न हो जाता है तथा उसके वंश में भी लक्ष्मी अचला होकर निवास करती है। इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से ही विष्णु प्रिया महालक्ष्मी प्रसन्न होकर व्यक्ति को

अभीष्ट फल प्रदान कर उसका पुत्रवत् पालन करती है। यह गोपनीय हृदय-स्तोत्र समस्त इच्छित फलों को प्रदान करने वाला है। इसके पुरश्चरण के लिए पांच हजार पाठ करना चाहिए। जो मनुष्य प्रतिदिन तीनों संध्याओं में अथवा एक बार ही इस स्तोत्र का भक्ति सहित पाठ करता है अथवा श्रवण करता है उसे परम ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

जो मनुष्य श्रीमहालक्ष्मी की प्रतिमा के सामने बैठ कर उनका ध्यान करते हुए भृगुवार (शुक्रवार) की रात्रि में इस स्तोत्र का पांच बार जप (पाठ) करता है वह शीघ्र ही सम्पत्तिशाली हो जाता है। इस स्तोत्र से अभिमंत्रित अन्न गर्भवती स्त्री को खिलाने से स्वयं विष्णु ही पुत्र रूप में उसके यहाँ जन्म लेते हैं। जो पुरुष या स्त्री इस स्तोत्र से अभिमंत्रित जल का नित्य पान करता है, उसके कुल में कोई भी मन्दभाग्य पुरुष या स्त्री नहीं उत्पन्न होता। जो मनुष्य आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की नवरात्रि में भगवती का अनन्य भक्त होकर प्रतिदिन वृद्धि क्रम (प्रथम दिन-एक, द्वितीय दिन-दो, तृतीय दिन-तीन...) से इसका पाठ करता है, उसके घर निरन्तर स्वर्णवृद्धि होती रहती है। जो मनुष्य एक वर्ष तक प्रतिदिन सत्तर पाठ, देवी के प्रति एकात्म भक्ति रखते हुए करता है वह भाग्यहीन होने पर भी महालक्ष्मी की कृपा से सौ इन्द्रों की सम्पत्ति से भी अधिक सम्पत्ति वाला हो जाता है।

विमर्श- इस लक्ष्मी हृदय स्तोत्र को नारायण हृदय स्तोत्र से सम्पुटित कर ११००, ५०० या २५१ पाठ करने से शीघ्र ही लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। ''अनुभूत''

कल्याण वृष्टि-स्तोत्रम्

(प्रचुर धन-प्राप्ति हेतु अत्यन्त दुर्लभ-प्रयोग)

आज से लगभग दस-बारह वर्ष पूर्व जब मैं किसी सिद्ध दिव्य महात्मा की खोज में इधर-उधर पर्वतीय क्षेत्रों में भटक रहा था, उसी समय अकस्मात् मेरा सम्पर्क एक दिव्य महात्मा से धराँसू (उत्तरकाशी) में हुआ। महात्मा जी अतिवृद्ध होते हुए भी विशेष तेजपूर्ण प्रतीत हो रहे थे। मैं स्वामी जी से अधिक प्रभावित हुआ कि श्रीविद्या की दीक्षा प्राप्ति हेतु उनसे प्रार्थना कर बैठा, परन्तु उन्होंने इसे अस्वीकार करते हुए कहा कि अभी प्रतीक्षा करो, समय आने पर तुम्हें दीक्षा एवं श्रेष्ठ गुरु की प्राप्ति होगी। इन्हीं महात्मा जी की कृपा प्रसाद से मुझे "दारिद्रय-दहन" का अति दिव्य प्रयोग प्राप्त हुआ जिसे जनकल्याण हेतु मैं प्रकाशित कर रहा हूँ।

प्रयोग विधि -

भगवती श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी का पूजन कर इस कल्याणवृष्टि स्तोत्र का प्रतिदिन पन्द्रह पाठ करें। पाठ के पश्चात १५ कमल गट्टों को लक्ष्मी या पञ्चदशी के मंत्र से अभिमंत्रित कर गोघृत सहित एक-एक श्लोक पढ़कर एक-एक कमल गट्टे द्वारा (पन्द्रह आहुतियाँ) हवन करें। इस प्रकार एक मण्डल (चालीस या उनचास दिन) पर्यन्त यह दिव्य प्रयोग करें। इस भाँति इस प्रयोग को चार मण्डल पर्यन्त करें।

टिप्पणी - इस 'कल्याण वृष्टि-स्तोत्र' के प्रत्येक श्लोक को पञ्चदशी मंत्र द्वारा सम्पुटित कर पाठ करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री कल्याणवृष्टि स्तोत्र मंत्रस्य भगवान् शंकर ऋषिः, जगती छन्दः श्री महात्रिपुर सुन्दरी देवता मम दारिद्र्य दुःख निवारण-पूर्वक प्रचुर धनसम्पत्ति प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

ॐ शंकर ऋषये नमः शिरसि।
ॐ जगती छन्दसे नमः मुखे।
ॐ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः हृदि।
ॐ मम दारिद्र्य दुःख निवारण-पूर्वक प्रचुर धनसम्पत्ति प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से कर एवं षडङ्ग न्यास करें।

ध्यानम् -

बन्धूकाभां त्रिनेत्रां शिशिर रुचिकला शेखरां रक्तवस्त्रा-
मत्यन्तोत्तुङ्गपीनस्तनभरनमितां यौवनारम्भरुढाम्।

सर्वालङ्कारदीप्तां सरसिजनिलयां मंत्र सङ्क्रान्मूर्ति

देवीं पाशाङ्कुशाढ्यामभयवरकरां विश्वयोनिं नमामि॥

ध्यान के पश्चात् 'लं' इत्यादि से भगवती का मानसोपचार पूजन कर स्तोत्र का पाठ करें -

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-

र्लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः।

सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले

नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्॥१॥

हे माँ! आपकी सेवायें (ध्यान-पूजन-जपादि) अमृत से परिपूर्ण कल्याण की वर्षा करने वाली हैं अर्थात् श्रेय और प्रेय (भोग और मोक्ष) दोनों प्रदान करने वाली हैं। जिस प्रकार मङ्गल-दीपमाला जहाँ प्रज्जवलित होती है वहाँ लक्ष्मी बिना बुलाये स्वयं ही उपस्थित होती है उसी प्रकार आपके चरण-कमलों में भक्तिभाव रखने वाले भक्तों की सभी मनोकामनाओं को बिना उनके प्रकट किये ही आपकी सेवाओं ने पूर्ण कर दिया। कुछ भी ऐसा शेष नहीं रहा जिसके लिए 'नहीं किया' ऐसा कहा जा सके।

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते

त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे।

सांनिध्यमुद्यदरुणायतसोदरस्य

त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाप्लुतस्य॥२॥

हे माँ! मेरी केवल इतनी ही अभिलाषा है कि आपकी स्तुति करते समय, उदयकालीन अरुणाभ सूर्य की समता करने वाले (उसी के समान सुन्दर रक्तवर्ण) तथा परमोत्कृष्ट-अमृत से परिपूर्ण (दर्शन-मात्र से मुक्ति प्रदन करने वाले) आपके श्री विग्रह का सानिध्य अश्रु-पूरित मेरे नेत्रों को सदा प्राप्त होता रहे, अर्थात् आपकी सुन्दर-छवि मेरे नेत्रों में सदा बनी रहे।

ईशत्वनामकलुषाः कति वा न सन्ति

ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः

एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते

यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति॥३॥

हे माँ! ईशत्व नाम से कलुषित (अहंकारवश स्वयं को ईश्वर मानने वाले) ब्रह्मादि न जाने कितने ही देवता प्रत्येक युग में सृष्टि के समय उत्पन्न होते हैं तथा प्रलय के समय विलीन हो जाते हैं अर्थात् किसी का भी जीवन स्थिर नहीं है। परन्तु जो व्यक्ति एक बार भी आपके चरणों में प्रणाम कर लेता है अर्थात् 'मनसा-वाचा-कर्मणा' स्वयं को आपके चरणों में समर्पित कर देता है, वही स्थिरता रूपी सिद्धि को प्राप्त कर स्थिर होता है। तात्पर्य यह कि वह जन्म-मरण से मुक्त होकर सदा के लिए मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

लब्ध्वा सकृत्त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम्।
कन्दर्पकोटिसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु॥४॥

हे त्रिपुर-सुन्दरी! आपके चरण-कमलों में भक्ति-भाव रखने वाले आपके भक्तजन, आपकी करुणा से उत्पन्न सौन्दर्यमयी (कल्याणकारी) कृपा-दृष्टि को यदिएक बार भी प्राप्त कर लेते हैं तो वे करोड़ों कामदेवों के समान सुन्दरता रूपी ऐश्वर्य से सम्पन्न होकर तीनों लोकों की युवतियों को सम्मोहित करने वाले हो जाते हैं अर्थात् त्रिभुवन में व्याप्त माया-रूपी तरुणी से स्वयं मोहित न होकर उसे ही सम्मोहित कर उससे मुक्त हो जाते हैं।

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
त्वत्संस्मृतौ यमभटाभिभवं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः॥५॥

हे त्रिकोणनिवासिनि (श्री चक्रस्थ त्रिकोण के मध्य-स्थित बिन्दु में निवास करने वाली अथवा त्रिभुवन में व्याप्त मूल-शक्ति रुपिणी) त्रिनयन त्रिपुर-सुन्दरि! हे माता! चारों वेद 'ह्रीं' कार को ही आपका नाम बतलाते हैं। आपके इस नाम का स्मरण कर लेने पर (सदा सम्यक् रूप से निरन्तर जप करने वाला) मनुष्य यमदूतों के दमन व तिरस्कार से मुक्त होकर लोकपालों के साथ स्वर्गीय नन्दनवन में विहार करता है। तात्पर्य यह है कि आपके इस (ह्रीं) नाम का नित्यजप करने वाला आपका भक्त यम-नियम-आसनादि समस्त साधन कष्टों से निरपेक्ष होकर इन्द्रियों के द्वारा सांसारिक सुखों का भोग करता हुआ भी सदा मुक्ति के परमानन्द में विलीन रहता है।

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः
क्रूरः कथं नु भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय किल मातरिदं तवार्धं
देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य॥६॥

हे माता! निरन्तर अमृत से आप्लावित (अभिषिञ्चित) रहने के कारण सदा शीतल आपका यह अर्द्धाङ्ग, त्रिपुर-हन्ता शिव को आश्वासन प्रदान करने के लिए, उनकी सुरक्षा में जब उनके साथ सदा संलग्न रहता है तो उनके गले में पूरी तरह भरा हुआ विष का प्रभाव भला अनिष्टकर कैसे हो सकता था अर्थात् अनिष्ट कर विष भी आपके प्रभाव से शिव के लिए अमङ्गलकारी न होकर सौन्दर्य-वर्धक हो गया। इसी प्रकार हे माता! जिन भक्तों के हृदय में निरन्तर आपका निवास है उनके लिए सांसारिक कर्म तथा भोग बन्धनकारक न होकर, आपकी आराधना-स्वरूप बनकर (यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं देवि! तवाराधनं) उनकी मुक्ति के कारक ही सिद्ध होते हैं।

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदङ्‌घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति॥७॥

हे देवि! आपके चरणों में किया हुआ सर्व-समर्पण रूप प्रणाम सर्वज्ञता के साथ ही विद्वानों की सभा में वाक्चातुर्य को भी उत्पन्न करने वाला है। इतना ही नहीं वह प्रणाम करने वाले भक्त को दिव्याभासम्पन्न राजमुकुट, श्वेत छत्र, दो चामर और विशाल पृथ्वी का साम्राज्य भी प्रदान कर देता है।

जो 'सत्' है वही 'तत्' है। सदसि अर्थात् सत् असि-तत् असि-तत्(त्वम्) असि। इस प्रकार आपके चरणों में किया हुआ नमन 'तत् त्वमसि' के उपदेश द्वारा ब्रह्मज्ञान प्रदान करने वाला है, तथा ''एक विज्ञाते सर्व विज्ञातं भवति'' के अनुसार नमन-कर्ता को सर्वज्ञ भी बना देता है। फिर उसके मुख से वाणी 'वेद-वाणी' के रूप में ही निकलती है। 'स सम्राडो भवति' के अनुसार वह सम्पूर्ण चराचर, दृश्य-अदृश्य प्रकृति का स्वामी हो जाता है। ब्रह्मज्ञानरूपी दिव्य राजमुकुट से उसका मुख-मण्डल सदा आभासित रहता है। इस ज्ञान की छत्र-छाया में वह संसार की भीषण ज्वालाओं से सदा सुरक्षित रहता है। 'भुक्ति और मुक्ति सदा दो दासियों (चामरों) की भाँति उसका सेवा में तत्पर रहती हैं। अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्य के साथ समस्त सिद्धियाँ तथा निधियाँ उसी का ही आश्रय ग्रहण करती हैं।

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम्॥८॥

हे माँ त्रिपुरसुन्दरि! आप भक्तों की अभिलाषाओं को पूर्ण करने में कल्प-वृक्ष के समान हैं। करुणारूपी सागर से युक्त अपनी कृपा-कटाक्ष द्वारा बस एक बार ही मुझ (जीव) अनाथ (जो 'अनाथ' अर्थात् जिसका कोई 'नाथ' न हो तात्पर्य यह कि जो 'सर्वनाथ' हो, ऐसा होते हुए भी जो स्वयं को 'अनाथ' दीन-हीन समझ रहा हो) को देख लें अर्थात् अपनी ज्ञान-दृष्टि से मेरे अज्ञान को निरोहित कर दें। हे माँ! मैं सर्वाश्रय रहित केवल आपकी भक्ति में ही पूर्णतया लीन तथा आपकी ओर ही दृष्टि लगाये हुए हूँ। तात्पर्य यह कि मेरी दृष्टि जिधर भी जाती है उधर आपके अतिरिक्त अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता -''जित देखूँ तित श्याम-मयी है''।

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव॥९॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

हे माँ (देवि)! कितने दुख की बात है कि भक्त के लिए स्वयं को भी अर्पित कर देने वाली आपकी महिमा को न जानकर अन्यान्य जन आपके अतिरिक्त दूसरे क्षुद्र देवताओं की मन लगाकर उनकी भक्ति का भार वहन (धारण) करते हैं, क्योंकि उन देवताओं के लिए उनके भक्त 'पशु' के समान ही हैं। हे माँ! मैं तो केवल आपका ही मन-वाणी से स्मरण करता हूँ तथा केवल आपको ही प्रणाम करता हूँ। मेरे लिए आपके अलावा अन्य कोई भी इस संसार में शरण देने योग्य नहीं है- 'त्वमेव शरणं मम''।

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित्।
नूनं मया तु सदृशं करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते च॥१०॥

हे माँ त्रिपुरसुन्दरि! आपके नेत्रों द्वारा देखने योग्य संसार में बहुत सी वस्तुएं हैं। सारी सृष्टि ही आपकी दृष्टि का विलास हैं। ऐसा होने पर भी, किसी प्रकार आप मुझ पर भी अपनी दृष्टि डालें। क्योंकि वास्तव में, मुझ जैसा आपकी करुणा का एकमात्र पात्र (अधिकारी) भूत में न कोई हुआ है, वर्तमान में न कोई है और भविष्य में न कोई पैदा होगा।

जब भक्त अपने 'अहं' को सर्वथा अपने आराध्य में विलीन कर उससे एकत्व (अभेद) स्थापित कर लेता है तो आराध्य के हृदय में स्थित करुणा स्वयं ही उसे उसके (आराध्य के) सम्पूर्ण ऐश्वर्य का पात्र (अधिकारी) बना देती है।

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे!
मालाकिरीटमदवारणमाननीयां
स्तान् सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः॥११॥

हे त्रिपुरनिवासिनि माँ! आपके जो भक्त प्रतिदिन निरन्तर ''ह्रीं'', ''ह्रीं'' रूप में आपके नाम का जप करते रहते हैं, उनके लिए इस संसार की कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं रह जाती। आपके कृपा प्रसाद द्वारा प्राप्त राजोचित रत्नमाला, मुकुट और मदमत्त गजराजों से युक्त उन माननीय भक्तों की सेवा तो वैभवशालिनी लक्ष्मी स्वयं विना कहे ही करती रहती है।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्॥१२॥

हे कमलनयनि माँ! आपकी वन्दनाएँ (भक्तिपूर्वक की गई पूजार्चना-जपादि) सम्पत्ति (सौभाग्य) प्रदान करने वाली तथा समस्त इन्द्रियों को आनन्दित करने वाली हैं अर्थात् मुक्ति तथा भुक्ति दोनों को देने में समर्थ हैं। ये पापों के समूह (जन्म-मरण

के चक्र अथवा सञ्चित, प्रारब्ध तथा क्रियमाण तीनों प्रकार के कर्म बन्धन) को दूर कर साम्राज्य (जीवन्मुक्ति) प्रदान करने में कुशल हैं। हे मातः! आपकी वन्दनाओं से प्राप्त होने वाला यह कृपा प्रसाद केवल मुझे (मुझ जैसे भक्तों को) ही निरन्तर प्राप्त हों दूसरे (अभक्त अनधिकारियों) को नहीं।

कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य।
पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका॥१३॥

ब्राह्म दिन (कल्प) के अवसान काल-कल्पान्त में, सृष्टि के उपसंहार के समय जब समस्त नाम-रूपात्मक प्रपञ्च का विनाश हो जाता है, उस समय पाश, अंकुश, इक्षु-धनुष तथा पुष्प-बाण धारण करने वाली एकमात्र आपकी ही मूर्ति विजयी रूप से, खण्ड परशुधारी देवाधिदेव भगवान रुद्र के ताण्डव नृत्य की साक्षी बनकर स्थित होती है। तात्पर्य यह कि जब मन की समस्त कल्पनाएं शान्त हो जाती हैं, चित्त-विचार शून्य हो जाता है, तब ही जीव-रूपी शिव के समक्ष ध्यान (समाधि) के समय भगवती का स्फुरण होता है और शिव तथा शक्ति के एकत्व होने पर साधक को अभेदत्व की अनुभूति होती है।

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्ध
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकनावतंसं
मध्ये त्रिकोणनिलयं परमामृतार्द्रम्॥१४॥

हे माँ! आपका यह परम तेजोमय अर्द्धाङ्ग, जो अत्यधिक कुकुम लेप के कारण रक्ताभ, जगमगाते मुकुट तथा चन्द्रकला के कर्णाभूषणों (कर्ण-फूलों या कुण्डलों) से अलंकृत, त्रिकोण के मध्य में निवास करने वाला और परमामृत से सिक्त है, सदा ही शिव के साथ संलग्न रहे। तात्पर्य यह कि हे माँ! आप मेरे हृदय में जीवरूपी शिव के साथ नित्य विराजमान रहें।

ह्रींकारमेव तव नाम तदेव रूपं
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः॥१५॥

हे कमलनिवासिनि त्रिपुर सुन्दरि! 'ह्रीं' कार (ह्रीं बीज-मंत्र) ही आपका नाम और यही आपका स्वरूप भी है। आपके इसी नाम के द्वारा, आपके तेज (प्रभाव) से उत्पन्न आकाशादि पञ्चभूतों (के द्वारा समस्त चराचर सृष्टि) एवं आब्रह्म-स्तम्ब पर्यन्त जीवों के सुख का विस्तार होता है। तात्पर्य यह कि सम्पूर्ण जड़-चेतनात्मक सृष्टि के रूप में 'ह्रीं' अर्थात् आप ही स्थित हैं।

॥ फलश्रुति॥

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण संदीपितं
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः॥१६॥

हे माँ! जो मंत्रज्ञ महा-मंत्र स्वरूप तीन 'ह्रीं' कार से सम्पुटित तथा उद्भासित इस स्तोत्र का, आपके समक्ष, प्रतिदिन जप (पाठ) करता है, राजा उसके वश में हो जाते हैं, उसकी लक्ष्मी चिर-स्थायिनी तथा वाणी निर्मल सदूक्तियों से परिपूर्ण हो जाती है। वह दीर्घायु सम्पन्न होकर बहुत काल तक जीवित रहता है।

इति विरचितमेतत्त्रैपुरस्तोत्रमात्रं
प्रकटितपरमार्थं योगिभिर्योगमृग्यम्।
सकलदुरितरोगध्वं सनानन्यकार्यं
प्रथितजनविधानं सेव्यतां भक्तियुक्तैः॥१७॥

इस विशेष रूप से रचित त्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्र में योगियों द्वारा योग-साधनाओं के माध्यम से अन्वेषणीय (प्राप्त करने योग्य) केवल परमार्थ तत्व का ही स्पष्ट रूप से निरुपण किया गया है। यह स्तोत्र भक्तों के समस्त पापों तथा रोगों (शारीरिक एवं मानसिक) का विनाश करने वाला और उनकी विभिन्न अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला एकमात्र साधन है। मनुष्य को भक्ति सहित इस स्तोत्र का सेवन (प्रतिदिन पाठ अथवा जप) करना चाहिए। तात्पर्य यह कि साधक भक्ति-पूर्वक निरन्तर इस स्तोत्र के पाठ द्वारा ही सांसारिक भोग एवं 'भव-रोग' नाश पूर्वक मोक्ष को भी प्राप्त कर लेता है।

पाठ के पश्चात पुनः न्यास-ध्यान-मानसोपचारादि करके भगवती को पाठ समर्पित करें :-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनेन कल्याण वृष्टि स्तोत्र पाठेन भगवती महात्रिपुरसुन्दरी देवता प्रीयतां न मम।

कनकधारा-स्तोत्र-प्रयोग

(दारिद्र्य-ध्वंसक-प्रयोग)

भगवान शंकराचार्य द्वारा रचित इस 'कनकधारा-स्तोत्र' का नित्य तीन बार (अथवा त्रिकाल) पाठ करने वाला व्यक्ति भगवती श्रीमहालक्ष्मी की कृपा से अपार धन सम्पत्ति का स्वामी होकर कुबेर के समान इस पृथ्वी पर वैभवशाली हो जाता है। किवदन्ती है कि भगवान शंकराचार्य ने इस स्तोत्र के द्वारा भगवती श्री महालक्ष्मी का स्तवन कर किसी निर्धन ब्राह्मण दम्पत्ति के गृह में स्वर्ण वर्षा करायी थी।

इस 'कनकधारा स्तोत्र' के प्रत्येक श्लोक को निम्न मंत्रों (श्लोकों) के द्वारा सम्पुटित कर पाठ करना विशेष फलदायी होता है।

(१) श्रीं

(२) ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

(३) ततश्चाविरभूत् साक्षाच्छ्री रमा भगवत्परा।
रञ्जयन्ती दिशा कान्त्या विद्युत् सौदामनी यथा॥

(४) श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥

विनियोग :-

ॐ अस्य श्री कनकधारा स्तोत्र मंत्रस्य भगवान् शङ्कर ऋषिः, शर्करी छन्दः, श्री महालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, मम समस्त दारिद्र्य दुःख निवारण-पूर्वक धनाकर्षणाय पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

ॐ शंकर ऋषये नमः	**शिरसि।**
ॐ शर्करी छन्दसे नमः	**मुखे।**
ॐ श्रीमहालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै नमः	**हृदि।**
ॐ श्रीं बीजाय नमः	**गुह्ये।**
ॐ ह्रीं शक्तये नमः	**पादयोः।**
ॐ ऐं कीलकाय नमः	**नाभौ।**
ॐ मम समस्त दारिद्र्य दुःख निवारण-पूर्वक धनाकर्षणाय पाठे विनियोगाय नमः	**सर्वाङ्गे।**

इसके बाद कर एवं षडङ्ग न्यास करें।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

	कर-न्यास	षडङ्ग न्यास
ॐ श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ श्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसि स्वाहा
ॐ श्रूं	मध्माभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ श्रैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
ॐ श्रौं	कनिष्ठकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ श्रः	करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान -

ॐ लक्ष्मी क्षीर-समुद्र-राज-तनयां श्रीरङ्ग-धामेश्वरी।
दासी-भूत समस्त देव-वनितां त्रैलोक्य-दीपांगराम्॥
श्रीमन्मद-कटाक्ष-लब्ध-वियद-ब्रह्मेन्द्र-गङ्गा-धराम्।
त्वां त्रैलोक्य-कुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्द-प्रियाम्॥

ध्यान के बाद लं इत्यादि से मानसोपचार पूजन कर स्त्रोत पाठ करें-

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमांश्रयन्ती।
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्॥
अङ्गीकृताखिलविभूतिपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥१॥

जैसे कलियों (अर्द्ध-विकसित पुष्पों) से सुशोभित तमाल वृक्ष पर भ्रमरी मंडराती रहती है, उसी प्रकार जो अपने समस्त ऐश्वर्यों सहित श्री विष्णु के पुलकावली (रोमों) से अलङ्कृत अङ्ग (हृदय) पर सदा आश्रय लिए रहती है, ऐसी उस समस्त मङ्गलों की अधिष्ठात्री श्री लक्ष्मी की कृपा-दृष्टि मेरे लिए मङ्गलदायिनी हो।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः।
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः॥२॥

जिस प्रकार कोई भ्रमरी किसी बड़े कमल-पुष्प पर बार-बार बैठती और उड़ती रहती है, उसी प्रकार सागर-तनया श्री लक्ष्मी की दृष्टि हृदय-गत प्रेम से प्रेरित होकर श्री विष्णु के मुख-मण्डल की ओर आती है और फिर लज्जा के कारण लौट जाती है। इस प्रकार बार-बार दृष्टि के आने-जाने के कारण उत्पन्न हुई जो दृष्टि-माला है, वह मुझे धन-सम्पत्ति (सांसारिक वैभव) प्रदान करे।

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष-
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध-
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः॥३॥

श्री लक्ष्मी जी के अर्द्धोन्मीलित, नीलकमल के गर्भ के समान सुन्दर नेत्रों की कृपा-दृष्टि, जो संसार को पल भर में (अतिशय प्रेम के कारण उतावली में) इन्द्र-पद (स्वर्गीय-वैभव) तक देने में समर्थ है तथा जो श्री विष्णु के अत्यधिक आनन्द का कारण (अत्यधिक आनन्द प्रदान करने वाली) भी है, वह (कृपा-दृष्टि) क्षण भर के लिए मुझ पर भी स्थित हो। अर्थात् हे माँ लक्ष्मी! आपकी कृपा-दृष्टि मुझ पर भी हो जिससे मेरी अकिञ्चनता विलीन हो जाय।

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः॥४॥

प्रसन्नतापूर्वक अपलक नेत्रों से स्वयं (लक्ष्मी) की ओर निरन्तर देखते रहने वाले आनन्दघन मुकुन्द को, आँखें बन्द किए हुए अपने निकट पाकर, शेषशायी विष्णु की पत्नी जिस श्री लक्ष्मी के नेत्रों की पुतलियाँ तथा बौरानियाँ किञ्चित रोष के कारण तिरछी हो गई हैं, वह मेरे लिए समृद्धिकारक (धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाली) हो।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः॥५॥

जो मधुसूदन (विष्णु) के वक्षःस्थल पर स्थित कौस्तुभ मणि पर इन्द्रनीलमयी हार की लड़ियों की भाँति सुशोभित होती है तथा जो भगवान को भी सुख (आनन्द) प्रदान करने वाली (अथवा भगवान के चित्त में भी प्रेम उत्पन्न करने वाली) है, कमल-निवासिनी श्री लक्ष्मी की वह कटाक्ष माला (बार-बार प्रेमवश वक्षः स्थल पर पड़ने तथा लज्जावश लौटने के कारण उत्पन्न तिरक्षी चितवनों की माला) मेरे लिए कल्याण का आवाहन करे अर्थात् मुझे कल्याण प्रदान करने वाली हो।

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः॥६॥

बादलों में चमकने वाली बिजली की भाँति जो घनश्याम कैटभ-शत्रु श्री विष्णु के सुन्दर वक्षःस्थल पर रेखा की तरह प्रकाशित होती है, विश्वोत्पत्ति का कारण होने से जो समस्त संसार की माता-स्वरुप है तथा अपने जन्म से जिसने भृगु-वंश को आनन्द प्रदान किया है उस भृगु-तनया श्री लक्ष्मी की पूजनीय (आराध्य) मूर्ति मुझे मङ्गल प्रदान (मेरा कल्याण) करे।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्ध

मन्दालसं च मकरालयकन्यकाया:॥७॥

समुद्र-कन्या श्री लक्ष्मी की जिस अधखुले नेत्रों की प्रेम-पूर्ण, लजीली, धीरे-धीरे उठने वाली तिरछी चितवन (दृष्टि) के प्रभाव से कामदेव ने मङ्गल-स्वरुप मधुसूदन भगवान विष्णु के विभिन्न रूपों में प्रथम स्थान प्राप्त किया, वही कृपा-दृष्टि यहाँ मुझ पर भी पड़े अर्थात् मेरा भी कल्याण करे।

दद्याद्दनुपवनो द्रविणाम्बुधारा-

मस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।

दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं

नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाह:॥८॥

श्री नारायण (विष्णु) प्रिया लक्ष्मी के नेत्र-रुपी बादल दयारूपी पवन से प्रेरित होकर चिरकाल (सदा) के लिए (मेरे) दुष्कर्म रूपी पाप से उत्पन्न ताप (कष्ट) को दूर कर, इस दीन-हीन दुख में पड़े हुए चातक-शिशु रूप मुझ पर धन-रूपी जलधारा की वृष्टि करें। तात्पर्य यह कि श्री लक्ष्मी जी अपनी कृपा-दृष्टि से मेरे समस्त पाप-ताप का हमेशा के लिए निवारण कर मुझे धन-सम्पत्ति प्रदान (मुझ पर स्वर्ण-कनकधारा की वर्षा) करें।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-

दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।

दृष्टि: प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां

पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टराया:॥९॥

जिस कमलासना श्री लक्ष्मी की करुणामयी-कृपा दृष्टि से उनके प्रिय-पात्र विशिष्ट प्रज्ञावान (भक्त) लोग बिना किसी विशेष परिश्रम (साधना) के सरलतापूर्वक इन्द्र पद (स्वर्ग) को भी प्राप्त कर लेते हैं, उसकी विकसित कमल-गर्भ के समान दिव्याभा वाली कृपा-दृष्टि मेरी इच्छाओं को भी पुष्टि प्रदान करे अर्थात् मुझे भी सांसारिक सुख-सम्पत्ति प्रदान करे।

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति

शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।

सृष्टिस्थितिप्रलय केलिषु संस्थितायै

तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै॥१०॥

जो विश्व की सृष्टि, स्थिति (रक्षण तथा पालन) तथा प्रलय लीला काल में क्रमश: वाग्देवता (सरस्वती), विष्णु-पत्नी लक्ष्मी, शाकम्भरी तथा शंकर (रुद्र)-प्रिया पार्वती (काली) के रूप में स्थित होकर क्रीड़ा करती है, उस त्रिभुवन के एकमात्र गुरु (सर्वोपरि-सर्वश्रेष्ठ) श्री नारायण की नित्य-यौवना प्रिया श्री महालक्ष्मी को प्रणाम है, अर्थात् मैं ब्रह्म, विष्णु, रूद्र तीनों की शक्ति (त्रि-शक्ति) रूप महालक्ष्मी को प्रणाम करता हूँ।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥११॥

शुभ(सत्) कर्मों का फल देने वाली श्रुति को नमस्कार है। रमणीय (सुन्दर) गुणों की सागर-स्वरूपा रति को प्रणाम है। कमल-वन निवासिनी शक्ति एवं पुष्टि-स्वरूपा पुरुषोत्तम नारायण-प्रिया को नमस्कार है अर्थात् इन विभिन्न स्वरूपों वाली महालक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूँ।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥१२॥

कमल के समान मुख वाली(श्री लक्ष्मी-कमलनयना) को नमस्कार है। क्षीर-सागर जिसकी जन्म-भूमि (स्थान) है उस क्षीर-सागर-कन्या (श्री देवी-लक्ष्मी) को नमस्कार है। चन्द्रमा और अमृत की सहोदरा (तीनों के क्षीर-सागर से ही उत्पन्न होने के कारण) लक्ष्मी को प्रणाम है। इन विभिन्न (कमलानना, क्षीर-सागर-कन्या, सोमामृत सहोदरा) नामों वाली श्री नारायण-प्रिया महालक्ष्मी को मेरा प्रणाम है।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥१३॥

हे माननीये पद्म विलोचनि माँ! आपकी वन्दनाएं (चरणों में बार-बार भक्ति सहित की गई स्तुतियाँ तथा प्रणाम) सम्पत्ति प्रदान करने वाली हैं अथवा सम्यक् रूप से (सम रूप परमात्मा-ब्रह्म में) पतन-गिराने(संयुक्त कराने) वाली हैं तात्पर्य यह कि मुक्ति प्रदान करने वाली हैं। साथ ही समस्त इन्द्रियों को इच्छित भोग प्रदान कर उन्हें आनन्दित करने वाली भी हैं अर्थात् भुक्ति एवं मुक्ति दोनों प्रदान करने में समर्थ हैं। ये पापों के समूह (सञ्चित, प्रारब्ध तथा कियमाण) को निरन्तर दूर करने में तत्पर रहते हुए सम्पूर्ण सृष्टि का साम्राज्य प्रदान करने वाली हैं अथवा अन्तःकरण के समस्त दोषों को दूर कर, आत्मा के नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वरूप का बोध कराकर 'सम्राडो भवति' के अनुसार जीवनमुक्ति प्रदान करने वाली हैं। हे माँ! आपकी कृपावश ये निरन्तर मुझे प्राप्त होती रहें अर्थात् अहर्निश मैं आपकी वन्दना में संलग्न रहूँ।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थ संपदः।
सन्तनोति वचनाङ्गमानसै
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥१४॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

सम्यक् रूप से विधिपूर्वक की गई उपासना (भक्ति सहित पूजार्चनादि) से प्रसन्न हुई जिसकी कृपा दृष्टि अपने सेवक की समस्त मनोवांछित सम्पत्तियों (सुखों) का विस्तार करती है अर्थात् उसे इच्छित पदार्थ प्रदान करने के साथ ही उनकी वृद्धि भी करती रहती है, उस मुरारि-हृदयेश्वरी (विष्णु-प्रिया) श्री लक्ष्मी का मन, वचन और शरीर के द्वारा (उसकी वही कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए) मैं भजन करता हूँ। सम्पूर्ण चराचर सृष्टि को अपने इष्ट-देव का ही स्वरूप मानकर यथावत् व्यवहार करते हुए मन, वाणी और कर्म (शरीर) द्वारा प्रसन्नतापूर्वक उसकी सेवा करना ही वास्तविक रूप से इष्ट-भजन है।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुक गन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥१५॥

कमल में निवास करने वाली, हाथ में कमल धारण करने वाली, अत्यन्त धवल (स्वच्छ श्वेत) वस्त्र, गन्ध (चन्दनादि) और माला से शोभायमान तीनों लोकों की सृष्टि (कल्याण अथवा समृद्धि) करने वाली तथा निज-भक्तों के मनोभावों को भली-भाँति जानने वाली षडैश्वर्य सम्पन्ना (भगवती) हे विष्णु-प्रिया लक्ष्मी! आप मुझ पर प्रसन्न हों अर्थात् मुझ पर कृपा करके मेरी अभिलाषा पूरी करें।

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्॥१६॥

चारों दिशाओं के गजराजों के द्वारा, स्वर्गङ्गा के निर्मल-पवित्र जल से भरे हुए स्वर्ण-कलशों से की गई वृष्टि द्वारा जिसके समस्त अङ्ग भीगे हुए (अभिषिक्त) हैं उस विश्व-माता, अमृत-सिन्धु-तनया, सर्वलोकेश नारायण की पत्नी श्री लक्ष्मी को मैं प्रातः काल (बोध-प्राप्त-काल से ही निरन्तर) प्रणाम करता हूँ।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥१७॥

हे कमल-नयन विष्णु प्रिये कमले! समस्त आश्रयों से रहित सर्वथा दीन-हीन अकिञ्चनों में प्रथम अर्थात् सबसे अधिक दुर्भाग्यशाली मुझको आप अपनी दया से पूर्ण चञ्चल नेत्रों द्वारा (क्षण भर के लिए ही) देखें। मेरी समस्त कामनाओं को पूर्ण करने के लिए आपकी क्षणार्ध-दृष्टि ही पर्याप्त है। मैं आपकी दया (कृपा प्राप्त करने) का वास्तविक (बनावटी नहीं) पात्र-अधिकारी हूँ।

।फलश्रुति।।

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥१८॥

जो लोग इस पृथ्वी पर (संसार में) इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेदत्रयी (त्रिशक्ति)-स्वरूपा, त्रिलोक जननी भगवती श्री लक्ष्मी की स्तुति (प्रशंसा-उपासना) करते हैं (करेंगे) वे अत्यधिक गुणवान और बड़े ही सौभाग्यशाली होते हैं (होवेंगे)। इसके साथ ही वे विद्वानों का पालन-पोषण व संरक्षण करने वाले भी होते हैं (होवेंगे)।

पाठ के पश्चात् पुनः न्यासादि करके भगवती महालक्ष्मी को पाठ समर्पित करें-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं0

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनेन कनकधारा स्तोत्र पाठेन श्रीमहालक्ष्मी देवता प्रीयतां न मम।

सर्वसाम्राज्य लक्ष्मी मंत्र प्रयोग

दक्षिणामूर्ति संहिता के अनुसार यह साम्राज्य लक्ष्मी (विद्या) सर्वसाम्राज्य प्रदायिनी है। इस विद्या की आराधना के फलस्वरूप ही विष्णु पृथ्वी एवं लक्ष्मी के स्वामी हुए।

साधक प्रातः कृत्यादि से लेकर योगपीठ न्यास तक की सम्पूर्ण क्रियाओं को सम्पन्न कर मूल मंत्र से तीन बार प्राणायाम करके विनियोगादि करें -

मंत्र -

'श्रीं सकल ह्रीं श्रीं'

विनियोग :-

ॐ अस्य सर्व साम्राज्य लक्ष्मी मंत्रस्य हर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री सर्व साम्राज्य लक्ष्मी देवता सकल ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः सर्वसाम्राज्यलक्ष्मी देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

हरये ऋषये नमः	**शिरसि।**
गायत्री छन्दसे नमः	**मुखे।**
सर्व-साम्राज्य लक्ष्मी देवतायै नमः	**हृदि।**
सकल ह्रीं बीजाय नमः	**गुह्ये।**
श्रीं शक्तये नमः	**पादयोः।**
विनियोगाय नमः	**सर्वाङ्गे।**

कर-न्यास	षडङ्ग-न्यास
सकलां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	**हृदयाय नमः।**
सकलीं तर्जनीभ्यां नमः।	**शिरसे स्वाहा।**
सकलूं मध्यमाभ्यां नमः।	**शिखायै वषट्।**
सकलैं अनामिकाभ्यां नमः	**कवचाय हुम्।**
सकलौं कनिष्ठकाभ्यां नमः।	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**
सकलः कर-तल कर पृष्ठाभ्यां नमः।	**अस्त्राय फट्।**

दिग्-बन्धन - **'ॐ भूर्भुवः स्वरोम'** से दिग्-बन्धन करें।

ध्यान - **अतसी पुष्प संकाशां रत्नभूषण भूषिताम्।**
शङ्ख चक्र गदापद्मशार्ङ्गबाणधरां करैः॥
षड्भिः कराभ्यां देवेशि वरदाभय शोभिताम्। (ध्यायेदिति शेषः)

इस प्रकार ध्यान करके भगवती लक्ष्मी का 'मानसोपचार पूजन' करें। यथा-

१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्वात्मकं धूपं सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं दीपं सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

अब सर्व-देवोपयोगी पद्धति से **अर्घ्य** एवं **पाद्य-आचमनीय आदि पात्रों की स्थापना** करके **पीठ-पूजन** करें।

'पूजन यन्त्र' की स्थापना करके मण्डूकादि-पर-तत्त्वान्त देवताओं की पूजा करें। तत्पश्चात् पूर्वादि-क्रम से **भगवती लक्ष्मी** की **'पीठ-शक्तियों'** की अर्चना करें। यथा-

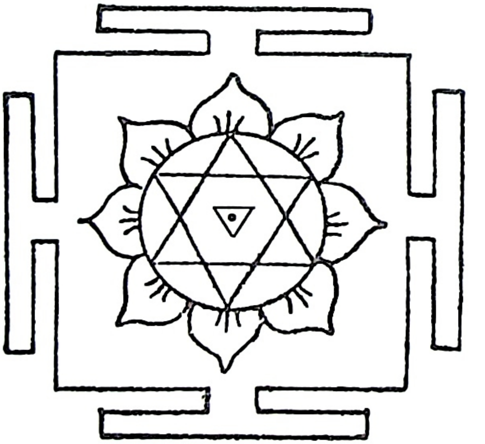

श्री विभूत्यै नमः, श्री उन्नत्यै नमः, श्री कान्त्यै नमः, श्री सृष्ट्यै नमः, श्री कीर्त्यै नमः, श्री सन्नत्यै नमः, श्री व्युष्ट्यै नमः, श्री उत्कृष्ट्यै नमः। मध्य में - **'श्री ऋद्ध्यै नमः।**

पुष्पाञ्जलि समर्पित कर मध्य में पुष्पासन की कल्पना करके ''श्री सर्व-शक्ति-कमलासनाय नमः'' इस मंत्र से समग्र पीठ का अर्चन करें।

इसके पश्चात् 'सहस्रार' में श्री गुरुदेव का ध्यान पूजन कर उनसे आज्ञा प्राप्त करके पुनः पूर्ववत् 'षडङ्ग-न्यास' करें। भगवती लक्ष्मी का ध्यान कर 'पर संवित्-स्वरूपिणी-तेजोमयी देवी, 'सर्व साम्राज्य लक्ष्मी' को नासापुट से पुष्पाञ्जलि में लाकर आह्वान करें। यथा -

ॐ देवेशि! भक्ति-सुलभे, परिवार-समन्विते!

यावत् त्वां पूजयिष्यामि, तावत् त्वं स्थिरा भव!

हिरण्य-वर्णा हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्य-मयी लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह॥

सर्वसाम्राज्य लक्ष्मी इहागच्छ, इहागच्छ, इह सन्तिष्ठ, इह सन्तिष्ठ, इह सन्निधेहि, इह सन्निधेहि, इह सन्निरुध्वस्व, इह सन्निरुध्वस्व, इह सम्मुखी भव, इह अवगुण्ठिता भव!

आवाहनादि नव मुद्राएँ दिखाकर 'अमृतीकरण' एवं 'परमीकरण' करके - ''ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायाः वाङ्-मनो-चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राण पदानि इहैवागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा।'' इस प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से लेलिहान मुद्रापूर्वक प्राण-प्रतिष्ठा करें।

इसके बाद सर्वसाम्राज्य लक्ष्मी का 'षोडशोपचार पूजन' करें।

'आवरण-अर्चन'

भगवती से अनुमति मांगकर उनके परिवार की अर्चना हेतु 'आवरणार्चन' करें।

ॐ मूलं संविन्मयि! परे देवि! परामृत रस-प्रिये।

अनुज्ञां देहि मे मातः! परिवारार्चनाय ते॥

प्रथमावरण - त्रिकोण में

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गायत्र्यै नमः। गायत्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सावित्र्यै नमः। सावत्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै नमः। सरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

प्रथमावरण का पूजन फल समर्पित करें-

ॐ अभीष्ट - सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं, प्रथमावरणार्चनम्॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु सर्वसाम्राज्य लक्ष्म्यै नमः।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

द्वितीयावरण - षट्-कोण में

४ सकलां हृदयाय नमः। हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ सकलीं शिरसे स्वाहा। शिर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ सकलूं शिखायै वषट्। शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ सकलैं कवचाय हुं। कवच श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ सकलौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ सकलः अस्त्राय फट्। अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

द्वितीयावरण अर्चन समर्पण -

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं..............द्वितीयावरणार्चनम्॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु सर्वसाम्राज्य लक्ष्म्यै नमः।

तृतीयावरण - अष्ट-दल-कमल में

४ ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ कौमार्यै नमः। कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ वाराह्यै नमः। वाराही श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ चामुण्डायै नमः। चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूर्ववत् तृतीयावरण अर्चन समर्पण

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं..............तृतीयावरणार्चनम्॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु सर्वसाम्राज्य लक्ष्म्यै नमः।

चतुरस्र में -

४ अष्टादश महाकोटि योगिनीभ्यो नमः। अष्टादश महाकोटि योगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चतुर्थावरण - भू-पुर मे पूर्वादि क्रम से-

४ लं इन्द्राय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ रं अग्नये नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ यं यमाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ क्षं निर्ऋत्ये नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ वं वरुणाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ यं वायवे नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ सं सोमाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ हं ईशानाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ आं अनन्ताय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ ह्रीं ब्रह्मणे नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूर्ववत् चतुर्थावरण अर्चन समर्पण

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं..............चतुर्थावरणार्चनम्॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु सर्वसाम्राज्य लक्ष्म्यै नमः।

पञ्चावरण - इन्द्रादि दिग्पालों के समीप -

४ वं वज्राय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

४ शं शक्त्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ दं दण्डाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ खं खड्गाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ पं पाशाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ ध्वं ध्वजाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ गं गदायै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ त्रिं त्रिशूलाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ चं चक्राय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ पं पद्माय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूर्ववत् पञ्चमावरण अर्चन समर्पण

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं............पञ्चमावरणार्चनम्॥
पूजिताः तर्पिताः सन्तु सर्वसाम्राज्य लक्ष्म्यै नमः।

पुनः देवी की पूजा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि से करके क्रमशः बटुक, योगिनी, गणेश, क्षेत्रपाल को वलि प्रदान करें।

इसके वाद भगवती का ध्यान करके मंत्र जप प्रारम्भ करें।

साधक संयतचित्त होकर यदि तीन लाख मंत्र जप करे और उसका दशांश हवन कमल द्वारा करे तो उसे साम्राज्य सिद्धि प्राप्त होती है।

दरिद्रता नाशक प्रयोग -

१. वक्षः स्थल तक गहरे जल में खड़े होकर 'सूर्य-विम्व' में लक्ष्मी का ध्यान करता हुआ साधक यदि इस मंत्र का एक अथवा तीन लाख जप करे तो वह दरिद्रता से मुक्त हो जाता है।

२. उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में श्री महालक्ष्मी का विधिवत् षोडशोपचार पूजन करके त्रिमधुयुक्त नन्द्यावर्त (तगर) के पुष्पों द्वारा एक हजार आहुतियों से हवन करने पर अथवा पूर्णमासी को त्रिमधु सहित एक हजार बिल्व फलों से या शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि को एक हजार श्वेत कमलों से या भृगुवार (शुक्रवार) को श्वेत रंग के किसी भी पुष्प द्वारा इतनी ही आहुतियों से हवन करने वाला साधक एक वर्ष में ही कुबेर के समान सम्पत्तिशाली हो जाता है।

३. यदि साधक की निजी भूमि पर पूर्णरूप से विकसित बिल्व वृक्ष हो तो उसके पञ्चाङ्गों (पत्रों, पुष्पों, फलों, शाखाओं तथा जड़ों) को त्रिमधु से युक्त कर प्रतिदिन इस मंत्र द्वारा एक हजार आठ बार हवन करे तो साधक उनचास दिनों के भीतर ही साक्षात् 'श्रीमहालक्ष्मी' का दर्शन प्राप्त करता है तथा उसके कुल में कभी भी अलक्ष्मी अथवा दरिद्रता का निवास नहीं होता है।

दारिद्र्य निवारण प्रयोग

(सौन्दर्यलहरी मंत्र-३ प्रयोग)

विनियोग :-

ॐ अस्य श्रीत्रिपुर-सुन्दरी महाविद्या शताक्षरी बीज मन्त्राणां 'अविद्या नामन्तस्तिमिर, इति तृतीय मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। 'अ' बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं। मम दारिद्र्य-निवारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः	शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः	मुखे।
श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै देवतायै नमः	हृदि।
अ बीजाय नमः	लिङ्गे।
ह्रीं शक्त्यै नमः	नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः	पादयोः।
मम दारिद्र्य निवारणार्थे जपे विनियोगाय नमः	अञ्जलौ।

	कर-न्यास	षडङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा।	शिरसे स्वाहा।
ह्रूं	मध्यमाभ्यां वषट्।	शिखायै वषट्।
ह्रैं	अनामिकाभ्यां हुं।	कवचाय हुम्।
ह्रौं	कनिष्ठकाभ्यां वौषट्।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः	कर-तल कर पृष्ठाभ्यां फट्।	अस्त्राय फट्।

ध्यान - लौहित्य निर्जित जपा कुसुमानुरागाम्, पाशांकुशौ धनुरिषूनपि धारयन्तीम्।
ताम्रेक्षणामरुण माल्य विशेष भूषाम्, ताम्बूल पूरित मुखीं त्रिपुरां नमामि॥

पञ्चोपचार पूजन - लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं आघ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः। सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र - अविद्या नामन्तस्तिमिर मिहिर द्वीप नगरी, जड़ानां चैतन्य स्तबक मकरन्द स्रुति झरी।
दरिद्राणां चिन्तामणि गुणनिका जन्म जलधौ, निमग्नानां दंष्ट्रा मुर-रिपु वराहस्य भवती॥३॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

अनुष्ठान विधि - नीचे दिए गये चित्रानुसार यंत्र का स्वर्णादि पत्र पर चन्दन द्वारा लिखकर अथवा उत्कीर्ण करवा कर विधिवत् पूजन स्थापन करके उसके मध्य में श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी का पूजन करें। इसके बाद बीजाक्षर 'अ' का निम्नवत् ध्यान करें-

केतकी पुष्प गर्भाभां, द्वि-भुजां हंस लोचनाम्।
शुक्ल पट्टाम्बरा धरां, पद्म माला विभूषिताम्।।
चतुर्वर्ग प्रदां नित्य, नित्यानन्द-मयीं पराम्।
वराभय-करां देवीं, नाग-पाश-समन्वितम्।।
श्रृणु तत्तवमकारस्य, अति-गोप्यं वरानने!
शरच्चन्द्र - प्रतीकाशं, पञ्च कोण मयं सदा।।
पञ्च देव मयं वर्ण, शक्ति द्वय समन्वितम्।
निर्गुणं सगुणोपेतं, स्वयं कैवल्य मूर्तिमान्।।
बिन्दु द्वय मयं वर्ण, स्वयं प्रकृति रूपिणी।

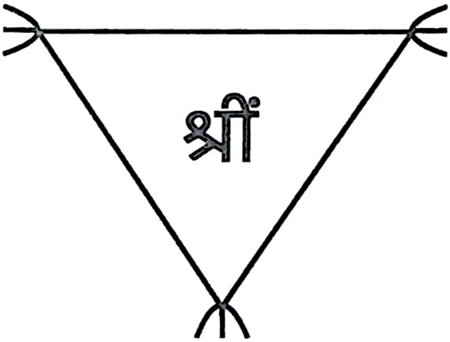

ध्यान के पश्चात् मंत्र का प्रतिदिन १००० जप (१५ अथवा ५० दिनों तक) करें। जप का दशांश हवन **'अं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'अं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन की ही संख्या में तर्पण **'अं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात पुनः १० बार मंत्र (श्लोक) का पाठ करें। फिर एक बार मंत्र बोलकर पूर्ण आहुति दें।

हवनीय द्रव - रक्त पुष्प-बिल्व, तिल, यव तथा घृत।

नैवेद्य - उड़द का पुआ।

सर्व-देव-कृतं लक्ष्मी स्तोत्रम्

नित्य प्रातः काल उठकर जो साधक इस स्तोत्र का भक्तिपूर्वक पाठ करता है उसकी समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं। इस स्तोत्र पाठ के फलस्वरूप धन-सम्पत्ति, बन्धु-बान्धव यश-कीर्ति आदि से किसी भी प्रकार वंचित हुआ व्यक्ति पुनः पूर्ववत् उसे प्राप्त कर लेता है। जीवन पर्यन्त पाठ करने वाला लौकिक भोगों को भोगकर अन्त में मोक्ष का अधिकारी होता है।

क्षमस्व भगवत्यम्ब! क्षमा-शीले परात्परे!।
शुद्ध-सत्त्व-स्वरूपे च, कोपादि परिवर्जिते।।१

उपमे सर्व - साध्वीनां, देवीनां देव - पूजिते!
त्वया विना जगत्-सर्वं, मृत तुल्यं च निष्फलम्।।२

सर्व-सम्पत् स्वरूपा त्वं, सर्वेषां सर्व-रूपिणी।
रासेश्वर्याधि-देवी त्वं, त्वत्-कलाः सर्व-योषितः।।३

कैलासे पार्वती त्वं च, क्षीरोदे सिन्धु-कन्यका।
स्वर्गे च स्वर्ग-लक्ष्मीस्त्वं, मर्त्य-लक्ष्मीश्च भू-तले।।४

वैकुण्ठे च महा-लक्ष्मीः, देव-देवी सरस्वती।
गङ्गा च तुलसी त्वं च, सावित्री ब्रह्म-लोकतः।।५

कृष्ण-प्राणाधि-देवी त्वं, गो-लोके राधिका स्वयम्।
रासे रासेश्वरी त्वं च, वृन्दावन - वने वने।।६

कृष्ण - प्रिया त्वं भाण्डीरे, चन्द्रा चन्दन - कानने।
विरजा चम्पक - वने, शत - श्रृंङ्गे च सुन्दरी।।७

पद्मावती पद्म - वने, मालती-मालती - वने।
कुन्द - दन्ती कुन्द - वने, सुशीला केतकी-वने।।८

कदम्ब-माला त्वं देवी, कदम्ब-काननेऽपि च।
राज-लक्ष्मी राज-गेहे, गृह - लक्ष्मीर्गृहे गृहे।।९

।।फल-श्रुति।।

इत्युक्त्वा देवताः सर्वे, मुनयो मनवस्तथा।
रुरुदुर्नम्र - वन्दनाः, शुष्क-कण्ठोष्क-तालुकाः।।१

इति लक्ष्मीः - स्तवं पुण्यं, सर्व - देवैः कृतं शुभम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, स वै सर्वं लभेद् ध्रुवम्।।२

अ - भार्यो लभते भार्यां, विनीतां च सुतां सतीम्।
सुशीलां सुन्दरीं रम्यामति - सुप्रिय - वादिनीम्।।३

पुत्र - पौत्रवतीं शुद्धां, कुलजां कोमलां वराम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं, वैष्णवं चिर - जीवनम्।।४
परमैश्वर्य - युक्तं च, विद्या - वन्तं यशस्विनम्।
भ्रष्ट-राज्यो लभेद् राज्यं, भ्रष्ट-श्रीर्लभते श्रियम्।।५
हृत - बन्धुर्लभेद् बन्धुं, धन - भ्रष्टो धनं लभेत्।
कीर्ति-हीनो लभेत् कीर्तिं, प्रतिष्ठां च लभेद् ध्रुवम्।।६
सर्व - मङ्गलदं स्तोत्रं, शोक-सन्ताप-नाशनम्।
हर्षानन्द - करं शश्वर्द्धम - मोक्ष - सुहृत्-प्रदम्।।७

।। सर्व-देव-कृतं लक्ष्मी-स्तोत्रम्।।

दरिद्रता-नाशक सूक्त

(ऋग्-वेद)

अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे।
शिरिन्विठस्य सत्त्वभिस्तेऽभिष्ट्वा चातयामसि।।१
चत्तो इतश्चत्तामुतः सर्वा भ्रणान्यारूषी।
अराय्यं ब्रह्मणस्पते! तीक्ष्ण - शृङ्गोदषन्निहि।।२
अदो यद्दारु प्लवते, सिन्धो पारे अपूरुषम्।
तदा रभस्व दुर्हणो, तेन गच्छ परस्तरम्।।३
यद्ध प्राचीर - जगन्तोरो मण्डूर - धाणिकीः।
हत इन्द्रस्य शत्रवः, सर्वे बुद् - बुदयाशवः।।४

'श्रीसूक्त' विधान

विनियोग :- ॐ हिरण्य-वर्णामित्यादि-पञ्चदशर्चस्य श्री सूक्तस्याद्यायाः ऋचः श्री ऋषिः, तां म आवहेति चतुर्दशानामृचां आनन्द-कर्दम-चिक्लीत-इन्दिरा-सुताश्चत्वारः ऋषयः, आद्य-मन्त्र-त्रयाणां अनुष्टुप् छन्दः, कांसोऽस्मीत्यस्याः चतुर्थ्या वृहती छनदः, पञ्चम-षष्ठयोः त्रिष्टुप् छन्दः, ततोऽष्टावनुष्टुभः, अन्त्या प्रस्तार-पंक्तिः छन्दः। श्रीरग्निश्च देवते। हिरण्य-वर्णा बीजं। ''तां म आवह जातवेद'' शक्तिः। ''कीर्तिमृद्धिं ददातु मे'' कीलकम्। मम श्रीमहालक्ष्मी -प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः

श्री आनन्द कर्दम चिक्लीत इन्दिरा सुतेभ्यः ऋषिभ्यो नमः	शिरसि।
अनुष्टुप् बृहती त्रिष्टुप् प्रस्तार पंक्ति छन्दोभ्यो नमः	मुखे।
श्रीरग्नि देवताभ्यां नमः	हृदि।
हिरण्य वर्णा बीजाय नमः	गुह्ये।
तां म आवह जातवेद शक्त्यै नमः	पादयोः।
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे कीलकाय नमः	नाभौ।
मम श्रीमहालक्ष्मी प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः	सर्वाङ्गे।

अङ्ग-न्यासः - 'श्री-सूक्त' के मन्त्रों में से एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः सिर, नेत्र, कान, नासिका, मुख, कण्ठ, दोनों बाहु, हृदय, नाभि, लिङ्ग, पायु (गुदा), उरु (जाँघ), जानु (घुटना), जङ्घा और पैरों में न्यास करें। यथा-

१. ॐ हिरण्य-वर्णा हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥ - शिरसि।

२. ॐ तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्॥ - नेत्रयोः।

३. ॐ अश्व पूर्वा रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ - कर्णयोः।

४. ॐ कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्ती।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णा तामिहोपह्वये श्रियम्॥ - नासिकायाम्।

५. ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥- मुखे।

६. ॐ आदित्य वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुन्दतु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥- कण्ठे।

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

७. ॐ उपैतु मां देव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादूर्भुतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे॥ - बाह्वोः।

८. ॐ क्षुत्-पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहं।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्॥ - हृदये।

९. ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्। - नाभौ।

१०. ॐ मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ - लिङ्गे।

११. ॐ कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भव - कर्दम!
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम्॥ - पायौ।

१२. ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ - उर्वोः।

१३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीं।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥ - जान्वोः।

१४. ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥ - जङ्घयोः।

१५. ॐ तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥- पादयोः।

कर-न्यासः - **ॐ हिरण्य-मय्यै नमः** - अंगुष्ठाभ्यां नमः। **ॐ चन्द्रायै नमः** - तर्जनीभ्यां नमः। **ॐ रजत-स्रजायै नमः** - मध्यमाभ्यां नमः। **ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः** - अनामिकाभ्यां नमः। **ॐ हिरण्यायै नमः** - कनिष्ठकाभ्यां नमः। **ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः** - करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यासः - **ॐ हिरण्य-मय्यै नमः** - हृदयाय नमः। **ॐ चन्द्रायै नमः** - शिरसे स्वाहा। **ॐ रजत-स्रजायै नमः** - शिखायै वषट्। **ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः** - कवचाय हुम्। **ॐ हिरण्यायै नमः** - नेत्रत्रयाय वौषट्। **ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः** - अस्त्राय फट्।

दिग्-बन्धन - **'ॐ भूभुर्वः स्वरोम्'** से दिग्-बन्धन करें।

ध्यान -**या सा पद्मासनस्था विपुल-कटि-तटी पद्म-पत्रायताक्षी,**
गम्भीरावर्त्त-नाभि-स्तन-भार-नमिता शुभ्र-वस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गन्ध-मणि-गण-खचितैः स्नापिता हेम कुम्भैः,
नित्सं सा पद्म-हस्ता मम वसतु गृहे सर्व-माङ्गल्य-युक्ता॥
अरुण-कमल-संस्था, तद्रजः - पुञ्ज - वर्णा,
कर - कमल-धृतेष्टाभीति-युग्माम्बुजा च।

मणि-मुकुट-विचित्राऽलङ्कृता कल्प - जालैः,

सकल-भुवन-माता, सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

इस प्रकार ध्यान करके **भगवती लक्ष्मी** का '**मानसोपचार पूजन** करें। यथा - **१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्री महा-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्री महा-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्री महा-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्री महा-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवद्यं श्री महा-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्री महा-लक्ष्मी श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि** (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

अब सर्व-देवोपयोगी पद्धति से अर्घ्य एवं पाद्य-आचमनीय आदि पात्रों की स्थापना करके पीठ-पूजन करें।

'**सर्वतोभद्र-मण्डल**' आदि पर निम्न '**पूजन-यन्त्र**' की स्थापना करके मण्डूकादि-पर' तत्त्वान्त देवताओं की पूजा करें। तत्पश्चात् पूर्वादि-क्रम से **भगवती लक्ष्मी की पीठ शक्तियों** की अर्चना करें। यथा -

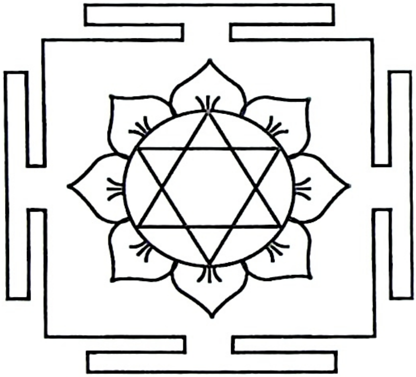

श्री विभूत्यै नमः, श्री उन्नत्यै नमः, श्री कान्त्यै नमः, श्री सृष्ट्यै नमः, श्री कीर्त्यै नमः, श्री सन्नत्यै नमः, श्री व्युष्ट्यै नमः, श्री उत्कृष्ट्यै नमः।

पाद्य - **ॐ कांसोस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**

पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै पाद्यं कल्पयामि नमः॥

चरण-कमलों में 'पाद्य' समर्पित करके प्रणाम करें।

आचमनीय -**ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्।**

तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

॥ श्री महा-लक्ष्म्यै आचमनीयं कल्पयामि नमः॥

मुख में 'आचमन' प्रदान करके प्रणाम करें।

मधु-पर्क -

ॐ आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै मधुपर्कं कल्पयामि स्वधा। पुनराचमनीयम् कल्पयामि॥

पुनः 'आचमन' समर्पित करें।

स्नान- (सुगन्धित द्रव्यों से उद्वर्तन करके 'स्नान' करायें) -

ॐ उपैतु मां देव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादूर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै स्नानं कल्पयामि नमः॥

'स्नान' कराकर केशादि मार्जन करने के बाद वस्त्र प्रदान करें। इसके पूर्व पुनः 'आचमन' करायें।

वस्त्र -

ॐ क्षुत्-पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद् मे गृहात्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै वाससी परिकल्पयामि नमः॥

पुनः 'आचमन' करायें।

आभूषण -

ॐ गन्धा-द्वारां दुराधर्षां, नित्य पुष्टं करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै सुवर्णानि भूषणानि कल्पयामि॥

गन्ध -

ॐ मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि!
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै गन्धं समर्पयामि नमः॥

पुष्प -

ॐ कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भव-कर्दम!
श्रियं वासय मे गृहे, मातरं पद्म-मालिनीम्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै एतानि पुष्पाणि वौषट्॥

धूप -

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं, श्रियं वासय मे कुले॥
ॐ वनस्पति-रसोद्भूतः, गन्धाढ्यो गन्धः उत्तम। आघ्रेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै धूपं आघ्रापयामि नमः॥

दीप -

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह॥
ॐ सुप्रकाशो महा-दीपः, सर्वतः तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तर-ज्योतिः, दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै प्रदीपं दर्शयामि नमः॥

'दीपक' दिखाकर प्रणाम करे। पुनः 'आचमन' कराए।

नैवेद्य - देवी के समक्ष **'चतुरस्र-मण्डल'** बनाकर उस पर **'त्रिपादिका-आधार'** स्थापित करे। षट्-रस व्यञ्जन-युक्त **'नैवेद्य-पात्र'** उस आधार पर रखें। **'वायु-बीज' (यं)** से नैवेद्य के दोषों को सुखाकर, **अग्नि-बीज' (रं)** से उसका दहन करे। **'सुधा बीज' (वं)** से नैवेद्य का अमृतीकरण करें। बांऐ हाथ के अंगूठे से **'नैवेद्य-पात्र'** को स्पर्श करते हुए दाहिने हाथ में सुसंस्कृत अमृत-मय जल-पात्र लेकर **'नैवेद्य'** समर्पित करें -

ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह॥
ॐ सत्पात्र-सिद्धं सुहविः, विविधानेक-भक्षणम्।
नैवेद्यं निवेदयामि, सानुगाय गृहाण तत्॥
॥ श्री महा-लक्ष्म्यै नैवेद्यं निवेदयामि नमः॥

चुलुकोदक (दाई हथेली में जल) से 'नैवेद्य' समर्पित करें।

दूसरे पात्र में 'अमृतीकरण' जल लेकर **''ॐ हिरण्य-वार्णाम्''**- इस प्रथम ऋचा का पाठ करके-**''श्री महा-लक्ष्म्यै अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा''। श्री महा-लक्ष्मि! अपोशनं कल्पयामि स्वाहा।**

तत्पश्चात् **''प्राणाय स्वाहा''** आदि का उच्चारण करते हुए **'पञ्च प्राण-मुद्राएँ'** दिखायें। **''हिरण्य-वर्णाम्''**- इस प्रथम ऋचा का दस बार पाठ करके समर्पित करें। फिर **'उत्तरापोशन'** कराएँ। **'नैवेद्य-मुद्रा'** दिखाकर प्रणाम करें। **'नैवेद्य-पात्र'** को ईशान या उत्तर दिशा में रक्खें। नैवेद्य-स्थान को जल से साफ कर ताम्बूल प्रदान करें।

ताम्बूल -

ॐ तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥
॥ श्री महा-लक्ष्मि! ऐं हं हं हं इदम् ताम्बूलं गृहाण, स्वाहा॥

'ताम्बूल' देकर प्रणाम करें।

आवरण-पूजा

भगवती से उनके परिवार की अर्चना हेतु अनुमति माँग कर 'आवरण-पूजा' करें। यथा-

ॐ संविन्मयि! परे देवि! परामृत-रस-प्रिये! अनुज्ञां देहि मे मातः! परिवारार्चनाय ते॥

प्रथम आवरण-षट्कोणों में 'षडङ्ग-शक्तियों' का पूजन करें-

१. हिरण्य-मय्यै नमः हृदयाय नमः। हृदय-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२. चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा। शिरः-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३. रजत-स्रजायै नमः शिखायै वषट्। शिखा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४. हिरण्य-स्रजायै नमः कवचाय हुम्। कवच-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

५. हिरण्यायै नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६. हिरण्य-वर्णायै नमः अस्त्राय फट्। अस्त्र-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

प्रथम आवरण की पूजा कर फल भगवती को समर्पित करें। यथा-

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं,प्रथमावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा-लक्ष्म्यै नमः।

'पुष्पाञ्जलि' प्रदान करें।

द्वितीय आवरण-पत्रों में पूर्व से प्रारम्भ करके वामावर्त-क्रम से **'पद्मा, पद्म-वर्णा, पद्मस्था, आर्द्रा, तर्पयन्ती, तृप्ता, ज्वलन्ती,** एवं **'स्वर्ण-प्राकारा'** का पूजन-तर्पण करें। यथा -

१. पद्मायै नमः। पद्मा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२. पद्म-वर्णायै नमः। पद्म-वर्णा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३. पद्मस्थायै नमः। पद्मस्था-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४. आर्द्रायै नमः। आर्द्रा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

५. तर्पयन्त्यै नमः। तर्पयन्ती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

६. तृप्तायै नमः। तृप्ता-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

७. ज्वलन्त्यै नमः। ज्वलन्ती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

८. स्वर्ण-प्राकारायै नमः। स्वर्ण-प्राकारा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

द्वितीय आवरण की पूजन-फल भगवती को समर्पित करके तृतीय आवरण पूजन करें। यथा-

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम्॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा-लक्ष्म्यै नमः॥

तृतीय आवरण–भू–पुर में इन्द्र आदि दिक्–पालों का पूजन–तर्पण करें। यथा–

लं इन्द्राय नमः – पूर्वे। **रं अग्नये नमः** – अग्नि–कोणे। **यं यमाय नमः** – दक्षिणे। **क्षं निर्ऋत्ये नमः** – नैर्ऋत–कोणे। **वं वरुणाय नमः** – पश्चिमे। **यं वायवे नमः** – वायु–कोणे। **सं सोमाय नमः** – उत्तरे। **हां ईशानाय नमः** – ईशान–कोणे। **आं ब्रह्मणे नमः** – इन्द्र और ईशान के बीच। **ह्रीं अनन्ताय नमः** – वरुण और निऋति के बीच।

पूर्ववत् तृतीय आवरण–अर्चन भगवती को समर्पित करें। यथा–

ॐ अभीष्ट–सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, तृतीयावरणार्चनम्॥
पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा–लक्ष्म्यै नमः॥

चतुर्थ आवरण–इन्द्रादि दिक्–पालों के समीप ही उनके 'वज्र' आदि आयुधों का अर्चन करें। यथा–

वं वज्राय नमः। **शं** शक्त्यै नमः। **दं** दण्डाय नमः। **खं** खड्गाय नमः। **पं** पाशाय नमः। **ध्वं** ध्वजाय नमः। **गं** गदायै नमः। **पं** पद्माय नमः। **चं** चक्राय नमः।

पूर्ववत् चतुर्थ आवरण–अर्चन भगवती को समर्पित करें। यथा–

ॐ अभीष्ट–सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, चतुर्थावरणार्चनम्॥
पूजिताः तर्पिताः सन्तु महा–लक्ष्म्यै नमः॥

प्रथम–ऋचा से **कर्णिका** में **महा–देवी महा–लक्ष्मी** का **पुष्प–धूप–गन्ध, दीप** और **नैवेद्य आदि उपचारों से पुनः** पूजन करें।

तत्पश्चात् पूजा–यन्त्र में देवी के समक्ष **गन्ध–पुष्प–अक्षत** से **भगवती के 32 नामों से पूजन–तर्पण** करें।

१. ॐ श्रियै नमः। श्री–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२. ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३. ॐ वरदायै नमः। वरदा–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४. ॐ विष्णु–पत्न्यै नमः। विष्णु–पत्नी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५. ॐ वसु–प्रदायै नमः। वसु–प्रदा–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
६. ॐ हिरण्य–रूपिण्यै नमः। हिरण्य–रूपिणी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
७. ॐ स्वर्ण–मालिन्यै नमः। स्वर्ण–मालिनी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८. ॐ रजत–स्रजायै नमः। रजत–स्रजा–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
९. ॐ स्वर्ण–गृहायै नमः। स्वर्ण–गृहा–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१०. ॐ स्वर्ण–प्राकारायै नमः। स्वर्ण–प्राकारा–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

११. ॐ पद्म-वासिन्यै नमः। पद्म-वासिनी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१२. ॐ पद्म-हस्तायै नमः। पद्म-हस्ता-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१३. ॐ पद्म-प्रियायै नमः। पद्म-प्रिया-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१४. ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः। मुक्तालङ्कारा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१५. ॐ सूर्यायै नमः। सूर्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१६. ॐ चन्द्रायै नमः। चन्द्रा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१७. ॐ बिल्व-प्रियायै नमः। बिल्व-प्रिया-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१८. ॐ ईश्वर्यै नमः। ईश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१९. ॐ भुक्त्यै नमः। भुक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२०. ॐ प्रभुक्त्यै नमः। प्रभुक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२१. ॐ विभूत्यै नमः। विभूति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२२. ॐ ऋद्ध्यै नमः। ऋद्धि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२३. ॐ समृद्ध्यै नमः। समृद्धि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२४. ॐ तुष्ट्यै नमः। तुष्टि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२५. ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२६. ॐ धनदायै नमः। धनदा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२७. ॐ धनेश्वर्यै नमः। धनेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२८. ॐ श्रद्धायै नमः। श्रद्धा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२९. ॐ भोगिन्यै नमः। भोगिनी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३०. ॐ भोगदायै नमः। भोगदा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३१. ॐ धात्र्यै नमः। धात्री-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३२. ॐ विधात्र्यै नमः। विधात्री-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

भगवती के उर्पयुक्त 32 नामों से पूजन-तर्पण करने के पश्चात् 'श्री-सूक्त' की पन्द्रह ऋचाओं से नीराजन करके प्रदक्षिणा करें। इसके बाद भगवती को पुष्पाञ्जलि समर्पित कर पुनः न्यास करके 'श्री-सूक्त' का पाठ करें। पाठ के अनन्तर 'क्षमापन-स्तोत्र' का पाठ करके भगवती के बांये हाथ में पाठ एवं पूजन का फल समर्पित कर उनका विसर्जन करें।

विशेष - पुरश्चरण काल में और उसके पश्चात् भी प्रतिदिन सूर्योदय काल में जलाशय में स्नान करके सूर्य-मण्डलस्था भगवती महालक्ष्मी का उपर्युक्त ३२ नामों द्वारा तर्पण करना, साधना का अनिवार्य अंग होने के कारण, साधक को इसे अवश्य करना चाहिए।

पुरश्चरण विधान - किसी भी श्रेष्ठ एवं शुभ मास में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ कर एकादशी पर्यन्त (११ दिनों में) 'श्री-सूक्त' का पुरश्चरण करने का विधान है। इसके लिए 'श्री-सूक्त' का बारह हजार पाठ किया जाना चाहिए।

(प्रपञ्चसार प० १२, श्लो० ४३- **"एकादश्यां परिसमाप्यार्क साहस्रिकान्तम्।"**)

उक्त ११ दिनों में 'श्री-सूक्त' की बारह हजार आवृत्तियाँ पूर्ण करना असम्भव ही नहीं अशक्य भी है। इसे स्पष्ट करते हुए 'श्री श्री विद्यार्णव-तन्त्र' (श्वास २२, श्लोक १८) में कहा गया है कि यहाँ जो बारह हजार आवृत्तियों की बात कही गयी है, उसका तात्पर्य सम्पूर्ण 'श्री-सूक्त' की बारह हजार आवृत्तियों से न होकर ऋचाओं की बारह हजार आवृत्ति से है। सम्पूर्ण 'श्री-सूक्त' की आठ सौ बार आवृत्ति करने पर (१५गुना ८००=१२०००) बारह हजार की संख्या पूर्ण हो जाती है।

इस विधि में प्रथम आठ दिनों तक प्रतिदिन तिहत्तर (७३) पाठ तथा बाद के तीन दिनों में प्रतिदिन बहत्तर (७२) पाठ 'श्री-सूक्त' के करने होंगे।

हवन - एकादशी को पाठ सम्पूर्ण कर द्वादशी तिथि को हवन करना चाहिए।

हवन सामग्री- (१) त्रिमधु (घृत, शहद, शर्करा)-प्लुत पद्म (२) बिल्व-समिध (३) क्षीरान्न (खीर) और (४) सर्पिष। इन चारों पदार्थों से पृथक-पृथक तीन-तीन सौ आहूतियाँ प्रदान कर (इस प्रकार १२०० आहुतियों द्वारा) हवन करें।

'श्री-सूक्त' की बीस-बीस आवृत्तियों द्वारा प्रत्येक पदार्थ से पृथक-पृथक हवन करने से प्रत्येक द्रव्य की तीन सौ तथा कुल आहुति संख्या बारह सौ हो जाती है।

ब्राह्मण-भोजन - हवन के पश्चात् उसी दिन ही सत्पात्र, सदाचारी एवं लक्ष्मी-भक्त १२ ब्राह्मणों को सदक्षिणा भोजन करायें। गुरू देव तथा अन्य सहयोगी ब्राह्मणों को भी यथा शक्ति दक्षिणादि देकर सन्तुष्ट करें।

।। श्री-सूक्त के विभिन्न प्रयोग।।

१. 'श्री-सूक्त' की पन्द्रह ऋचाओं एवं भगवती लक्ष्मी के उपर्युक्त ३२ नामों से प्रतिदिन छ मास तक घी द्वारा हवन करने से भगवती लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

२. 'शुक्ल-पक्ष' की प्रतिपदा से प्रारम्भ कर प्रतिदिन 'कांसोस्मीति०' इस ऋचा का १०८ वार जप तथा घी से ११ वार हवन करें। इस क्रिया को छः मास तक करने से अपार सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

३. प्रतिदिन स्नान के पश्चात् 'श्री-सूक्त' के मंत्रों से जल ग्रहण कर उसे तीन बार 'श्री-सूक्त' से ही अभिमंत्रित स्वयं का तीन बार अभिपिञ्चन करें। इसके बाद सूर्याभिमुख होकर सूक्त का तीन बार जप करें। पुनः तीन बार तर्पण करें। सूर्य-नारायण की अर्चना करके हविष्यान्न से हवन करें। इस प्रकार छः मास में महती लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

४. प्रत्येक शुक्रवार को अधखिले १०८ कमल लाकर उनमें मक्खन भरकर अन्तिम (१५वीं) ऋचा का पाठ करते हुए इन कमलों से हवन करें। ४४ शुक्रवारों तक यह क्रिया करने से चञ्चला लक्ष्मी अचञ्चला होकर गृह में निवास करती है।

विशेष नियम - पुरश्चरण अथवा प्रयोग काल में साधक को शुद्ध-श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिए। शरीर पर हल्दी का लेपन न करें। द्रोण-पुष्प, कमल पुष्प तथा बिल्व-पुष्प धारण न करें। नग्न होकर जल में प्रवेश (स्नान) न करें। शुद्ध एवं स्वच्छ शय्या पर शयन करें। उच्छिष्ट मुख तथा शरीर पर तेल लगाकर जप-पूजन नहीं करना चाहिए। नीच व्यक्तियों के स्पर्श-सम्पर्क से दूर रहना चाहिए।

विशेष - श्री-सूक्त की प्रत्येक ऋचा का विस्तृत पृथक-पृथक प्रयोग विधान हमारी पुस्तक 'लक्ष्मी प्रत्यंगिरा प्रयोग' में दिया गया है।

श्री-सूक्तम्

ॐ हिरण्य - वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥१
तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्॥२
अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्॥३
कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥४
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥५
आदित्य वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६
उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७
क्षुत्पिपासामनलां ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्॥८
गन्ध - द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥९
मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०
कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भव - कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म - मालिनीम्॥११
आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च - देवीं मातरं श्रियं वास मे कुले॥१२
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म - मालिनीम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥१३
आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम - मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह॥१४
तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥१५

॥ फल-श्रुति॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्च - दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत्॥१६

शीघ्र विपुल सम्पत्ति प्राप्ति-प्रयोग

दो या दो से अधिक मंत्रों को परस्पर सम्पुटित या गर्भित कर एक मंत्र के रूप में उनका जप करना शीघ्र एवं श्रेष्ठ फलदायी होता है। प्रस्तुत विधि में 'नर्वाण-मंत्र', श्री दुर्गा सप्तशती अध्याय चार का सत्रहवाँ (दुर्गे स्मृता०) मंत्र, 'श्री-सूक्त' का कांसोस्मितां०' मंत्र तथा 'यदंति यच्च०' मंत्र का समायोजन कर एक मंत्र का रूप दिया गया है। नर्वाण-मंत्र द्वारा सम्पुटित होने के कारण श्री भगवती दुर्गा के तीनों रूपों महालक्ष्मी, महाकाली तथा महा सरस्वती की शक्तियों से समन्वित इस मंत्र का अति विशिष्ट प्रभाव है। इसके जप से सम्पत्ति अर्जन ही नहीं चतुर्विध पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की भी सिद्धि होती है।

इसके अतिरिक्त यदि मनुष्य 'दुर्गे स्मृता०' मंत्र को श्री-सूक्त की प्रत्येक ऋचा द्वारा सम्पुटित कर पाठ एवं हवन ही करे तो भी भगवती महालक्ष्मी एवं पराम्बा दुर्गा की असीम कृपा प्राप्त होती है।

मंत्र - **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारमार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्ती पद्मे स्थितां पद्मवर्णान्तामिहोपह्वये श्रियम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गे स्मृताहरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह। पवमान वितज्जहि। दारिद्र्यदुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयन्ती पद्मस्थितां पद्मम् वर्णा तामिहोपह्वयेश्रियम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।**

विनियोग - **दुर्गे स्मृता इति मन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः। उष्णिक् छंदः। श्रीमहामाया देवता। शाकम्भरी शक्तिः। दुर्गा बीजम्। श्रीं वायुस्तत्त्वम्। मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यास - **ॐ हिरण्यगर्भ ऋषये नमः** - शिरसि। **उष्णिक् छन्दसे नमः** - मुखे। **श्रीमहामाया देवतायै नमः** - हृदि। **शाकम्भरी शक्त्यै नमः** - दक्षिण स्तने। **दुर्गा बीजाय नमः** - वामस्तने। **श्रीं वायुतत्त्वाय नमः** - हृदि। **विनियोगाय नमः** -सर्वाङ्गे।

कर-न्यास - **ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः अंगुष्ठाभ्यां नमः। स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि तर्जनीभ्यां नमः। यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह मध्यमाभ्यां नमः। पवमानवितज्जहि अनामिकाभ्यां नमः। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वोपकारकणाय सदार्द्रचित्ता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

षडङ्ग-न्यास - **ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः हृदयाय नमः।**
ॐ स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि शिरसे स्वाहा।
ॐ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह शिखायै वषट्।
पवमान वितज्जहि कवचाय हुम्।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या नेत्रत्रयाय वौषट्।
सर्वोपकारकणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता अस्त्राय फट्।

ध्यानम् - **सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैचतुर्भिर्भुजैः**
शङ्खं चक्रधनुः शरांश्च दधतीं नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहार कङ्कण रणत्काञ्ची रणन्नूपुरा
दुर्गादुर्गतिहारिणि भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य योनिमुद्रया नत्वा जपं कुर्य्यात्। महत्कार्ये लक्षमयुतं सहस्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सकलकार्य्यसिद्धिर्भवतु दशांशक्षीराज्यहवनं दशांशशतर्पणमार्जनसुवासिनी ब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्।

इस प्रकार भगवती दुर्गा का ध्यान करके मानसोपचार पूजन करें। पूजनोपरान्त योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करके जप प्रारम्भ करें। सामान्य कर्म हेतु एक हजार अथवा एक सौ आठ बार मंत्र का जप करना चाहिए। किसी विशेष महान व दुष्कर कार्य-सिद्धि के लिए एक लाख अथवा दस हजार जप करना चाहिए। जप का दशांश खीर तथा घृत से हवन करना चाहिए। इसी प्रकार तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा सुहागिन स्त्रियों एवं ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

टिप्पणी - श्रीसूक्त एवं दुर्गे स्तृता0 मंत्र का विस्तृत प्रयोग विधान ''श्री लक्ष्मी-प्रत्यंगिरार्चनम्'' में दिया गया है।

श्री लक्ष्मी कृपा-प्रदायक सिद्ध स्तोत्र

श्री विष्णु पुराणोक्त देवराज इन्द्र कृत 'लक्ष्मी स्तुति' (स्तोत्र) का विशेष महत्व है। इस स्तोत्र का प्रतिदिन प्रातः सायं पाठ करने से शीघ्र ही 'दारिद्र्य' का नाश होकर भगवती लक्ष्मी की कृपा से धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, तथा उसके कुल में भी लक्ष्मी, अचला होकर निवास करती है।

प्रयोग विधि- एक कांसे की थाली में अष्ट दल कमल अंकित करके उसके मध्य में प्रज्जवलित दीपक स्थापित करें। दीप शिखा में भावना द्वारा 'श्रीलक्ष्मी' का आवाहन कर पञ्चोपचार पूजन करें। इसके बाद एक निश्चित संख्या में पाठ का संकल्प लेकर स्तोत्र पाठ करें। पुरश्चरण के लिए इस स्तोत्र की एक लाख आवृत्ति करनी चाहिए।

विशेष - प्रतिदिन इस स्तोत्र का सोलह पाठ करें तो छः माह के भीतर श्रीलक्ष्मी की कृपा प्राप्ति का चमत्कार देखने को मिल सकता है। 'अनुभूत'।

॥ पराशर उवाच॥

सिंहासन - गतः शक्रः, सम्प्राप्य त्रि-दिवं पुनः।
देव -राज्ये स्थितो देवीं, तुष्टावाब्ज-करां ततः॥

॥ इन्द्र उवाच॥

नमस्ते सर्व - भूतानां, जननीमब्धि - सम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्र-पद्माक्षीं, विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिताम्॥
पद्मालयां पद्म - करां, पद्म - पत्र - निभेक्षणाम्।
वन्दे पद्म - मुखीं देवीं, पद्म - नाभ - प्रियामहम्॥
त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा, सुधा त्वं लोक पावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती॥
यज्ञ - विद्या महा - विद्या, गुह्य - विद्या च शोभने!
आत्म-विद्या च देवि! त्वं, विमुक्ति-फल-दायिनी॥
आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता, दण्ड-नीतिस्त्वमेव च।
सौम्या सौम्यं जगद् - रूपं त्वयैतद् देवि! पूरितम्॥
का त्वदन्या त्वामृते देवि!, सर्व- यज्ञ - मयं वपुः।
अध्यास्ते देव - देवस्य, योगि - चिन्त्यं गदा-भृतः॥
त्वया देवि! परित्यक्तं, सकलं भुवन - त्रयम्।
विनष्ट - प्रायमभवत्, त्वयेदानीं समेधितम्॥
दाराः पुत्रास्तथाऽऽगार - सुहृद्धान्य - धनादिकम्।
भवत्येतन्महा - भागे!, नित्यं त्वद् - वीक्षणान्नृणाम्॥
शरीरारोग्यमैश्वर्यमरि - पक्ष - क्षयः सुखम्।
देवि! त्वद्-दृष्टि-दृष्टानां, पुरुषाणां न दुर्लभम्॥

त्वमम्बा सर्व - भूतानां, देव - देवो हरिः पिता।
त्वयैतद् विष्णुना चाम्ब!, जगद् व्याप्तं चराचरम्॥
मा नः कोशं तथा गोष्ठं, मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च, त्यजे सर्वथा पावनि!॥
मा पुत्रान् मा सुहृद्-वर्गान्, मा पशून् मा विभूषणम्।
त्यजेथा मम देवस्य, विष्णोर्वक्षः - स्थलाश्रये!॥
सत्त्वेन सत्य - शौचाभ्यां, तथा शीलादिभिर्गुणैः।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः, सन्त्यक्ता ये त्वयामले!॥
त्वयाऽवलोकिताः सद्यः, शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते, पुरुषा निर्गुणा अपि॥
स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः, स कुलीनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो, यस्त्वया देवि! वीक्षितः॥
सद्यो वैगुण्यमायान्ति, शीलाद्याः सकला गुणाः।
पराङ्मुखी जगद्धात्री, यस्य त्वं विष्णु-वल्लभे!॥
न ते वर्णयितुं शक्ता, गुणान् जिह्वाऽपि वेधसः।
प्रसीद देवि पद्माक्षि!, नास्मांस्त्याक्षीः कदाचन॥

॥ पाराशर उवाच॥

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक्, प्राह हृष्टा शत-क्रतुम्।
शृण्वतां सर्व - देवानां, सर्व - भूत - स्थिता द्विज!॥

॥ श्रीरुवाच॥

परितुष्टाऽस्मि देवेश!, स्तोत्रेणानेन ते हरे!।
वरं वृणीष्व योऽभीष्टः, वरदाऽहं तवागता॥

॥ इन्द्र उवाच॥

वरदा यदि मे देवि!, वरार्हो यदि वाऽप्यहम्।
त्रैलोक्यं न त्वया त्जाज्यमेष मेऽस्तु वरः परः॥
स्तोत्रेण यस्तवैतेन, त्वां स्तोष्यत्यब्धि-सम्भवे!।
स त्वया न परित्याज्यो, द्वितीयोऽस्तु वरो मम॥

॥ श्रीरुवाच॥

त्रैलोक्यं त्रिदश - श्रेष्ठ!, न सन्त्यक्ष्यामि वासव!।
दत्तो वरो मायाऽयं ते, स्तोत्राराधन - तुष्टया॥
यश्च सायं तथा प्रातः, स्तोत्रेणानेन मानवः।
मां स्तोष्यति न तस्याऽहं, भविष्यामि पराङ्मुखी॥

॥ पराशर उवाच॥

एवं वरं ददौ देव - राजाय वै पुरा।
मैत्रेय श्रीर्महा - भागा, स्तोत्राराधन - तोषिता॥

भृगोः ख्यात्यां समुत्पन्ना, श्रीः पूर्वमुदधेः पुनः।
देव - दानव - यत्नेन, प्रस्तूताऽमृत - मन्थने॥
एवं यथा जगत् - स्वामी, देव - राजो जनार्दनः।
अवतारं करोत्येषा, तथा श्रीस्तत् - सहायिनी॥
पुनश्च पद्म - सम्भूता, तथाऽऽदित्योऽभवद्धरिः।
यदा च भार्गवो रामस्तदाऽभूद् धरणी त्वियम्॥
राघवत्वेऽभवत् सीता, रुक्मिणी कृष्ण-जन्मनि।
अन्येषु चावतारेषु, विष्णोरेषाऽन - पायिनी॥
देवत्वे देव - देहेयं, मानुषत्वे च मानुषी।
विष्णोर्देहानुरूपां वै, करोत्येषाऽऽत्मनस्तनुम्॥
यश्चैतच्छृणुयाज्जन्म, लक्ष्म्या यश्च पठेन्नरः।
श्रियो न विच्युतिस्तस्य, गृहे यावत् कुल-त्रयम्॥
पठ्यते येषु चैवैष, गृहेषु श्री - स्तवो मुने!।
अलक्ष्मीः कलहाधारा, न तेष्वास्ते कदाचन॥
एतत्ते कथितं ब्रह्मन्! यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
क्षीराब्धौ श्रीर्यथा जाता, पूर्वं भृगु-सुता सती॥

॥ फल-श्रुतिः॥

इति सकल-विभूत्यवाप्ति-हेतुः, स्तुतिरियमिन्द्र-मुखोद्गता हि लक्ष्म्याः।
अनुदिनमिह पठ्यते नृभिर्यैः, वसति न तेषु कदाचिदप्यलक्ष्मीः॥

श्री महालक्ष्मी-ललिता स्तोत्रम्

यह 'श्री महालक्ष्मी-ललिता' स्तोत्र स्वयं के पाठ अथवा श्रवण मात्र से ही साधक की समस्त विपत्तियों का समूल विनाश कर उसे चतुर्विध पुरुषार्थों को प्रदान करने वाला है।

॥ ध्यानम्॥

"चक्राकारं महत्तेजः, तन्मध्ये परमेश्वरी
जगन्माता जीव - दात्री, नारायणी परमेश्वरी॥१॥
व्यूह - तेजो - मयी ब्रह्मानन्दिनी हरि - सुन्दरी।
पाशांकुशेक्षु-कोदण्ड, पद्म-माला-लसत्करा"॥२॥
दृष्ट्वा तां मुमुहुर्देवाः, प्रणेमुर्विगत-ज्वराः।
तुष्टुवुः श्रीमहा-लक्ष्मीं, ललितां वैष्णवीं पराम्॥३॥

॥ श्रीदेवाः ऊचुः॥

जय लक्ष्मि जगन्मातः!, जय लक्ष्मि परात्परे!।
जय कल्याण-निलये!, जय सर्व-कलात्मिके!॥१॥
जय ब्राह्मि! महा-लक्ष्मि!, ब्रह्मात्मिके! परात्मिके!।
जय नारायणि! शान्ते!, जय श्रीललिते! रमे!॥२॥
जय श्रीविजये! देवीश्वरि! श्रीदे! जयर्द्धिदे!।
नमः सहस्र - शीर्षायै, सहस्रानन - लोचने!॥३॥
नमः सहस्र हस्ताब्ज - पाद - पङ्कज - शोभिते!।
अणोरणुतरे लक्ष्मि!, महतोऽपि महीयसि॥४॥
अतलं ते स्मृतौ पादौ, वितलं जानुनी तव।
रसातलं कटिस्ते च, कुक्षिस्ते पृथिवी मता॥५॥
हृदयं भुवः स्वस्तेऽस्तु, मुखं सत्यं शिरो मतम्।
दृशश्चन्द्रार्क-दहना, दिशः कर्णा भुजः सुराः॥६॥
मरुतस्तु तवोच्छ्वासा, वाचस्ते श्रुतयो मताः।
क्रीडा ते लोक-रचना, सखा ते परमेश्वरः॥७॥
आहारस्ते सदानन्दो, वासस्ते हृदयो हरेः।
दृश्यादृश्य-स्वरूपाणि!, रूपाणि भुवनानि ते॥८॥
शिरोरुहा घनास्ते वै, तारकाः कुसुमानि ते।
धर्माद्या बाहवस्ते च, कालाद्या हेतयस्तव॥९॥
यमाश्च नियमाश्चापि, कर-पाद-नखास्तव।
स्तनौ स्वाहा-स्वधाकारौ, सर्व-जीवन -दुग्धदौ॥१०॥
प्राणायामस्तव श्वासो, रसना ते सरस्वती।
महीरुहास्तेऽङ्कुरुहाः, प्रभातं वसनं तव॥११॥

आदौ. दया धर्म - पत्नी, ससर्ज निखिलाः प्रजाः।
हृत्स्था त्वं व्यापिनी लक्ष्मीः, मोहिनी त्वं तथा परा॥१२॥
इदानीं दृश्यसे ब्राह्मी, नारायणी प्रियङ्करी।
नमस्तस्यै महा-लक्ष्म्यै, गज-मुख्यै नमो नमः॥१३॥
सर्व-शक्त्यै सर्व-धात्र्यै, महा-लक्ष्म्यै नमो नमः।
या ससर्ज विराजं च, ततोऽजं विष्णुमीश्वरम्॥१४॥
रुद्रं तथा सुराग्रयाँश्च, तस्यै लक्ष्म्यै नमो नमः।
त्रिगुणायै निर्गुणायै, हरिण्यै ते नमो नमः॥१५॥
यन्त्र - तन्त्रात्मिकायै ते, जगन्मात्रे नमो नमः।
वाग्विभूत्यै गुरु-तन्व्यै, महा-लक्ष्म्यै नमो नमः॥१६॥
कम्भरायै सर्व - विद्याभरायै ते नमो नमः।
जया-ललिता-पाञ्चाली, रमा-तन्वै नमो नमः॥१७॥
पद्मावती - रमा - हंसी, सु - गुणाऽऽज्ञाश्रियै नमः।
नमः स्तुता प्रसन्नैवंछन्दयामास सद्वरैः॥१८॥

॥ फल-श्रुति-श्री लक्ष्मी उवाच॥

स्तावका मे भविष्यन्ति, श्री - यशो - धर्म - सम्भृताः।
विद्या - विनय - सम्पन्ना, निरोगा दीर्घ-जीविनः॥१॥
पुत्र - मित्र - कलत्राढ्या, भविष्यन्ति सु-सम्पदः।
पठनाच्छ्रवणादस्य, शत्रु-भीतिर्विनश्यति॥२॥
राज-भीतिः कदनानि, विनश्यन्ति न संशयः।
भुक्तिं मुक्तिं भाग्यमृद्धिमुत्तमां च लभेन्नरः॥३॥

॥श्रीलक्ष्मी-नारायण-संहितायां देव-सङ्घ-कृता श्रीमहा-लक्ष्मी-ललिता-स्तोत्रम्॥

श्री महालक्ष्मी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र

श्री महालक्ष्मी का यह अष्टोत्तर शतानाम स्तोत्र देवताओं के लिए भी दुर्लभ एवं अत्यन्त गोपनीय कहा गया है। इसके पाठ मात्र से ही सर्व सौभाग्य की प्राप्ति तथा समस्त पापों का विनाश हो जाता है। सांसारिक भोगों के साथ ही साधक को यह स्तोत्र मुक्ति का भी प्रदायक है।

।। पूर्व-पीठिका-श्री देव्युवाच।।

देव - देव महा - देव!, त्रिकालज्ञ महेश्वर!।
करुणाकर देवेश!, भक्तानुग्रह - कारक!।
अष्टोत्तर - शतं लक्ष्म्याः, श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः।।१

।। श्रीईश्वर उवाच।।

देवि साधु महा - भागे, महा - भाग्य - प्रदायकम्।
सर्वैश्वर्य - करं पुण्यं, सर्व - पाप - प्रणाशनम्।।२
सर्व - दारिद्र्य - शमनं, श्रवणाद् - भुक्ति - मुक्तिदम्।
राज - वश्य - करं दिव्यं, गुह्याद्-गुह्यतमं परम्।।३
दुर्लभं सर्व - देवानां, चतुः - षष्टि - कलास्पदम्।
पद्मादीनां वरान्तानां, विधीनां नित्य - दायकम्।।४
समस्त देव संसेव्यमणिमा - अष्ट - सिद्धिदम्।
किमत्र बहुनोक्तेन, देवी प्रत्यक्ष - दायकम्।।५
तव प्रीत्याद्य वक्ष्यामि, समाहित - मनाः शृणुम्।
अष्टोत्तर - शतस्यास्य महा - लक्ष्मीस्तु देवता।।६
क्लीं बीज - पदमित्युक्तं, शक्तिस्तु भुवनेश्वरी।
अङ्ग - न्यासः कर - न्यासः, स इत्यादिः प्रकीर्तितः।।७

।। ध्यान।।

वन्दे पद्म-करां प्रसन्न-वदनां सौभाग्यदां भाग्यदाम्,
हस्ताभ्यामभय-प्रदां मणि-गणैर्नाना-विधैर्भूषिताम्।
भक्ताभीष्ट-फल-प्रदां हरि-हर-ब्रह्मादिभिः सेविताम्,
पार्श्वे पङ्कज-शङ्ख-पद्म-निधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः।।
सरसिज-नयने! सरोज-हस्ते! धवल-तरांशुक-गन्ध-माल्य-शोभे!।
भगवति हरि-वल्लभे! मनोज्ञे! त्रि-भुवन-भूति-करि! प्रसीद मह्यम्।।

॥ मूल अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्॥

प्रकृतिं[१] विकृतिं[२] विद्यां[३], सर्व-भूत-हित-प्रदाम्[४]।
श्रद्धां[५] विभूतिं[६] सुरभिं[७], नमामि परमात्मिकाम्[८]॥०१
वाचं[९] पद्मालयां[१०] पद्मां[११], शुचिं[१२] स्वाहां[१३] स्वधां[१४] सुधाम्[१५]।
धन्यां[१६] हिरण्मयीं[१७] लक्ष्मीं[१८], नित्य-पुष्टां[१९] विभावरीम्[२०]॥०२
अदितिं[२१] च दितिं[२२] दीप्तां[२३], वसुधां[२४] वसु-धारिणीम्[२५]।
नमामि कमलां[२६] कान्तां[२७], कामाक्षीं[२८] क्रोध-सम्भवाम्[२९]॥०३
अनुग्रह - पद - बुद्धिमनघां[३०-३१] हरि-वल्लभाम्[३२]।
अशोकाममृतां[३३-३४] दीप्तां[३५], लोक-शोक-विनाशिनीम्[३६]॥०४
नमामि धर्म - निलयां[३७], करुणां[३८] लोक-मातरम्[३९]।
पद्म-प्रियां[४०] पद्म-हस्तां[४१], पद्माक्षीं[४२] पद्म-सुन्दरीम्[४३]॥०५
पद्मोद्‌भवां[४४] पद्म-मुखीं[४५], पद्म-नाभ-प्रिया - रमाम्[४६]।
पद्म-माला-धरां देवीं[४७], पद्मिनीं[४८] पद्म-गन्धिनीम्[४९]॥०६
पुण्य - गन्धां[५०] सु - प्रसन्नां[५१], प्रसादाभिमुखीं[५२] प्रभाम्[५३]।
नमामि चन्द्र - वदनां[५४], चन्द्रां[५५] चन्द्र - सहोदरीम्[५६]॥०७
चतुर्भुजां[५७] चन्द्र - रूपामिन्दिरामिन्दु - शीतलाम्[५८-६०]।
आह्लाद-जननीं[६१] पुष्टिं[६२], शिवां[६३] शिव-करीं[६४] सतीम्[६५]॥०८
विमलां[६६] विश्व-जननीं[६७], तुष्टिं[६८] दारिद्र्य-नाशिनीम्[६९]।
प्रीति-पुष्करिणीं[७०] शान्तां[७१], शुक्ल-माल्याम्बरां[७२] श्रियम्[७३]॥०९
भास्करीं[७४] बिल्व-निल्यां[७५], वरारोहां[७६] यशस्विनीम्[७७]।
वसुन्धरामुदाराङ्गीं[७८-७९], हरिणीं[८०] हेम - मालिनीम्[८१]॥१०
धन-धान्य-करीं[८२] सिद्धिं[८३], सदा सौम्यां[८४] शुभ-प्रदाम्[८५]।
नृप-वेशङ्गतानन्दां[८६], वर-लक्ष्मीं[८७] वसु-प्रदाम्[८८]॥११
शुभां[८९] हिरण्य - प्राकारां[९०], समुद्र - तनयां[९१] जयाम्[९२]।
नमामि मङ्गलां देवीं[९३], विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिताम्[९४]॥१२
विष्णु-पत्नीं[९५] प्रसन्नाक्षीं[९६], नारायण - समाश्रिताम्[९७]।
दारिद्र्य - ध्वंसिनीं देवीं[९८], सर्वोपद्रव - हारिणीम्[९९]॥१३
नव-दुर्गां[१००] महा-कालीं[१०१], ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिकाम्[१०२]।
त्रिकाल-ज्ञान-सम्पन्नां[१०३] नमामि भुवनेश्वरीम्[१०४]॥१४
लक्ष्मीं[१०५] क्षीर-समुद्र-राज-तन्यां[१०६] श्रीरङ्ग-धामेश्वरीम्[१०७]।
दासी - भूत - समस्त - देव-वनितां लोकैक-दीपांकुराम्[१०८]॥१५

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

।। स्तुति।।

श्रीमन्मन्द-कटाक्ष-लब्ध-विभव-ब्रह्मेन्द्र-गङ्गाधारां त्वाम्।
त्रैलोक्य-कुटुम्बिनीं सर-सिजां वन्दे मुकुन्द-प्रियाम्।।१
मातः नमामि कमले!, कमलायताक्षि!।
श्रीविष्णु - हृत् - कमल - वासिनि! विश्व-मातः!।।२
क्षीरोदजे! कमल - कोमल - गर्भ - गौरि!,
लक्ष्मि! प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।३

।। फल-श्रुति।।

त्रिकालं यो जपेद् विद्वान्, षण्मासं विजितेन्द्रियः।
दारिद्र्य - ध्वंसनं कृत्वा, सर्वमाप्नोत्य - यत्नतः।।१
देवी - नाम - सहस्रेषु, पुण्यमष्टोत्तरं शतम्।
येन श्रियमवाप्नोति, कोटि-जन्म-दरिद्रतः।।२
भृगु - वारे शतं धी - मान्, पठेद्-वत्सर-मात्रकम्।
अष्टैश्वर्यमवाप्नोति, कुबेर इव भू - तले।।३
दारिद्र्य - मोचनं नाम, स्तोत्रमम्बापरं शतम्।
येन श्रियमवाप्नोति, कोटि-जन्म दरिद्रितः।।४
भुक्त्वा तु विपुलान् भोगानस्याः सायुज्यमाप्नुयात्।
प्रातः - काले पठेन्नित्यं, सर्व - दुःखोपशान्तये।
पठंस्तु चिन्तये देवीं, सर्वाभरण भूषिताम्।।५

।। श्रीमहा-लक्ष्म्यष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्।।

जो साधक इन्द्रियों को वश में करके (संयत चित्त होकर) इस स्तोत्र का प्रयत्नपूर्वक छः मास तक प्रतिदिन रात्रिकाल में पाठ (जप) करता है, उसकी समस्त दरिद्रता का विनाश होकर लक्ष्मी की कृपा से सर्वसम्पत्ति की प्राप्ति होती है। श्री महालक्ष्मी के सहस्र नामों में यह 'अष्टोत्तर शतनाम' महान पुण्यदायक एवं पवित्र है। इसके द्वारा करोड़ों जन्मों का दरिद्र व्यक्ति भी महान ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला हो जाता है। एक वर्ष तक प्रत्येक शुक्रवार को जो बुद्धिमान साधक इस स्तोत्र का सौ पाठ करता है, उसे अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती है और वह इस संसार में द्वितीय कुबेर के समान सुशोभित होता है।

यह 'दारिद्र्य मोचन' नामक पराम्बा लक्ष्मी का स्तोत्र साधक की करोड़ों जन्मों की दरिद्रता दूर कर अपार सम्पत्ति को प्रदान करता है, जिसका वह जीवन भर सुखपूर्वक भोग कर अन्त में श्री लक्ष्मी का सायुज्य (रूपी मुक्ति) प्राप्त करता है। केवल प्रातः काल ही एक बार पाठ करने से भी समस्त दुखों का विनाश हो जाता है।

पाठ करते समय सर्वाभरण भूषिता महा लक्ष्मी का ध्यान करना चाहिए।

॥ श्री सिद्धलक्ष्मी-स्तोत्रम्॥

श्री ब्रह्मपुराण में वर्णित इस 'सिद्धलक्ष्मी स्तोत्र' का डेढ माह तक त्रिकाल पाठ करने वाला ब्राह्मण (साधक)पूर्व के हजार जन्मों में किये गये समस्त पापों से मुक्त होकर वर्तमान के सभी कष्टों, व्याधियों तथा दरिद्रता से रहित हो जाता है। इसके नित्य पाठ से धन-धान्य, लक्ष्मी पुत्र, यशादि सब कुछ प्राप्त हो जाता है। भगवान शिव द्वारा रचित यह स्तोत्र समस्त मनुष्यों का हित करने वाला, शत्रु, अग्नि, चोर, शाकिनी, भूत-बेताल, सर्प-व्याघ्र, राजादि से उत्पन्न भय (संकट) को दूर करने वाला तथा कारागार के बन्धन से मुक्त करने वाला है। समस्त पापों को दूर करने वाली तथा सर्वसिद्धि प्रदायिनी महालक्ष्मी नित्य पाठ करने वाले साधक के जीवन में पुनः फिर कभी दरिद्रता का प्रवेश नहीं करने देती।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीसिद्धिलक्ष्मीस्तोत्र मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम सर्वक्लेशपीडा परिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्य नाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्री सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास:- **ॐ हिरण्यगर्भ ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमो हृदि, श्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे।**

करन्यास:- **श्री सिद्धिलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नमः। क्लीं अमृतानन्दायै मध्यमाभ्यां नमः। श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास:- **ॐ श्रीं सिद्धिलक्ष्म्यै हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं अमृतानन्दायै शिखायै वषट्। ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै कवचाय हुँ। ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट्।**

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः" इस मंत्र से दिग्बंधन करें।

॥ ध्यानम् ॥

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्। त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदाधराम्॥१॥
पीताम्बरधरां देवीं नानालंकारभूषिताम्। तेजपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम्॥२॥
'लं' इत्यादि मानसोपचार सम्पूज्य।

॥ स्त्रोतम्॥

ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदयमव्ययम्। विष्णुमानन्दमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम्॥१॥
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां सदात्यानन्द दायिनीम्। श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्दिनीम्॥२॥

दारिद्र्यध्वंसिनी-प्रयोग

तेजः प्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम्। ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं कालिकारूपशोभिनीम्।।३।।
अकारे लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययं। मकारः पुरुषोऽव्यक्तो देवीप्रणव उच्यते।।४।।
सूर्यकोटि प्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभं। तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम्।।५।।
ॐकारं परमानन्दं सदैव सुखसुन्दरीं। सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।६।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा।।७।।
तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा। पञ्चमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा।।८।।
वाराही सप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा। नवमी खड्गिनी प्रोक्ता दशमं चैव देविका।।९।।
एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंसवाहिनी। एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठन्ति सदा नराः।।१०।।
सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते नात्र कार्या विचारणा। एकमासं द्विमासं च त्रिमासं चतुर्मासं च।।११।।
पञ्चमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत्। ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामयपीडितः।।१२।।
जन्मान्तरसहस्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बषैः। दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्रवान् भवेत्।।१३।।
धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च। शाकिनी भूतवेताल सर्वव्याघ्रनिपातने।।१४।।
राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबन्धने। ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकं।।१५।।
स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते। सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी।।१६।।

।। इति श्री ब्रह्मपुराणे श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

॥ धनदा-लक्ष्मी-स्तोत्रम्॥

इस 'धनदा-लक्ष्मी-स्तोत्र' का विधिवत् पाठ करने वाले साधक पर श्री लक्ष्मी प्रसन्न होकर उसके वश में हो जाती है तथा उसे अभीष्ट धन-सम्पत्ति प्रदान करती है। किसी शिवालय में, केले के वन में, किसी वृक्ष के पास स्थिति शिवलिङ्ग के समीप, देवी के मंदिर में अथवा बेल-वृक्ष के मूल के पास पश्चिम मुख बैठकर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। साधना काल में सात्विक अन्न का भोजन अथवा फलाहार (केला छोड़कर) करना चाहिए। सम्भव हो तो पहले से बने हुये भोजन द्वारा बलि वैश्वदेव करके, देवता-अतिथि को भोजन अर्पित कर शेषान्न का भोग करना चाहिए। साधक पूर्णतया ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रतिदिन कम से कम १०८ पाठ अवश्य करे। पाठों की संख्या एक लाख पूरी होने पर स्तोत्र सिद्ध हो जाता है और साधक की मनोकामना शीघ्र ही पूरी होने लगती है। स्तोत्र-सिद्धि के बाद भी साध क को प्रतिदिन समयानुसार तीन, पाँच, सात आदि पाठ प्रतिदिन करते रहना चाहिए। इससे लक्ष्मी 'अचला' होकर गृह में निवास करती है।।

। धनद उवाच ।।

देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं तनुप्रियम्।
कृपया पार्वती प्राह शङ्करं करुणाकरम्॥१॥

।। देव्युवाच ।।

ब्रूहि वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुम्बिनाम्।
दरिद्र-दलनोपायमञ्जसैन धनप्रदम्॥२॥
पूजयन् पार्वती वाक्यमिद माह महेश्वरः।

।। शिव-उवाच ।।

उचितं जगदम्बां त्वं तव भूतानुकम्पया॥३॥
स-सीतं साऽनुजं रामं साऽञ्जनेयं सहाऽनुगम्।
प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्येऽहं स्तोत्रमुत्तमम्॥४॥
धनदं श्रद्दधानानां सद्यः सुलभकारकम्।
योगक्षेमकरं सत्यं सत्यमेव वचो मम॥५॥
पठन्तं पाठयन्तं वा ब्राह्मणैरास्तिकोत्तमैः।
धनलाभो भवेदाशु नाशमेति दरिद्रता॥६॥
भूमवांशभवां भूत्यै भक्तिकल्पलतां शुभाम्।
प्रार्थयेत यथाकामान् कामधेनुस्वरूपिणीम्॥७॥
धनदे! धनपे देवि! दानशीले! दयाकरे!।
त्वं प्रसीद महेशानि। यदर्थं प्रार्थयाम्यहम्॥८॥
धराऽमरप्रिये! पुण्यं धन्ये धनदपूजिते!।

सुधनं धार्मिकं देहि यजमानाय सत्परम॥९॥
रम्ये! रुद्रप्रियेऽपर्णे! रमारूपे! रतिप्रिये।
शिखा संख्यमनो मूर्ते प्रसीद प्रणते मयि॥१०॥
आरक्त चरणाम्भोजे सिद्धि-सर्वार्थदायिनि!।
दिव्याम्बरधरे! दिव्ये! दिव्यमाल्यानुशोभिते!॥११॥
समस्तगुण सम्पन्ने सर्वलक्षण लक्षिते!
शरच्चन्द्रमुखे नीले नील-नीरज-लोचने॥१२॥
चञ्चरीक-चमू-चारु-श्रीहरि-कुटिलालके!।
दिव्ये दिव्यवरे! श्रीदे! कलकण्ठरवामृगे!॥१३॥
हासो-ऽवलोकनैर्दिव्यैभक्त-चिन्तापहारके!।
रुप-लावण्य-तारुण्य-कारुण्य-गुणभाजने॥१४॥
क्वणत्-कङ्कण-मञ्जीरे! रसलीलाऽकराम्बुजे!।
रुद्रव्यक्तमहत्तत्वे! धर्माधारे! धरालये!॥१५॥
प्रयच्छ-यजमानाय धनं धर्मैक साधनम्।
मातस्त्वं वाऽविलम्बेन ददस्व जगदम्बिके!॥१६॥
कृपाब्धे-करुणागारे! प्रार्थये चाऽशु सिद्धये।
वसुधे! वसुधारूपे! वसु-वासव-वन्दिते॥१७॥
प्रार्थिने च धनं देहि वरदे! वरदा भव।
ब्रह्मणा-ब्राह्मणैः पूज्या त्वया च शङ्करो यथा॥१८॥
श्रीकरे! शङ्करे! श्रीदे! प्रसीद मयि किङ्करे!।
स्तोत्रम् दारिद्र्श्च-कष्टार्त-शमनं सुधनप्रदम॥१९॥
पार्वतीश - प्रसादेन सुरेश-किंकरे स्थितम्।
मह्यं प्रयच्छ मातस्त्वं त्वामहं शरणं गतः॥२०॥

॥ फल-श्रुति॥

श्रद्धया ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति भक्तितः।
सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद् ध्रुवम्॥२१॥

॥ इति श्रीसद्यः प्राप्तिकारकं धनदा-लक्ष्मी-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

प्रकाशित ग्रन्थ

१. स्वच्छन्द-पद्धति	पं० मधुसूदन प्रसाद शुक्ल
२. श्री सूक्त-विधानम्	पं० मधुसूदन प्रसाद शुक्ल
३. वैदिक कामनासिद्धि	पं० उमाकान्त द्विवेदी
४. सांख्यायन-तन्त्रम्	स्वामी शत्रुघ्न दास
५. दारिद्रयध्वंसिनी-प्रयोग	पं० मधुसूदन प्रसाद शुक्ल

आगामी प्रकाश्य ग्रन्थ

१. श्यामार्चन चन्द्रिका	डा० यतेन्द्र अमोली
२. षट्-कर्म दीपिका	स्वामी शत्रुघ्न दास
३. वृहन्नील-तन्त्रम्	स्वामी शत्रुघ्न दास
४. श्री बगला ब्रह्मास्त्र कल्पः	स्वामी शत्रुघ्न दास
५. श्री लक्ष्मी-प्रत्यंगिरार्चनम्	विकास थपलियाल
६. शत्रुध्वंसिनी-प्रयोग	विकास थपलियाल

सप्तशती-तन्त्रसार

संकलन एवं लेखक — सम्पादक

कौल साधक - राजीव श्रीवास्तव — **कुल मार्तण्ड पं0 मधुसूदन प्रसाद शुक्ल**

लेखक ने अपने दीर्घकालीन अनुभवों, साधनाओं एवं अनेक सिद्ध महात्माओं के द्वारा अर्जित ज्ञान के आधार पर इस पुस्तक में दुर्गा सप्तशती के मंत्रों से सम्बन्धित अनेकों दुर्लभ एवं अप्राप्य (षट्-कर्म) प्रयोग दिए गये हैं। पुस्तक अति उपयोगी है।

अनुष्ठान-संदर्शकम्

सम्पादक — लेखक एवं संकलन

कुल मार्तण्ड पं0 मधुसूदन प्रसाद शुक्ल — **पं. विकास थपलियाल 'शिवम'**

प्रस्तुत ग्रन्थ अनेकों वर्षों के अध्ययन एवं अनुभव का प्रसाद है। विभिन्न शास्त्रीय एवं वैदिक प्रमाणों के आधार पर इस ग्रन्थ में अनुष्ठान पूर्व प्रायश्चित विधान, कलश यात्रा, जल मातृका पूजन, गौरि गणेश, कलश, मातृका नवग्रह, मण्डप प्रवेश-विधि, सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र, वास्तु, योगिनी, क्षेत्रपाल, विष्णु, शिव, दुर्गादि देवताओं का पूजन, हरगौरिमण्डल स्तम्भ पूजन, ध्वजा पूजनादि का विधिवत प्रमाणिक अर्चन विधान (विस्तृत एवं संक्षिप्त दोनो प्रकार) संक्षेप तथा विस्तार द्विविध पुण्याहवाचन श्रीमद्-भागवत, शतचण्डी पूजनादि, साथ ही संक्षिप्त जप विधि, हवन, तर्पण मार्जनादि का विधिवत स्पष्टीकरण आदि-आदि अनेक अनुष्ठान सम्बन्धित विषयों का सरल भाषा में निरुपण किया गया है। लेखक का यह प्रयास सत्य ही गागर में सागर भरने के समान है।

हमारे अन्य उपयोगी प्रकाशित ग्रन्थ

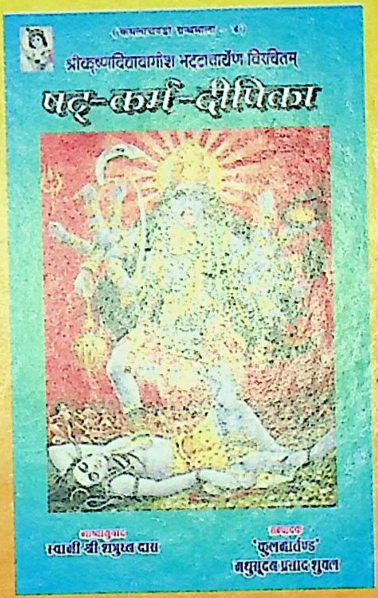

श्री मधुसूदन प्रकाशन

पो०ओ० जाखचौरा,
टिहरी गढ़वाल -- 249130 (उत्तराखण्ड)
दूरध्वनि : 9760219141, 9997979276